Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

१६ जून से
१५ जुलाई १९८८

जनज्ञान
(मासिक)

वीर श्रेष्ठ
महाराणा प्रताप,
(देखें पृ० १७)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई

नारी करुणा और शान्ति की मूर्त्ति होती है, लेकिन जब देश की अस्मिता पर संकट आये तब वह वीरत्व की मूर्त्ति बनकर आपद् धर्म निभाना भी जानती है। ऐसी ही परिस्थितियों में झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई ने रणभूमि में अपने जौहर दिखाये। १८ मई को कृतज्ञ देश ने उनकी जयन्ती मनाई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य के लिए संघर्ष करो।

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

संस्थापक – स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक—राकेशरानी
वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
मुखमेलपुर, दिल्ली-110036
फोन नं. : 745325
कार्यालय—2286, आर्यसमाज मार्ग,
करौलबाग, नई दिल्ली-110005
फोन—5724741
वार्षिक मूल्य : 35 रुपये
विदेश मे : विमान से 48 पौंड, 60 डालर
समुद्री डाक से 7 पौंड, 12 डालर
आजीवन : 501 रुपये
विदेश में : 1501 रुपये
इस अंक : साढ़े तीन रु.
जून 1988 : वर्ष 21, अंक 2

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यह-
मादित्यैरुत विश्वदेवैः।
अहं मित्रावरुणो भा विभर्म्यह
मिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा।

शब्दार्थ—(अहम्) मैं परमेश्वर (रूद्रेभिः) ज्ञान दाता व दुःख नाशकः (वसुभिः) निवास कराने वाले पुरुषों के साथ (उत) और (अहम्) मैं ही (विश्वदेवैः) सब दिव्य गुण वाले (आदित्यैः) सूर्यादि लोकों के साथ (चरामि) चलता हूं। अर्थात् वर्तमान (अहम्) मैं (उभौ) दोनों (मित्रावरुणौ) दिन रात को (अहम्) मैं (इन्द्रअग्नि) पवन और अग्नि को (अहम्) मैं ही (उभौअश्विनौ) दोनों सूर्य, पृथ्वी को (विभर्मि) धारण करता हूँ।

भावार्थ—परमात्मा कृपा सिन्धु हम पर कृपा करते हुए उपदेश करते हैं। कि मैं दुःख दूर करने वालों और दूसरों को ज्ञान देकर लाभ पहुंचाने वालों के साथ रहता हूँ। और मैं ही दिव्य गुण युक्त सूर्यादि लोक लोकान्तरों के साथ और दिन, रात्रि में पवन और अग्नि, सूर्य और पृथ्वी को धारण कर रहा हूँ। ऐसे परमात्मा की उपासना करनी चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

यह जीवन का सत्य है (महात्मा वेदभिक्षु: की अमरवाणी) ३
विजय मिली विश्राम न समझो (सम्पादकीय) ५
महाराणा प्रताप आज भी प्रासंगिक है —धर्मपाल शर्मा १३
आप ही के पत्र १६
श्रम बनाम आत्म निर्भरता —घनश्याम दास १९
जावरमाला का सपूत—राणा प्रताप —रावत मल टांक २०
पं पंजाब और पाकिस्तान समस्या —वी. एन. नारायणन २२
अपना अपना स्वभाव —आचार्य सोमव्रत विद्याभास्कर २६
राकेशरानी : व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक दृष्टि —सत्यपाल शास्त्री २८
वैदिक सभ्यता, विश्व की श्रेष्ठ सभ्यता थी —पं. रघुनन्दन शर्मा ३३
वंश वृद्धि —मुकेश कौशिक ४६
महिलाएं अपनी शक्ति को पहचाने —मृदुला सिन्हा ५५
अच्छे स्वास्थ्य के लिए भोजन में सुधार —महिला भास्कर से साभार ५९
क्या आप बच्चों की हरकतों से परेशान रहते हैं —अश्विनी केशरवानी ६२
गंध पहचान का जीवन में उपयोग —महावीर दत्त गिरि ६५
जंगल की रानी —राकेश वत्स ६९
भारत में भावात्मक : आवश्यकता और उपाय—डा. गया प्रसाद उपाध्याय ७३
भारतीय भाषाओं की मां संस्कृत —राजशेखर व्यास ७९
अंग्रेज गए हम उनका अधूरा काम पूरा कर रहे हैं —विनायक प्रसाद ८१
दूरगामी कौन —केशवदेव मिश्र ८३
ये इलाके असम बनेंगे या पाकिस्तान —प्रियरंजन भारती ८४
ईसाई मिशनरियों का बजट 'अरुणाचल राज्य' से बड़ा है। —गि० भट्टाचार्य ९२
बस्तर पर धर्म प्रदेश बनाने की तैयारियां —प्रभात झा ९४
यजुर्वेद चत्वारिंशों अध्याय —भाषा पद्यानुवादक-शिव कुमार ९८
न्यायालय और न्यायालयों पर कुछ विचार १०३
विधान में नारी शरीर क्यों ? —राजीव मिश्र १०६
हिन्दू रक्षा या राष्ट्र रक्षा —निरंजन सिंह प्रेम १०७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी—

यह जीवन का सत्य है

सबने जाना है। राजा हो या रंक, धनी हो या निर्धन, जेलर हो या कैदी साधु हो या संत, सबका अन्त एक सा है। कोई सदा नहीं रहा,, कोई सदा नहीं रहेगा। राम गये, कृष्ण गये, भीम गये, अर्जुन गये, नादिर शाह, सिकन्दर, औरंगजेब गये, प्रताप, शिवा जी गये, ऋषि दयानन्द, तिलक गांधी, नेहरू सभी गये। कौन बचा हैं कौन रहा है सदा यहां धरती पर।

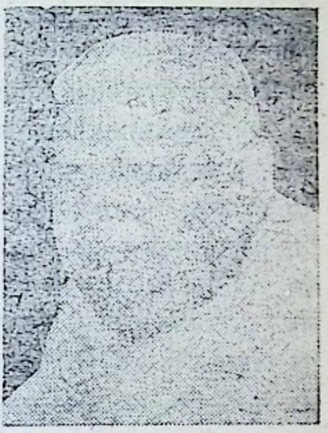

पर सत्य को हम जानकर भी जानते नहीं, भूल जाते हैं। वेद शक्ति धन पाकर हम ऐसा व्यवहार करने लग जाते हैं। मानों सदा से यहीं रहे हैं। और रहेंगे किसी की चिन्ता नहीं, परवाह नही, भावना केवल एक रहतीहै, हम सर्वोपरि हैं। अतः सब हमारी ही बातें माने उसे यहां रहने का अधिकार हम नहीं देना चाहते पर काल महावली है। वह सम्राटों का सम्राट है। तख्त, ताज सब उसके आगे तुच्छ हैं। क्षण में वह सम्राट को समाप्त कर देता है। किसका गर्व बचा है। उसके सामने कौन बचा है उसके प्रवाह में, इसीलिए हमें कहता हूं कि कभी यह मत भूलो की तुम्हें यहां से जाना है। जाना है तो क्यों सदा रहने की योजनाएं बनाते हो क्यों घृणा, द्वेष, क्रोध की अग्नि धधकाते हो, कुछ समय के लिए मिला जीवन इसीलिए है। जो कुछ कर रहे हो। प्यार तुम जानते नहीं, उसे बांटते नहीं, तुमने इस अमृत का पान नहीं किया तो क्या मिला तुम्हें··· सोचो-रुको···और फिर सोचो ! क्या तुमने कभी प्यार के बल से विश्व

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विजय की बात सोची हैं।

प्यार ब्रह्मास्त्र है। यह धरती का संगीत मादक भी है। और सत्य भी, इसके गीत से शान्ति बरसती है। इसकी राह में आनन्द पलक पांवड़े बिछाए खड़ा रहता हैं, स्वर्ग का द्वार प्यार के कुंजी से ही खुलता है।

ज्ञान धर्म सत्य सब का लक्ष्य प्यार है। प्यार अपने से, सब से सब के प्रति, उमड़ता हुआ प्यार, बरसाता हुआ प्यार, निर्झर सा-प्यार, कितना पावन है वह। वही जानते हैं। जिन्होंने एक बार भी प्यार के सोम रस का पान किया हुआ है।

एक बार अपनी सारी वासनाएं जलाकर अपने सब पूर्वापर आग्रह मिटा कर देखो, फिर देखो तुम कितने ऊंचे, कितना महान कितने ज्योतिमय बनकर चमके हो, तुम, अभयः, तुम सत्य, तुम दिव्य हो, पर प्यार को खोकर तुम केवल पशु, हो पशुता का प्रभाव तुम्हें भी मिटा रहा है। और धरती को भी, इसी लिए हमारा आग्रह है। ठहरो और एक बार अपने सारे आवरण उतार कर फेंक दो। सत्य की राह पर प्यार का गीत गाना आरम्भ करो। तुम बदलोगे, जग बदलेगा और तुम्हें वह सब कुछ मिल जायेगा, जिसे तुम पाना चाहोगे। पर क्या तुम्हारा अन्तर मेरी बात को सुन सकेगा? ★

अच्छा सिंधु मातृतमामयास विपाशमुर्वी सुभगामन्म।
वत्समिव मातरा संरिहाणे समानं योनिमनु संचरन्ती॥

माता के समान सिंधु और श्रेष्ठ सौभाग्य वाली विपाशा को प्राप्त होता हूँ। ये दोनों वत्साभिलाषिणी गौओं के समान आश्रय स्थान की ओर जाती हैं।

इन्द्रेपिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः।
समाराणे र्मिभिः पिन्वमाने अन्या वामन्यामप्येति शुभे॥

इन्द्र तुम्हें प्रेरणा देते हैं। तुम परस्पर प्रार्थना-सी करती हुई दो रथियों के समान समुद्र को प्राप्त होती हो। तुम प्रवाह मान हुई, तरंगों द्वारा बढ़ कर परस्पर मिलने की चेष्टा करती हुई-सी चलती हो और शोभा पाती हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

विजय मिली विश्राम न समझो

देश के इतिहास में पंचनद (पंजाब) की उर्वरा धरा को शताब्दियों से विशिष्ट स्थान प्राप्त रहा है। वेदों के पावन मन्त्रों की अनुगूंज से कभी यह धरती अनुगुंजित रही है तो कभी इसने विदेशी आक्रान्ताओं के दिवा स्वप्नों को धूल-धूसरित कर देने के लिए गुरु नानक देव के शान्ति धर्मा अनुगामियों को युग की आवश्यकता के अनुरूप क्षत्रिय धर्म का परिपालन करने के लिए समुधत करने वाले गुरु गोबिंद सिंह की कर्मस्थली बनी है। गुरु तेगबहादुर से महान आत्मवलिदानी के तप त्याग से यह धरती पावन से पावनतप बनी थी तो महाराजा रणजीत सिंह की तलवार के जौहर और हरि सिंह नलवा के शोर्य की प्रेरक गाथाएं इसके कण-कण में समाई हुई हैं, तो ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध रण गर्जन करने वाले देवता स्वरूप भाई परमानंद, अमर हुतात्मा भगत सिंह स्वयं पंजाब केसरी लाला लाजपतराय तथा सरदार अजीत सिंह से महान राष्ट्र भक्तों को गोदी में खिलाने का गौरव भी इस महिमामंडित अंचल ने पाया था। फिर इतिहास ने तीन जून को एक नई करवट ली थी जब सुजलान, सुफलाम, वरदान मातृभूमि के दुखद विभाजन की घोपणा १९४७ में हुई थी। उस दिन अनेक राष्ट्र भक्तों के मन को तीव्र आघात लगा था और उसके बाद इस अंचल ने विभाजन की त्रासदी को झेला था। इस तथ्य को भी इतिहास भुला नहीं सकेगा कि इस अंचल में केशधारी और गैर केशधारी राष्ट्र भक्तों ने उन राष्ट्र विरोधी तत्वों से मिल जुल कर लोहा लिया था, जिन्होंने इस देश की धरती का खाया तो था, परन्तु इसकी वन्दना में मत्था टेकने के वजाय इसके विभाजन का षडयंत्र रचाया था। स्वतन्त्रता के पश्चात विभाजित पंजाब ने फिर वह दिन भी देखा जब कतिपय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संकीर्णमना नेताओं ने उन हिन्दुओं और सिखों के बीच मतभेद का बीजारोपण किया जो नाते-रिश्तों के अटूट बंधनों में बंधे हैं। मतभेद की इस खाई को उन तथाकथित नेताओं ने अपने क्रियाकलापों से इसका गहन किया कि दो सहोदर भाइयों के बीच ही मतभेद मात्र नहीं पनपे अपितु शत्रुता का भाव भी पनपने लगा। इन्हीं तत्वों में से कुछ ने इतिहास सिद्ध अपने शत्रु पक्ष को अपनी अदूरदर्शिता के कारण अपना मित्र समझा और अपनों को ही पराया मान कर उनके रक्त से फाग खेलने को ही 'धर्म' का 'मर्म' समझ लिया था। उन तत्वों ने गुरु ग्रन्थ साहब के पावन प्रकाश से आलोकित स्वर्ण मन्दिर परिसर को अपने अपावन इरादों की पूर्ति हेतु शास्त्रागार बना दिया था।

उस स्थिति से पंजाब को उभारने और गुरुद्वारा स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए १९८४ में तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को 'आपरेशन ब्लू स्टार' का सहारा लेना पड़ा था। इसके बाद अनेक देश भक्त सिख बन्धुओं को भी ऐसा प्रतीत हुआ था कि सरकार में सिख धर्म पर इतना गहन घाव किया है कि 'खालिस्तान' की ताकत को रोक पाना अब संभवतः संभव नहीं हो पाएगा। परन्तु अब चार वर्ष के पश्चात् जो "आपरेशन ब्लैक थंडर" हुआ है, उसके बाद अब संभवतः अलगाववादियों में भी इस समझ का विकास होगा कि खालिस्तान का उनका दिवा-स्वप्न कदापि साकार नहीं हो पाएगा। १९८४ की जो कार्रवाई से रिसते व्रणों का जो छायावाद उपजा था, वह यदि १९८८ में हुई इस कार्रवाई से सदा के लिए समाप्त हो सकेगा तो समूचा सिख समाज सहज और सामान्य जीवन की ओर लौटता दृष्टिगोचर होगा। यह तथ्य विस्मृत नहीं किया जाना चाहिए कि आपरेशन ब्लू स्टार के बाद आपरेशन ब्लैक थंडर की स्थिति सरकार पर उन तत्वों ने थोपी जिन्होंने बन्दूक वालों को स्वर्ण मन्दिर परिसर में पुनः एकत्रित होने की छूट प्रदान की थी। इसके लिए दोषी वही तत्व है, जिन्होंने २६ जनवरी, १९८६ को स्वर्ण सन्दिर पर उग्रवादियों के कब्जे पर मौन धारण कर अनेक क्षेत्रों में यह आवाज भी उभरवा दी थी कि शासन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंगु हो गया है।

अतएव हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं कि इस बार स्वर्ण मन्दिर का दस दिन का घेरा न्यूनतम रक्तपात के साथ तो समाप्त हुआ ही है साथ ही देश के डेढ़ करोड़ सिखों के लिए यह भी बहुत ही अच्छा हुआ कि परिक्रमा में सुरक्षा बलों के प्रवेश के बिना ही लगभग दो सौ आंतकवादियों ने १५ और १८ मई को दो किस्तों में आत्मसर्मण कर दिया। वस्तुतः जिस संयम के साथ यह कार्यवाही सम्पन्न हुई वह भी सराहनीय ही है। इस पर भी यदि कोई विघ्न संतोषी यही कहता रहे कि हर मंदिर साहब को चारों ओर से घेर लेना ही उनकी मर्यादा भंग कर देना है तो १९८२ से पूछा जा रहा यह प्रश्न हजार ही बार दोहराना होगा किया मन्दिर में शस्त्रास्त्रों का संग्रह करना, वहां से हत्याओं का संचालन करना, मौत की धमकी देकर धन ऐंठना, परिक्रमा के कमरों में लोगों को घोर यातनाएं देना और मंदिर के भवनों पर तथाकथित 'खालिस्तान' के 'ध्वज' फहराना उस पावन स्थल की मर्यादा भंग करना नहीं है। यदि परिक्रमा परिसर में पुलिस आदि का बाहर से गोली चलाना मर्यादा भंग करना है तो क्या टायरों पर डीजल डालकर मृतकों का दाह संस्कार करना मर्यादा भंग नहीं है? हमें संतोष है कि हमारे प्रबुद्ध और राष्ट्र भक्त सिख बन्धुओं ने स्थिति को सही परिप्रेक्षय से देखते हुए इस कार्यवाई का स्वागत ही किया है और उस सिख मर्म पर घाव नहीं आया एक और सुखद तथ्य यह भी है कि उन उग्रवाद समर्थकों का भ्रम भी अब टूट रहा है जो यह सोच रहे थे कि बन्दूक बाज क्योंकि पंथ का नाम लेकर लड़ रहे हैं अतएव वे कभी आत्मसमर्पण कर ही नहीं सकते।

अब हम आशा करते हैं कि १९८४ के संदर्भ के कारण जो लोग वास्तविकता से सर्वथा कट कर एक अजब मनोविश्व में रमते चले गए थे, अब पुनः ठोस धरती पर लौट सकेंगे और इस देश की प्रगति के रथ मे अपना योगदान पूर्ण तन्मयता सहित दे सकेंगे।

उचित यही होगा कि पाकिस्तान के संकेत और सहायता पर भारत के एक और विभाजन की दुरभिसंघि अपने मन में संजोने वाले भ्रांत पथ के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पथिक भी यह तथ्य अंगीकार करें कि भारत रूपी उपवन को संवारना ही उन महान गुरुओं की कल्पना को साकार करनेका एकमात्र मार्ग हैं जिन्होंने 'जगे धर्म हिन्दू सकल धुंध भाजेका उद्‌घोष कर इस तथ्य का विश्व को साक्षात्कार कराया था कि सिख कोई अलग कौम नहीं अपितु हिन्दू राष्ट्र का ही अविभाज्य अंग है। वे इस सत्य को हृदयंगम करें कि हिन्दू धर्म की रक्षार्थ ही दशमेश पिता ने खालसा पंथ का सृजन किया था।

यह आशा तो नहीं की जा सकती कि स्वर्ण मंदिर परिसर से बाहर अभी भी जो आतंकवादी सक्रिय है और निरीह जनों के प्राण लेने को ही अपनी बहादुरी मान रहे हैं, वे पंजाब के राज्यपाल श्री सिद्धार्थ शंकर राय के सद् परामर्श को मान कर अपने हथियार धड़ाधड़ पुलिस क्षमो में आकर सौपने लगेगें परन्तु इतना अवश्य ही कहा जा सकता है कि जिन लोगों द्वारा ऐसा किया जाएगा वे उस सिख अतीत के समक्ष ही आत्म समर्पण करेंगे, जब हर मंदिर साहब में प्रवेश करने वाले श्रद्धालु तीर्थ यात्री अपनी कृपाण मंदिर से बाहर रख कर जाते थे, क्योंकि वे यह मानते थे कि भला मंदिर में तलवार का क्या काम ?

साथ ही हमारे देश के कर्णधारों से भी यह आह्‌वान् है कि वे आंतकवादियों पर स्वर्ण मँदिर परिसर में मिली विजय से प्राप्त संतुष्ट होकर इसे विश्राम की बेला नहीं मान लें। क्योंकि जिन तत्वों ने निरीह और निरपराध लोगों के रक्तपात् में ही अपनी पंथ निष्ठा की झलक ली है, उन्हें उकसाने वाले उनके वे 'आका' हताश और निराश होकर रक्तरंजित इतिहास का पटाक्षेप नहीं होने देने के लिए साम-दाम—दंड-भेद के सभी हथकंडों का प्रयोग न करने से नहीं चूकेंगे। अतः आवश्यकता इस बात की है कि वह पूर्ण सजगता वरतें और सिख समाज को गुमराह करने वाले तत्वों के घातक इरादों की पूरी-पूरी थाह लेते हुए उस पावन विचारधारा के प्रवाह को सशक्त करने के लिए भी पूर्ण तन्मयता सहित जूटे जो इस देश के प्रत्येक राष्ट्रभक्त को भारत के कण-कण को पावन मानकर उसके प्रति ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्वस्व समर्पण की भावना की प्रसारक और प्रचारक है। जो समूचे सिख समाज को सहन और सामान्य जीवन की ओर लौटाए और हम देशवासी वह शुभ दिन देख पाए जब यह संसारधर्मी जाति भारतीय समाज को स्नजनशीलता के लिए सर्वे था नवीन आकाश में विचरण कराने में सहयोगी बने। और उस दिन वास्तविक अर्थों में सिख गरिमा का वह सत्य स्वरूप उजागर हो जिसकी गाथा दिगदिगन्त में व्याप्त हो और 'सत श्री अकाल' का वह पावन उद्घोष अपनी सार्थकता पा सके जो उस अनादि और अनन्त सत्ता की ही विरुदावलि का उद्घोषक है, जिसकी महत्ता पावन गुरु-ग्रन्थ साहब में अंकित और वर्णित है।

हमारा व्रत

मेरी एक कल्पना है कि वह शुभ दिन आयेगा। जब भारत मां का प्रत्येक चरण यज्ञमय होगा। हम अग्निदेव की स्तुति करेंगे और सभी प्रकार के अज्ञान, अहंकार और आसुरी भाव उसमें भस्मीभूत हो जाएगें। हमने एक दिव्य दाहक व्रत ग्रहण किया है, वह है महात्मा वेद भिक्षुः के उस स्वप्न को साकार करने का जिसमें यह राष्ट्र अपने गत गौरव को प्राप्त कर वह वलशाली रूप ग्रहण करेगा कि विश्व में शांति को अंगार लगाने के लिए उतावले और सक्रिय तत्वों को चेतावनी और चुनौती देकर उस सद्मार्ग पर ला सकेगा—जिसमें अन्याय, अत्याचार और अनाचार के लिए कोई स्थान नहीं होगा जिसमें सर्वे भवन्तु सुखिनः की कल्पना साकार हो सकेगी। उनके उसी संकल्प की पूर्ति हेतु मैं उन तत्वों से संघर्षरत हूं जो देश के विखन्डन और विभाजन के लिए सक्रिय है। जो भारत की सुशीतल सुगंधित वायु को मजहवी उन्माद के विष से विपाक्त करने पर तुले हुए हैं। कभी ये तत्व देव दयानन्द और महात्मा गांधी की जन्म-स्थली गुर्जरधरा गुजरात में रक्तपात का खेल खेलते हैं तो कभी सरजा शिवाजी की जन्मभूमि में साम्प्रदायकिता के अजगर को खुल खेलने के लिए अवसर प्रदान करते हैं।

मैंने संकल्प ग्रहण किया है उन तत्वों से टकराने का जो वैदिक धर्म द्वारा प्रचारित और प्रसारित वसुधैव कुटम्बकम के पावन संदेश और सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना को उसकी दुर्बलता मानकर उसे मिटाने के अपावन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सपने अपने मानस में संजो रहे हैं। हिन्दुत्व के प्रति अडिग आस्था का प्रतिफल मुझे दर्जनों अभियोगों की उलझन के रूप में मिल रहा है। मेरी दृष्टि में हिन्दू कोई सम्प्रदाय नहीं अपितु इस देश की राष्ट्रीयता का चिरंतन स्वर है। क्योंकि हिन्दू नाम है उस संस्कृति का जो 'जियो और जीने दो' में विश्वास रखती है। यह वह पावन गंगा है, जिसमें स्नान कर सभी आनन्द की अनुभूति कर सकते हैं। भारत मां का हरी सपूत अपनी अपनी पृथक पूजा पद्धति का अनुगमन करते हुए भी इसमें आकंट स्नान कर सकता है। हमारा सुस्पष्ट अभिमत है कि जो भारत मां की जय बोलता है, वह हिन्दू है। इसलिए हम कहते है कि हमारे वे देश बांधव भी भारत की मूलधारा में समाहित हों जो स्वयं को अल्पसंख्यक मानते हैं हमें किसी के बाइबल पढ़ने पर आपत्ति है न किसी के नमाज अता करने या सिजदा करने पर या ईसा मसीह को प्रभु का बेटा मानकर उसकी प्रतिमा के समक्ष नतमस्तक होने पर ही कोई शिकायत है। पर साथ ही हमें यह भी सहन नहीं कि कोई मजहब के नाम पर भारत की पावन मिट्टी से प्यार के स्थान पर किसी और मुल्क को अपने लिए प्रेरणा का स्रोत माने। हमारा संघर्ष है उन गुमराह तत्वों के विरुद्ध जो हिन्दू संस्कृति पर प्रहार को अपना जन्म सिद्ध अधिकार मानकर भारत की स्वतन्त्रता और एकता को ही अंगार लगाना चाहते हैं। जो इस देश में किसी नए पाकिस्तान या खालिस्तान की स्थापना का नापाक इरादा अपने मन में संजोए हैं उन देशद्रोही तत्वों से संघर्ष करना हमारा संकल्प है। हमारा आह्वान है भारत की जागरुक जनता से कि वह ऐसे देशद्रोही तत्वों के सपनों को अंगार लगाने के लिए कृत संकल्प हो। अपने इसी आह्वान् और अभियान के कारण मैं अनेक अभियोगों के प्रहार झेल रही हूं। कई बंधु प्रश्न करते हैं कि इस स्थिति में भी आपका साथ समाज के तथाकथित सर्वोच्च कहे जाने वाले नेता क्यों नहीं दे रहे। वे कुछ करते क्यों नहीं हैं। हम इस प्रश्न का उत्तर देना उचित नहीं समझते, क्योंकि पारस्परिक कटुता बढ़ाना प्रगति में बाधा हीं होगी। आप इस प्रश्न का उत्तर उन्हीं नेताओं से मांगे जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वयं को सर्वोच्च जताने को और दर्शाने को धरती-आकाश के कुलावे मिलाते रहते हैं। वही आपको सही उत्तर दे पायेंगे हम तो यह अनुभव करते है कि हमारे ये नेता तो शायद हमें हिन्दू भी नहीं समझते, क्योंकि हमें किसी की चाटुकारिता करना न तो आता है और न ही भाता है। वे शायद यह चाहते हैं कि मैं उनके द्वार पर जाकर उनकी खुशामत करूं। और उससे प्रार्थना करू कि वे दयाकर हमारा साथ दें। मेरा पक्ष यह है कि जो काम मैं कर रही हूं वह प्रत्येक सच्चे राष्ट्रवादी के हृदय की आवाज है। यह काम तो मेरा ही नहीं इन नेताओं का ही है। वे आगे बढ़े और हमें आशीर्वाद दें। हम उनका आदेश उन्हें वयोवृद्ध और अनुभव सम्पन्न समझते हुए मानने को सदैव तत्पर हूं। हमें स्वर्गीय महात्मा वेद भिक्षु: ने राह दिखायी थी और कहा था कि हमें काटकाकीर्ण मार्ग पर चलना है।हर आपदा को झेलते हुए भी मुस्कराना है। क्योंकि हमारी प्रेरणा के स्रोत है देव दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, प्रणवीर प्रताप, छत्रपति शिवाजी और बंदा वैरागी तथा सर्वस्व त्यागी भाई परमानन्द और हिन्दू संगठन अनुरागी स्वातन्त्रय वीर सावरकर। हम उस राह पर चलते रहेंगे और भारत को तोड़ने वाली शक्तियों से अकेले भी रहें तो भी संघर्ष करते रहेगे। जब तक हमारी श्वास चलती है, तब तक हम संघर्ष पथ पर बढ़ते रहेंगे। आज महात्मा वेदभिक्षु: हमारे साथ नहीं हैं परन्तु उनका दिशा दर्शन हमारा पथ प्रदर्शक है। हमारा अडिग विश्वास है कि आज नहीं तो कल इन महान हिन्दू नेताओं का मानस भी इन्हें झकझोरेगा और वे यह अनुभव करेंगे कि एक नारी सर्वथा अकेली विभाजनकारी और मजहबी उन्माद को भड़काकर साम्प्रदायिकता काविष विमन करने वाले अज-गरों से लड़ रही थी तो हम अपनी गद्दियों पर बैठ कर तमाशा देख रहे थे। शायद उस समय उनकी अन्तरात्मा भी उन्हें कचोंटेगी। विभाजक तत्वों द्वारा देश को तोड़ने की तैयारियां की जा रही हैं। साम्प्रदायिकता का जहर कहर बन कर उमड़ रहा है, हां हमें किसी से कुछ नहीं कहना क्योंकि हमारा संकल्प है—

देश के लिए प्राण भी जायेंगे तो भी न हम कभी कसमसायेगें। सत्य धर्म के प्रसारार्थ संघर्ष की टेक अंतिम क्षण तक निभायेंगे। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के कैसेट

● नवीनतम

१. वैदिक भजन सिन्धु — २५ रूपये
गायक - श्री सत्यपाल "सरल"

२. प्रकाश भजन सिन्धु — २५ रूपये
गीतकार - स्व. प्रकाशचन्द्रजी कविरत्न, गायक - श्री महेशचन्द संगीतरत्न

३-४. विवाह गीत (दो कैसेट) — ५० रूपये
(कन्या-पक्ष एवं वर पक्ष) गीत एवं गायन-माता लज्जारानी गोयल एवं श्रीमती सरोज गोयल। विवाह के अवसर पर प्रत्येक परिवार में बजाने योग्य शानदार गीत एवं संगीत से युक्त नये कॅसेट।

५-६. वैदिक नित्यकर्म विधि (दो कॅसेट) — ५० रूपये
मन्त्रोच्चारण - स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रत्येक गृहस्थ के लिये निर्दिष्ट नित्यकर्मों की विधि व्याख्या सहित।

७. वेद भारती — ३० रूपये
शास्त्रीय रागबद्ध मन्त्र। व्याख्या सहित। सम्पादन - श्री सत्यकाम विद्यालंकार. वेदपाठ एवं संगीत - अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त श्री सत्यशील देशपाण्डे।

● हमारे अन्य अति लोकप्रिय कैसेट — प्रत्येक ३० रूपये

८. पथिक भजनसिन्धु ९. मुसाफिर भजन सिन्धु १०. श्रद्धा
११. आर्य भजनावली १२. वेदगीताञ्जलि १३. भजनसुधा।

● हमारे शेष संग्रह करने योग्य कैसेट — प्रत्येक २५ रूपये

१४. वैदिक सन्ध्याहवन १५. गायत्री महिमा १६. भक्तिभजनावलि
१७. महर्षि दयानन्द सरस्वती १८. आर्यभजनमाला १९. आर्यसंगीतिका
२०. योगासन प्राणायाम स्वयं शिक्षक २१-२२. महात्मा आनन्द स्वामी उपदेशामृत (दो कॅसेट) स्व. महात्माजी की ही अमृतमयी वाणी में दो महत्वपूर्ण प्रवचन।

डाक से मंगाने के लिये

● कृपया पूरा मूल्य आदेश के साथ भेजिये। चार कैसेट तथा उससे ज्यादा का डाक व्यय हम देंगे। तीन कैसेट तक के लिये १० रूपये डाक तथा पैकिंग के भी भेजिये।
● वी. पी. पी. के आदेश पर डाक एवं पैकिंग व्यय आपको देना होगा।

विशेष उपहार : १२ कैसेट मंगाने वालों को। तथा २० कैसेट मंगाने वालों को २ कैसेट उपहार स्वरूप दिये जायेंगे।

सूचना - व्यापारिक विशेष छूट के लिये पूछताछ आमन्त्रित है।

संसार साहित्य मण्डल
१४१, मुलुण्ड कालोनी, बम्बई - 400 082.
फोन : ५६१ ७१ ३७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महाराणा प्रताप आज भी प्रासंगिक हैं

—धर्मपाल शर्मा

स्वाधीनता के पूर्व महाराणा प्रताप और शिवाजी जैसे देशभक्त और शूरवीरों का खूब स्मरण किया जाता था। तब ऐसा लगता था कि इन वीरों का स्मरण प्रासंगिक है और इनके नाम स्मरण से देश के नवयुवकों को स्वाधीनता के समर में कूदने की प्रेरणा मिलेगी। उस समय कोई आक्राता बाबर या औरंगजेब का स्मरण नहीं करता था और न इस देशभक्तों के नाम स्मरण पर कोई आपत्ति ही की जाती थी। हां, अंग्रेजों का हमेशा यही प्रयास रहा कि इस देश की आजादी के लिए युद्ध करने वाले नायकों के चरित्र को लांछित किया जाय और इतिहास से उनका नामोल्लेख मिटा दिया जाय। अंग्रेज इतिहासकारों ने इस देश पर आक्रमण करने वालों का खूब बढ़ा-चढ़ाकर गुणगान किया क्योंकि यही उनके साम्राज्यवाद के हित में था। स्वाधीनता की भावनाओं के किसी भी अंकुर को वे पनपने नही देना चाहते थे।

स्वाधीनता के बाद जब भारत पर पाक और चीन द्वारा पांच युद्ध लादे गये तब भी इन शूरवीरों का खूब स्मरण किया गया। उस समय भी धर्म निरपेक्ष नीति आड़े नहीं आए और किसी वर्ग द्वारा विरोध भी नहीं हुआ कि इनका स्मरण साम्प्रदायिक है, किन्तु सामान्य स्थिति में इन वीरों के नाम स्मरण को साम्प्रदायिक कह कर कोसा गया और सरकार ने भी इनके नामोल्लेख पर चुप्पी साधना ही उचित समझा। सवाल है यह प्रवृत्ति क्यों पनपी? इसके पीछे क्या तर्क रहे? कहा गया कि राणा प्रताप ने देश की स्वाधीनता के लिए कोई लड़ाई नहीं लड़ी थी बल्कि उनकी लड़ाई तो अपने राज्य की रक्षा मात्र के लिए थी। यदि इस कुतर्क को कसौटी पर कसा जाय तो देश के लिए किसी के योगदान के बारे में तो कुछ कहा ही नहीं जा सकता फिर तो किसी को प्रति क्रियावश और किसी को प्रतिशोधवश इस लक्ष्य पर बढ़ने वाला कहा जायेगा?

किन्तु यह सोच भ्रामक है और राष्ट्रवीरों के योगदान को नकारने की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोशिश है। धर्म निरपेक्षता की आड़ में स्वार्थी औद राष्ट्र विरोधी तत्व अभियान द्वारा राष्ट्रीय स्वातंत्र्य के लिए लड़ने वाले योद्धाओं के प्रेरक इतिहास को मिटाना चाहते हैं।

किन्तु राणा प्रताप जैसे शूरवीरों के बारे में ऐसा चिंतन एक छल-छइया के अलावा कुछ नही है। राणा प्रताप चाहते तो अकबर से सम्मानजनक समझौता करके राज्य वैभव भोग सकते थे। फिर वे अपनी सामर्थ्य भी जानते थे कि मुगल साम्राज्य के सामने उनकी शक्ति सीमित है किन्तु वह मुगल सम्राट से टक्कर इसलिए लेते रहे क्योंकि वह जानते थे कि अकबर इस देश के राष्ट्रीय चरित्र और इसकी संस्कृति को धीरे-धीरे समाप्त कर रहा है, दूसरे अर्थ में वह इसदेश की उस जीवनधारा को समाप्त कर रहा है जो इसे दुनिया में एक चिरंतन और महान राष्ट्र बनाये रखने के लिए जरूरी है। राणाप्रताप यह भी जानते थे कि भारत इस समय भले ही छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों में बटा था किन्तु संस्कृतिक दृष्टि से भारत एक था और यह संस्कृतिक विशिष्टता और समता ही दुनिया में उसकी पहचान करती थी। महाराणा प्रताप इसी पहचान के लिए लड़े और उन्होंने इसके लिए अपने जीवन में इतने संघर्ष और अभाव झेले जो एक राजा तो क्या सामान्य व्यक्ति को भी झुका देने के लिए बहुत थे। जिस राजा के बच्चे घास की रोटी खाने के लिए विवश हो जाएं और उसे भी जंगली बिलाव ले जाए और पिता बच्चों को भूख से तड़फते देखता रहे, क्या इसके लिए फिर भी संघर्ष जारी रखना सहज हो सकता है।

परन्तु प्रताप इसके बावजूद जो लड़ते रहे, राज्य सम्मान की आकांक्षा नहीं थी बल्कि स्वधर्म और स्वसंस्कृति की रक्षा की भावना थी। क्या महाराणा प्रताप के उस संघर्ष की प्रासंगिकता आज भी बरकरार नहीं है? क्या आज भी हमारी संस्कृति पर चारों तरफ से आक्रमण नहीं हो रहे हैं? संस्कृति की रक्षा के लिए हमेशा युद्ध ही तो जरूरी नहीं होता और राणा प्रताप जैसे प्रेरक से युद्ध की प्रेरणा लेना ही तो सार्थक दृष्टि नहीं है। प्रेरणा साधन की नहीं साध्य की होती है—साधन तो बदलते रहते हैं और साध्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज भी वही है स्वधर्म, स्वसंस्कृति और स्वराष्ट्र की रक्षा। आज कहीं खालिस्तान के सिरफिरे देश विभाजन के लिए तैयार हैं तो कहीं मणिपुर और त्रिपुरा में आंतकवादी नरसंहार पर उतारू हैं। ईसाई मिशनरियाँ पृथकता की भावना की आग भड़का रहीं हैं तो मुसलिम कठमुल्ले अलगाववाद की आग सुलगा रहे हैं। क्या ऐसी स्थितियां महाराणा प्रताप की ध्येयवीरता तन-मन-धन समर्पित कर इन चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा नहीं देती ?

सच्चाई यह हैं कि हम और हमारे इतिहास, हमारे शिक्षाविद और राजनेता धर्म निरपेक्षता की आंधी में भ्राति के शिकार हो गए हैं और इस देश के लिए प्राणार्पित करने वाले राष्ट्र भक्त शूरवीरों का व्यर्थ ही अपराध बोध के कारण अप्रासंगिक समझने लगे हैं। यह ठीक वैसा ही गलत दृष्टि-कोण है जैसे कोई व्यक्ति किसी के पिता की निन्दा करे और उसे सलाह दे कि लोकापवाद से वचने के लिए तुम अपने पिता को पिता मत कहो, इसे दुर्घटना कहकर टाल दो। यह एक आधुनिक दृष्टिकोण हैं। दुनिया का इतिहास साक्षी है कि वही राष्ट्र जीवित रहते हैं जो अपने पुरवों पर गर्व करते हैं और उनकी महान परम्पराओं को जीवित रखते हैं।

रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्त्तमेवैः।
प्रसिंधुमच्छा वृहती मनीषावस्युरहवे कुशिकस्य सूनुः॥

हे जल से पूर्ण हुई ! मेरे सोम-सम्पन्नता के कार्य की बात सुनने के लिए एक क्षण के लिए चलने से रुको। मैं कुशिक पुत्र विश्वामित्र बृहती स्तुति से प्रसन्नता प्राप्ति और अपनी अभीष्ट-पूर्ति के निमित्त इनका आह्वान करता हूँ।

एना वय पयसा पिन्वमाना अनु योनिं देवकृतं चरन्तीः।
न वर्तवे प्रसवः सर्गतत किंयुर्विप्रो नद्यो जोहवीति॥

ये नदियां जल से पूर्ण हुई भूमि प्रदेशों को सींचती हुई, ईश्वर के रचे हुए स्थान पर चलती हैं। इनकी गति कभी रुकती नहीं; हम उनके अनुकूल होते हुए प्राप्त होते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

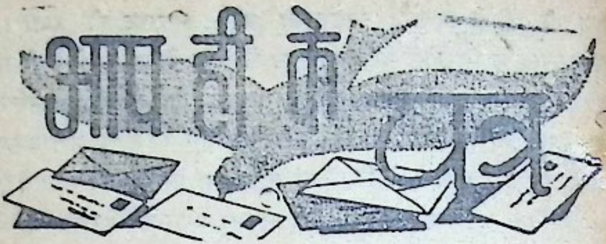

आदरणीया बहिन राकेश रानी जी, स्नेहभरी नमस्ते

समय-समय पर जनज्ञान मिलता रहता है जिससे समाचार मिलते रहते हैं। पूज्य वेदभिक्षु जी के निधन के बाद भी आप अपनी लेखनी और विचारों द्वारा कार्य को यथापूर्ण चला रही हैं यह आपके लिये ही नहीं हमारे लिए भी गौरव की बात है इतना संघर्ष होते हुए भी आप अपने कार्य व निश्चय पर अडिग हैं इस बात की मुझे अति प्रसन्नता है आप जैसी विदुषी व साहसी महिला होना भी हमारे लिए गौरव की बात है आपके अपने त्यागमय जीवन द्वारा लोगों को प्रेरणा मिले। आज लोग सो रहे हैं अपने धर्म और संस्कृति से विमुख हो रहे हैं धर्म के प्रति आज हमारी नवयुवक पीढ़ी में न श्रद्धा है न विश्वास है न वेद के प्रति निष्ठा है आज हम लोग धर्म विमुख हो रहे हैं आज मनुष्य पश्चिमी सभ्यता में बह रहे हैं आप उनको सद्मार्ग दिखाने का प्रयत्न कर रही हैं।

प्रभु आपको अपने कार्य में अधिक से अधिक सफलता प्रदान करें और वेदभिक्षु जी के इस कार्य को आप उनसे भी अधिक तत्परता से पूरा कर सकें मैं हृदय से सदा आपका मंगल चाहती हूं और सोचती हूं कि आप भी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की तरह से अपने कार्य में संघर्ष कर रही हैं और अपने पथ पर अग्रसर हो रही हैं प्रभु आपकी सहायता करें आप चिरायु हों और कभी कभी पत्र देती रहें।

अन्त में मंगल कामना के साथ,

—चन्द्रकान्ता, नागपुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रिय बहन पंडिता राकेश रानी जी, सप्रेम नमस्ते,

मैं आपको पहली वार पत्र लिख रहा हूं। मैंने आपका पहले बार 'जनज्ञान' मासिक पढ़ा। पढ़ने के बाद ऐसा महसूस हुआ कि सचमूच झांसी की लक्ष्मीरानी आधुनिक भारत में आप के रूप में प्रकट होकर निद्रित भारत माँ के सपूतों को हिंदूओं को हाथ में कलम उठाकर अपनी बुद्धि से, वाणी से, ओजस्वी विचार से जगा रही है।

धन्य है, वो भारत मां के लाल जिनको आपका साथ मिला, और धन्य है वह माँ बाप जिन्होंने आप जैसे 'सरस्वती-महिषासुर मर्दिनी को जन्म देकर भारतीयों के ऊपर जो उपकार किये हैं, उसका अहसास भारत के सपूत कभी नहीं भूलेंगे। हमारे जैसे नोजवानों को रास्ता दिखाने वाला मिल चुका हैं, अब हिन्दूस्तान में हिन्दू मार नहीं खायेंगे और अपने ही घर में पराये नहीं हो सकते। आपके ऊपर गद्दार और भ्रष्टाचारी शासन ने और धर्मद्रोहियों ने जो अकारण ४० मुकद्दमे चलाये हैं, वह हिदुओं के लिये लज्जास्पद है।

मैं आपके जनज्ञान' मासिक का सदस्य बनना चाहता हूँ।

वार्षिक शुल्क ३५ रु० मनिआर्डर से भेज रहा हूँ।

श्री शाममाणिकराव पाथरकर, किल्ले धारूर (महाराष्ट्र)

पूज्य बहन जी, सादर नमस्ते !

आपकी कुशलता की कामना है मैं तो सिर्फ यही कहूंगा कि जीवन ही संघर्ष है अतः आप का संघर्ष (जनज्ञान) मुक्त कंठ से प्रशंसनीय है। क्योंकि मेरा विश्वास है कि "दुख शोक जो जब आ पड़े धैर्य पूर्वक सब सहो,
होगी सफलता क्यों नहीं कर्तव्य पथ पर दृढ़ रहो।"

शोभालाल सुवालका

आदरणीय सम्पादिका महोदया,

कर-चरणों में सादर सर्मपित !

मुझे आप के द्वारा प्रकाशित जन-ज्ञान (मासिक) की कई प्रतियां पढ़ने को मिली। आप अपने आपको अति संकट में डालकर जो हिन्दू धर्म का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुनरुत्थान एवं हिन्दू समाज का पुनर्जागरण कर रही हैं, उसके लिए आप को हम सभी हिन्दू भाईयों की ओर से लाख-लाख धन्यवाद। हमारा भारतवर्ष जो भगवान श्री एवं श्री कृष्ण की जीवन लीला-स्थल है, आज यहां उनके नाम पर जलूस निकालना भी दूभर हो गया है। भारत सरकार के लिए यह कितने शर्म की बात है। फिर भी कोई बात नहीं। हम सभी हिन्दू भाई आपके साथ है।

अन्ततः आप अवश्य सफल होंगी। भगवान आपकी रक्षा करें।

बुद्धेश्वर शर्मा वीरपुर, (बिहार)

आदरणीय बहन राकेशरानी जी, सादर नमस्ते।

आपके प्रिय पत्र जनज्ञान द्वारा आपके विचार एवं क्रिया-कलापों की जानकारी मिलती रहती है। हमारी न केवल आर्य समाज अपितु सम्पूर्ण हिन्दू जाति में नवीन चेतना की लहर जगाते रहते हैं। भगवान आपको दीर्घ आयु प्रदान करें। और आप इसी प्रकार समाज कार्य को आगे बढ़ाती रहे, यही हमारी शुभकामना है।

बलराम सहगल, इन्द्री (करनाल)

महानुभाव, सादर नमस्कार,

कुशल हूं, एवं आप सभी सदस्यगणों की तथा भारतीय हिन्दुओं की कुशलता हेतु सदैव प्रार्थी हूं। दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित "क्या आप सारा भारत दारूल इस्लाम बनने देंगे ?" पढ़ी और मुझे वो रास्ता मिल गया जिसकी मुझे बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा थी।

अतः पुस्तक के साथ संलग्न सहायता पत्र (प्राथमिक) भरकर भेज रहा हूं। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास भी है कि मुझे एक सक्रिय सदस्य के रूप में सदस्यता प्रदान कर जीवन में इस उद्देश्य को पूर्ण कर पाने की ललक के लिए आप मेरा मार्ग प्रशस्त कर मुझे कृतार्थ करेंगे।

डा. ओ. एन. पाठक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदरणीय बहन जी, सादर अभिनन्दन,

आप सब मुकदमें में निर्दोष साबित हुए इससे भारतीय न्याय व्यवस्था के प्रति कुछ थोड़ी-सी आस्था बढ़ी हैं। आज सारा देश धर्म-व्यवस्था से, पुरातन एवं सनातन शिष्ट-आचरण मान्यताओं आदि से ही जीवित है नहीं तो जिसे हम भारतीय कहते है वह भी न बचा होता। भगवान आप को सर्वथा दोष मुक्त करने में सहाय हो इसी अर्चना के साथ आपका ही एक भाई !

आपका—शिव

श्रम बनाम आत्म निर्भरता

—घनश्याम दास कोटवानी

एक बार स्वामी सत्यदेव ने अमेरिका में अपने फटे हुए जूते मोची के सामने रखते हुए कहा—भाई जल्दी से इसकी मरम्मत कर दो।

मोची ने निवेदन किया—अभी मैं बहुत अधिक व्यस्त हूं। इसलिए कृपया आप ही धागा सुआ लीजिये और मरम्मत कर लीजिये।

भृकुटी तानते हुए स्वामी जी बोले—मेरे पढ़ने लिखने की और सन्यास की मजाक मत उड़ाओ। मैं जूतों की मरम्मत करूंगा ?

लगता है आप पहली बार यहां आये हैं इसलिए नाराज हो रहे हैं। हम मानते हैं जो जूते मरम्मत करने से भी परहेज करता है पढ़-लिख कर बड़ा काम क्या करेगा।

मोची ने अपनी बात स्पष्ट कर स्वयं का परिचय दिया। मैं इस देश के शिकागो विश्वविद्यालय में एम. ए. का विद्यार्थी हूं और मेरे पिता जी एक धनाढ्य व्यक्ति हैं। हमारी शिक्षा में सर्वप्रथम यही बात बताई जाती है कि अपने पैरों पर खड़ा होना सीखो और कोई काम छोटा मत समझो।

काम करना कभी बुरा नहीं होता। जो श्रम नही करता वह दूसरों का शोषण करता है और यहीं से बेईमानी और अत्याचार प्रारम्भ होता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जावरमाला का सपूत–राणा प्रताप

—रावत मल टांक

ऊँचा मस्तक किए खड़ा है, तेरा अडिग कीर्ति स्पूत
तेरी गाथा अजर अमर है, हे जावर माला के सपूत
स्वतंत्रता के स्वाभिमानी, अरावली के अटल सेनानी
मातृ भूमि के वीर पुत्र हे, कण कण गाए तेरी कहानी
तुझ में दिव्य दैवी शक्ति थी, हल्दी घाटी है सबूत
तेरी गाथा अजर अमर है, हे जावर माला के सपूत ॥१॥

बप्पा रावल की आन रखी, तूने सर्वस्व होम दिया
कण्टक पथ पर चल कर भी, नहीं शक्ति का था विलोम किया
हिन्दू कुल का सूर्य था तूं, सबने किया अनुभूत
तेरी गाथा अजर अमर है, हे जावर माला के सपूत ॥२॥

बीज घास के तूने पकाए, कैसे कैसे भोजन खाए
गौरव व भू रक्षा प्रण को, हर दुख पाके तूने बचाए
मेवाड़ी शक्ति की बन गई, तेरी वाणी आधार भूत
तेरी गाथा अजर अमर है, हे जावर माला के सपूत ॥३॥

विश्व प्रसिद्ध इतिहास बन गया, अचरज पूर्ण था रणकोशल
सहस्त्रों में खलबल कर देता, यवनों को था तूं बोझल
हे गाथा रोमांचकारिणी, तो तूं था कितना अद्भूत
तेरी गाथा अजर अमर है, हे जावर माला के सपूत ॥४॥

चित्तौड़ नहीं ये राजपूताना, याद आज भी करता है
अरावली में स्मृति का, भान आज भी करता है
यही प्रचण्ड रूप धर बने, तुम यवनों के यमदूत
तेरी गाथा अजर अमर है, हे जावर माला के सपूत ॥५॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सोया अकबर किसी कब्र में, अब भी तुझ से थर्राए
ले ले तेरा नाम कहीं जो, यवनों की रूह घबराए
बालक बालक में करते हैं, हम तुझ सी ताकत आहुत
तेरी गाथा अजर अमर है, हे जावर माला के सपूत ॥६॥
कवि "रावत" तुझको करता है, शत् शत् बार प्रणाम
तेरे गुण आजीवन गावूं, लूं नहीं कभी विराम
तेरा गौरव रहे देश में, न बने कभी पराभूत
तेरी गाथा अजर अमर है, हे जावर माला के सपूत ॥७॥

वैदिक बिद्वान् आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री का निधन

दिल्ली के निगमबोध घाट पर वेदमन्त्रों के साथ अन्त्येष्टि

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य वैद्यनाथजी शास्त्री का ११ मार्च, ८८ की रात्रि में फालेज के प्रकोप तथा हृदय गति रुक जाने से श्यामलाल नर्सिग होम, दिल्ली में निधन हो गया था। १२ मार्च को उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से दिल्ली के निगमबोध घाट पर सम्पन्न हुआ।

आचार्य जी स्वतन्त्रता सेनानी थे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन महर्षि दयानन्द के सैनिक के रूप में आर्यसमाज की सेवा में लगा दिया था। वह संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी के विद्वान थे। वह दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय लाहौर में आचार्य पद पर भी रह चुके थे। उन्होंने सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत वैदिक अनुसन्धान विभाग के अध्यक्ष के रूप में लगभग ६० पुस्तक हिन्दी अंग्रेजी में लिखी थीं। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए वह मारीशस, पूर्वी अफ्रीका, दक्षिण अफ्रीका और अमेरिका भी गए थे।

माननीय आचार्य जी के निधन से आर्य समाज का एक शक्तिशाली स्तम्भ टूट गया है। जिसकी पूर्ति कभी नहीं हो सकती। दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित सामवेद का हिन्दी भाष्य आचार्य वैद्यनाथ जी का ही है।

७२ वर्ष की आयु में वह सदैव-सदैव के लिए हमसे अलग हो गए। परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी धर्मपत्नि श्रीमती उर्मिला शास्त्री तथा बेटी व उनके परिवार को तथा हम सभी को इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजनतिक लेख

पंजाब और पाकिस्तान समस्या

—वी० एन० नारायणन
ट्रिब्यून, चंडीगढ़ के प्रधान-सम्पादक

राष्ट्र को अन्ततः, किस्तों में ही सही, यह बताया जा रहा है कि पंजाब में आतंकवाद को बरकरार रखने और राज्य में उथल-पुथल मचाए रखने में पाकिस्तान का कितना गहरा हाथ रहा है। पंजाब के निकट रहने वालों को पिछले दिनों संसद में सरकार द्वारा किये गये रहस्योद्घाटन से कोई आश्चर्य नहीं हुआ। चार वर्ष से भी अधिक समय से यह अच्छी तरह पता है कि जिया सरकार अलगाववादी और खालिस्तानी तत्वों का कई प्रकार से आतिथ्य करती हुई उनके संरक्षक की भूमिका अदा कर रही है। यह सबको पता था कि जगजीत सिंह चौहान और गंगा सिंह ढिल्लों जैसे सुपरिचित खालिस्तान समर्थक अक्सर पाकिस्तान की यात्रा करते रहे हैं और वे हमेशा इस्लामाबाद के सम्मानित अतिथि रहे हैं। भारत सरकार ने १९८४ में ही पंजाब के भारतीय हिस्से से सीमा पार करने वाले उग्रवादियों के लिए पाकिस्तान में चलाए जा रहे प्रशिक्षण शिविरों का मामला राष्ट्रपति जिया के साथ उठाया था। यह कहा जाता था, और इसके सबूत भी थे, कि १९८२ से पंजाब में हुए साम्प्रदायिक हत्याकांडों में सीमा पार के लोगों का हाथ था। यह बात अधिकांशतः सही बनी रही जब तक कि आतंकवादियों ने १९८७ के आरंभ से पूरे परिवारों का अन्धाधुन्ध सफाया न शुरू कर दिया।

तस्करी की भूमिका—

भारत-पाकिस्तान सीमा पर तस्करी के बहुमुखी संचालन को देखते हुए, पंजाब में हिंसा को बढ़ाने में तस्करी की ठोस भूमिका रही है। यह मानना उचित ही है कि यह बात पंजाब में हिंसा को बढ़ावा देने और खालिस्तान आंदोलन को जीवित बनाए रखने का मुख्य कारण बनी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजाब के संकट में पाकिस्तान का हाथ होने के बारे में यदि कोई आश्चर्य है तो वह दो कारणों से है। पहला अगर भारत सरकार को इस्लामाबाद की विश्वासघाती भूमिका के बारे में पहले से और लगातार जानकारी थी तो उसने दो वर्ष पहले सीमा को बंद करने का प्रयास क्यों नहीं किया? प्रत्यक्षतः, भारत ने सोचा कि वह राज्य में आतंकवाद का और विदेश में खालिस्तान समर्थको को दी जा रही पाकिस्तानी सहायता का मुकाबला कर सकता है। अब यह महसूस किया जा रहा है कि ऐसा कुछ सम्भव नहीं हुआ। आश्चर्य की दूसरी बात यह है कि अब तक जिया सरकार से यह उम्मीद की जा रही थी कि वह सीमा पार भारत की शर्मिदगी के बारे में महज एक दर्शक की निष्क्रिय भूमिका निभाएगा, लेकिन वह, वास्तव में आतंकवाद को सक्रिय रूप से भड़का कर एक क्रूर एवं खतरनाक खेल में शामिल था।

हथियार कैसे-कैसे—

चार महीने पहले खुफियाँ एजेंसियों ने पंजाब में आतंकवादियों द्वारा चीन में बनी घातक ए. के.—४७ राइफलों का इस्तेमाल किये जाने की खबर दी थी। बताया गया कि उग्रवादियों के पास ऐसे कुल दो सौ हथियार थे। आज, कहा जाता है कि पंजाब में आतंकवादियों के पास पन्द्रह सौ ए.के.—४७ राइफलें हो सकती हैं। उनके पास इतने ही घातक अमरीकी हथियार, लांचर सहित ए. आर.—१५ राकेट और उससे भी अधिक विनाशकारी स्टिंगर मिसाइलें हैं। ये सारे हथियार पाकिस्तान की मिलीभगत और सक्रिय सहयोग के बगैर भारत नहीं लाये जा सकते थे। इस बात के भी प्रमाण हैं कि खालिस्तान-समर्थक और ब्रिटेन, अमरीका तथा कनाडा जैसे दूर-दराज के देशों के सिख उग्रवादी संगठनों के अनेक नेता अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का उपयोग करने वाले पंजाब के उग्रवादियों से बातचीत के लिए लाहौर जाया करते हैं। यह भी महज संयोग नही हैं कि हाल में आतंकवादियों के साथ पुलिस की अधिकांश मुठभेड़ें पाकिस्तान सीमा के बहुत निकट हुई हैं।

कारण क्या है ?—

पंजाब में संकट के लिए पाकिस्तान को दोषी ठहराना बात को बहुत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आसान बनाना होगा। पाकिस्तान ने किन कारणों से पंजाब में इस खतरनाक खेल में खुद को शामिल किया, इसका सिर्फ अन्दाजा ही लगाया जा सकता है। जैसा कि स्पष्ट है, बिक्री या उपहार के रूप में आधुनिकतम हथियारों की आपूर्ति उस समय शुरू हुई जब श्री जे. एफ. रिबैंरो के बहादुर अधिकारियों और जवानों को पिछले नवम्बर माह में आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में सफलता मिलनी शुरू हुई। हो सकता है, राष्ट्रपति जिया ने महसूस किया हो कि खालिस्तानी उग्रवादियों के मनोबल को बनाए रखने के लिए उनका हस्तक्षेप जरूरी है। लगभग इसी समय, यह स्पष्ट हुआ कि सोवियत संघ अपने सैनिक अफगानिस्तान से हटा लेगा यह समझना मुश्किल है कि पाकिस्तान के इरादे क्या हैं। हो सकता है, इस्लामाबाद यह चाहता है कि भारत पंजाब में बड़े पैमाने पर आतंकवादी-विरोधी लड़ाई में फंसा रहे जिससे ठोस अफगान समझौते को टालने में मदद मिले। या शायद पाकिस्तान को उत्तर-पश्चिम मोर्चे पर अपने सैनिकों की तैनाती के लिए समय चाहिए और इसके लिए सब से अच्छा उपाय यही है कि पंजाब में अलगाववादी शक्तियों को मजबूत किया जाए तथा भारत का ध्यान केवल देश की भीतरी स्थिति की ओर बनाए रखा जाए।

अधार्मिक आतंकवादी—

पंजाब में सशस्त्र उग्रवादियों और सुरक्षा सैनिकों के बीच वर्तमान लड़ाई में पंजाब के लोगों, सिख एवं हिन्दू दोनों, को शामिल करना जरूरी है। राष्ट्र को प्रभावशाली ढंग से यह भरोसा दिलाना होगा कि आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं है और वे पंजाब के लोगों से नहीं बल्कि विदेश में भारत विरोधी तत्वों से शक्ति ग्रहण करते हैं। सरकार द्वारा किये गये आतंकवादी विरोधी उपायों में पंजाब सीमा को बंद करना, तस्करी की रोकथाम और उन रास्तों को प्रभावशाली ढंग बंद करना शामिल है, जहां भारत और पाकिस्तान के बीच लोग हथियार तथा नशीली दवाएं लायी—ले जायी जाती है। जैसा कि पंजाब के राज्यपाल श्री सिद्धार्थ शंकर राय ने बार-बार कहा है कि पंजाब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का संकट, आन्तरिक विद्रोह उतना नही है जितना कि वह एक प्रकार का विदेशी आक्रमण है।

पाकिस्तान की भूमिका पर हाल में सरकार द्वारा जोर दिये जाने का उद्देश्य देश को और साथ ही विश्व को यह बताना है कि पंजाब में अधिकांश सिख आतंकवादियों के खिलाफ हैं और थोड़े से राष्ट्र-विरोधी तत्व ही पंजाब में हिंसा और हत्याओं में लिप्त हैं। पाकिस्तान की कारगुजारियों पर जहां दहशत वढ़ाने की जरूरत नहीं है वही उत्तर-पश्चिम के इस शरारती पड़ोसी को अवश्य बताया जाना चाहिए कि पंजाव समस्या में दखलअन्दाजी करना एक खतरनाक खेल साबित होगा।

सियाचिन के मामले मे जिया सरकार का आक्रामक रवैया भी यह बताता है कि प्रत्यक्ष मुकावले से बचते हुए भी पाकिस्तान दोनों देशों के बीच संबंधों को सामान्य बनने नहीं देना चाहता। इस प्रक्रिया में राष्ट्रपति जिया भारत के विकल्पों को समाप्त करते हुए एक ऐसी लड़ाई को उकसावा दे रहा है जिसका सारा दोष उन पर ही जाएगा। ★

जनज्ञान "मासिक"

के आजीवन सदस्य बनिये।

आप को 101 रु० का अमूल्य ग्रन्थ वैदिक सम्पत्ति और 50 रु. मूल्य का संक्षिप्त महाभारत (हिन्दी भाष्य) उपहार में दिये जायेंगे।

2286, आर्यसमाज मार्ग, करौलबाग
नई दिल्ली-110005

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बोध कथा

अपना-अपना स्वभाव

—आचार्य सोमव्रत विद्याभास्कर

महाकवि जयदेव तीर्थ यात्रा पर थे। कुछ डाकुओं ने उन्हें घेर कर धन लूट लिया और उन्हें एक जल रहित कुएं में डाल दिया जयदेव कुएं में पड़े-पड़े संकीर्तन करने लगे। गौड़ेश्वर राजा लक्ष्मणसेन अपने राज कर्मचारियों के साथ उधर से गुजर रहे थे। उनके कानों में संकीर्तन के शब्द पड़े, तो उन्होंने कोतूहल-वश कुए में झांककर देखा; तो कोई आदमी दिखाई पड़ा। उनके आदेश से सेवकों ने कुएं में गिरे हुये आदमी को बाहर निकाला। कुएं में गिरा हुआ आदमी महाकवि जयदेव है, यह जानकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। राजा लक्ष्मणसेन उन्हें सम्मान सहित राजमहल में ले आए और विद्वत् सभा का प्रधान बना दिया। इसी बीच में राजा ने अनेक बार प्रयास किया कि लुटेरे कौन हैं? किन्तु महाकवि ने इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी।

राज-महल में महोत्सव था। बहुत से इष्ट-मित्र जन उस महोत्सव में पधारे। महाकवि को लुटने वाले लुटेरे साधुवेश में आये। महाकवि ने उन्हें पहिचान लिया। पहिचाने जाने के कारण साधुवेश में लुटेरे भयभीत थे। महाकवि ने राजा से कहा—"राजन! ये मेरे मित्र हैं। आप इन्हें खुलकर दान दीजिये।" राजा ने विदाई के समय उन लोगों के साथ कुछ सेवकों को भेज दिया, ताकि मार्ग में इन्हें किसी प्रकार का कष्ट न हो। जब काफी रास्ता तय कर चुके, तब एक सेवक ने पूछा—'महात्मन्! आपका महाकवि जयदेव जी के साथ क्या सम्बन्ध हैं। उनमें से एक ने कहा, हम दोनों किसी राज्य में साथ-साथ काम करते थे। जयदेव ने एक भयंकर अपराध किया, जिसके कारण राजा ने इसके वध का मुझे आदेश दिया। मेरी जयदेव के साथ मित्रता थी, इसलिए मैंने जंगल में ले जाकर इसे छोड़ दिया और कहा कि तुम इस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राज्य से बहुत दूर चले जाओ, ताकि तुम्हारे बारे में राजा को कुछ पता न लगे। मैंने जयदेव को पहिचान लिया, इसीलिये वह डर गया कि मैं कहीं राजा लक्ष्मणसेन के आगे उसके कारनामे जाहिर न कर दूं, इस कारण उसने राजा-द्वारा सत्कार करवाया।' कर्मचारी ने आकर राजा और जयदेव से ज्यों की त्यों बातें सुना दीं।

राजा लक्ष्मण सेन को महाकवि जयदेव के पावन चरित्र पर विश्वास था। उन्होंने आश्चर्य के साथ कहा—'महाकवि ! यह सब मुझे सरासर झूठ लग रहा है।

'राजन् ! आपका अनुमान बिलकुल सही है। ये वही लोग थे, जिन्होंने मुझे लूठकर कुएं में डाल दिया था। मैंने इन्हें पहिचान लिया था, किन्तु यह सब सोचकर मैं चुप रहा कि रहस्य खोलने पर आप इन्हें दण्डित करेंगे। मैं नहीं चाहता था कि मेरे कारण किसी को दुःख मिले। ये बेचारे गरीबी के कारण लुटेरे बन गए हैं, यही विचार कर मैंने आपसे काफी धन दिलवा दिया, ताकि गरीबी के जीवन से मुक्त होकर आराम से जीवन बिता सकें।'

सामवेद का हिन्दी पद्यानुवाद

उदीयमान कवयित्री श्रीमती मृदुल कीर्त्ति द्वारा

प्रस्तुत सामवेद का हिन्दी पद्यानुवाद

अब पुस्तक रूप में उपलब्ध है।

मूल्य 51 रुपये।

जनज्ञान के सदस्यों को चालीस रुपये में।

सम्पर्क सूत्र— वेद मन्दिर (महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम)

डाकघर मुखमेलपुर, दिल्ली-36

डाक से मंगाने पर दस रुपये प्रेषण व्यय पृथक होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८ जून को जीवन के ५४ वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर पंडिता राकेश रानी : व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक दृष्टि

—सत्यपाल शास्त्री

८ जून १९३५—हां, यही तो था वह दिन, जब उत्तर प्रदेश के बुलन्द शहर जिलें के गिनौरा जनादीरा ग्राम में एक शिशु ने माता लीला वती की कोख से जन्म लिया, जिसकी कीर्त्ति कौमुदी आगे चलकर सुदूरवर्ती अंचलोतक फैली। पिता श्री रामचरण शर्मा कटर आर्य समाजी थे। जिन्होंने नाम भी वहुत सोच विचार कर ही रखा था। राकेश रानी (राकेश अर्थात् पूणिमा की रात्री का चन्द्रमा) वारह वर्ष से भी कम उम्र में बालिका राकेश रानी ने अपने माता-पिता के साथ उत्तर भारत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान वालिका जेहलम वर्त्ती उस गुरुकुल में भी गई, जहां के विद्यार्थी और बाद में स्नातक पंडित भारतेन्द्र नाथ (दिवंगत महात्मा वेदभिक्षु:) के साथ वे सन् १९५० में परिणय सूत्र में वन्धीं। (स्वर्गीय भारतेन्द्र नाथ जी के साथ इन पंक्तियों के लेखक की आत्मीयता तभी से रही सन् १९४५ में हम दोनों गुरूकुल से विद्याभूषण की उपाधी के साथ स्नातक बनकर निकले।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राकेशरानी जी मेधावी छात्रा थीं । उन्होंने लाहौर, गाजिया बाद, अम्बाला छावनी, आदि में निवास के दौरान उच्च शिक्षा प्राप्त की । वे बचपन से ही श्रमशीला हैं । अच्छी कवयित्री है सन् १९४८ में गांधी जी की हत्या के समय उनकी उम्र तेरह वर्ष से भी कम थी । उन्होंने उस उम्र में गांधी जी की हत्या पर एक कविता लिखी जो नई दिल्ली के नव भारत में प्रकाशित हुई । (उन दिनों नव भारत टाइमस का नाम नव भारत था ।) आगे चलकर उन्होंने "सुनो-सुनो ऐ दुनिया वालों, बापू की तुम अमर कहानी" की तर्ज पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवन गाथा सिखी, जो बहुत लोकप्रिय हुई ।

राकेशरानी जी सब अर्थों में भारतेन्द्र जी की जीवन संगिनी, जीवन सहचरी, जीवन साथी और अर्धांगिनी रहीं । भारतेन्द्र जी के प्रत्येक कार्य में पूर्ण सहयोगिनी रहीं । एक चिन्तक का कहना है कि प्रत्येक पुरूष की सफलता के पीछे किसी नारी का हाथ होता है । चर्चित युगल पर यह कथन पूर्णतः चरितार्थ होता है ।

राकेशरानी जी एक सार्थक जीवन जी रही हैं । उनके जीवन का कुछ अर्थ है, उद्देश्य है, प्रयोजन है । वे निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहीं हैं—असत् से सत् की ओर, तमसस् से ज्योति की ओर, मृत्यु से अमृतत्व की ओर, वासना से उपासना की ओर, प्रदर्शन से दर्शन की ओर, भोग से योग की ओर और शोध से बोध की ओर । वे शाखा नहीं, पूर्ण वृक्ष हैं । सार्वजनिक जीवन बिताते हुए भी उन्होंने अपनी सन्तान की उपेक्षा नहीं की—अपनी पुत्रियों को ऊंची से ऊंची शिक्षा दिलवाई । अपने परिवार के सदस्यों में अच्छे से अच्छे संकार डाले ।

राकेशरानीजी परमविदुषी है—कुशल सम्पादिका है । व्यवहार कुशल है । 'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे' उनका ध्येयवाक्य है ।

व्यस्त दिनचर्या—

उनकी दिनचर्या अत्यन्त व्यस्त है । सुबह ठीक पांच बजे वे उठ बैठती हैं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पांच मिनट ईश्वरवी स्तुति, प्रार्थना और उपासना करती हैं। उनकी प्रार्थना होती है—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥

'हे प्रभो, सब सुखी हों, सब नीरोग हो। सब का कल्याण हो, कोई दुःखी न रहे। वे अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए परमात्मा से शक्ति की याचना करती हैं।

प्रार्थना के बाद वे नींबू पानी, ग्रहण करती है। स्नानादि से निवृत्त होकर अध्ययन में जुट जाती हैं। दो घंटे तक यह सिलसिला चलता है। इसमें सोद्देश्य अध्ययन लेखन और स्वान्तः सुखाय किया गया स्वाध्याय दोनों सम्मिलित हैं। वेद मन्त्रों और गीता के श्लोकों का अर्थ सहित पाठ करती है। आठ बजते न बजते वे यज्ञवेदी पर आ जाती हैं। पहले सन्ध्या करती हैं; फिर हवन-यज्ञ। इस कर्मकाण्ड में आश्रमवासी उनके सहभागी बनने हैं। वे अपने हाथ से यज्ञशेष वितरित करती हैं। वह दृश्य देखकर कलियुग में सतयुग की अनुभूति होती है। उस समय राकेशरानी जी भाव-भंगिमा ऋषिकाओं की-सी होती है।

यज्ञशाला से वे प्रातशाश की मेज पर आ जाती हैं। वे स्वयंपाकी है। प्रातशाश में एक पराँठा या विकल्प के तौर पर कुछ भी अल्पाहार लेती हैं। उनकी लोकप्रियता का यह हाल है कि इन पंक्तियों के लेखक ने शायद ही कभी उन्हें अकेले खाते-पीते देखा हो। उनका सदावर्त चलता ही रहता है। अतिथि सत्कार का क्रम चालू रहता है।

सारा कार्यक्रम इब्राहीम पुर के समीप वर्त्ती वेद मन्दिर (महात्मा वेदभिक्षुः) सेवाश्रम अथवा करोल बाग कार्यालय का है। नौ बजे के बाद राकेशरानी जी कार्यालय में काम करना प्रारम्भ कर देती हैं। यदि आर्य समाज मार्ग स्थित कार्यालय जाना हो तो वे नौ बजे आश्रम से प्रस्थान कर देती हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रस्थान से पूर्व वे आश्रम का एक चक्कर लगाना नहीं भूलतीं। इस क्रम में वे आश्रमवासियों के सुख-दुख की जानकारी प्राप्त करती हैं। वे आश्रम-वासियों के लिए मातृस्वरूप हैं। आश्रम के परिवेश में वे अम्मा जी के नाम से जानी जाती हैं।

कार्यालय में उनकी व्यस्तता बढ़ जाती है। पता ही नहीं चलता कि कब शाम के साढ़े छह बज गये। भोजन के लिए भी याद दिलाना पड़ता है। भोजन करने की याद दिलाने का यह प्रीतिकर कर्त्तव्य इन पंक्तियों के लेखक ने भी निभाया है—इन शब्दों में याद दिला कर कि "बहन जी, भोजन कर लीजिये।" वे लघ्वाशी है—उनके भोजन की मात्रा बहुत कम है।

साढ़े छ बजे कार्यालय बन्द करके वे अन्तर्राजीय बस अड्डा—मोरी गेट बस टर्मिनल के लिए प्रस्थान करती हैं जहां से सवा सात बजे रवाना होने वाली बस उन्हें वेद मंदिर (आश्रम) पहुंचती है। आश्रम पहुंच कर वे भोजन बनाती हैं। रांत आठ बजकर चालीस मिनट पर दूरदर्शन समाचार सुनाती हैं। भोजन करके कुछ देर भ्रमण करती हैं। फिर काम में जुट जाती हैं। बारह साढे बारह बजे तक डाक आदि दिन का शेष बचा हुआ आफिस का काम निपटाती हैं। जब वे सोने के लिए लेटती हैं, तब थक कर चूर हो चुकी होती हैं, इसलिए कुछ ही क्षणों में निद्रा देवी की गोद में चली जाती हैं।

जैसा मैंने उन्हें पाया—

सन् १९५३ में राकेशरानी जी की ज्येष्ठ पुत्री ज्योत्स्ना के नामकरण संस्कार के अवसर पर मैंने पहले-पहल उनके दर्शन किये। उसके बाद कभी अन्तराल से और कभी प्रतिदिन उनसे सम्पर्क के अवसर आये। मैंने एक बात नोट की कि वे बहुत कम क्रोधित होती हैं। बड़ी से बड़ी मुसीबत हँसकर सहन कर लेती हैं। सब से सद्व्यवहार करना मधुर वाणी में बात करना, उनके स्वभाव का अंग बन चुका है। वे मेरी मुंह बोली और राखी बांध बहन हैं। उन्होंने मुझे अधिकार दे रखा हैं कि मैं "बहन जी" कह कर सम्बोधित करूं।

वे अपने दिवंगत पति देव के स्वप्नों को साकार करने के लिए प्राणपण से जुटी हुई हैं और उन्ही के शब्दों में 'मुझे महात्मा वेदभिक्षु: जी के यश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की उज्ज्वलता के सिवा कुछ नहीं चाहिए।" उन्होंने वेदभिक्षु: जी के जीवन दर्शन को आत्मसात् किया है और वेदभिक्षु: जी के कर्मयोग को अपने जीवन में लाने का संकल्प लिया है।

उनका यह संकल्प शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण हो' इस कामना के साथ मैं यह शेर उन्हें भेंट करता हूं—

तुम सलामत रहो हजार बरस, हर बरस के हों दिन पचास हजार।

मैंने व्यस्तताओं की चर्चा की और दीर्घायुष्य की भी प्रार्थना कर दी, लेकिन यह सब लिखने के बाद मुझे लगा की कि उनके व्यक्तित्व से सम्बन्धित कुछ बाते छूट गई हैं।

पहली बात तो यह कि महीने में लगभग दस दिन इन्हें अदालतों के चक्कर लगाने पड़ते हैं, क्योंकि उन पर लनभग चालीस मुकदमें चल रहे हैं। कानून अन्धा होता है देशभक्ति भी अपराध नजर आती है। परिणाम स्वरूप हमारी वहन जी को अदालती कार्रवाइयों से सम्घन्धित सब असुविधायें झेलनी पड़ती हैं। लेकिन क्या मजाल जो उनके माथे पर बल पड़े। चेहरे की मुस्कराहट उनका स्थायी भाव है।

इतनी व्यस्तताओं के बावजूद वे पारिवारिक जीवन के लिए भी समय निकाल ही लेती हैं। सप्ताह में एक दो दिन दिल्ली में ही शेख सराय (पुत्री सुमेधा के पास) जनकपुरी (वहन ब्रिजेश रहती हैं) शक्ति नगर ननद वसुन्धरा हैं, गाजियाबाद (उनका मायका है, आदि का चक्कर लग ही जाता है।

देहली से बाहर बेटी ज्योत्स्ना आभा, ऋचाके, पास तो चार छ: मास में ही नं० आता है। छोटी बेटी दिव्या बनस्थली विद्य पीठ (जयपुर) में पढ़ती है वहां भी साल में एकाध बार ही जा पाती हैं। स्वास्थ्य ठीक नहीं— कार्यालय का बोझ वहुत अधिक इस प्रकार व्यस्ताओं के बीच सभी से मधुर वाणी में ही बातें करना—काम समझाना पिछले कई महीने से रोग उनका पिण्ड नहीं छोड़ रहा आज (१७ मई को) जब मैं ये पंक्ति या लिख रहा हूं। तो पता लगा है कि वे स्वास्थ्य लाभ कर रही है। प्रभु करे वे सदैव स्वस्थ रहें और हम प्रति वर्ष हंसी खुशी के वातावरण में उनका जन्मदिन मनायें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक सभ्यता, विश्व की श्रेष्ठ सभ्यता थी

—पं० रघुनन्दन शर्मा

वैदिक सभ्यता कभी चरमोत्कर्ष पर थी। इसी सभ्यता ने दुनिया भर को ज्ञान का प्रकाश दिया था। कालान्तर में भारत की दासता के लम्बे युग के कारण ही यहां सामाजिक विकृतियां उत्पन्न हुईं।

प्रस्तुत है उसी गरिमामय सभ्यता के प्रामाणिक विवरण —संपादक

वैदिक आर्यों की सभ्यता

वेदमन्त्रों की शिक्षा केवल वेदों की शोभा, प्रतिष्ठा और महत्त्व बढ़ाने के ही लिए नहीं है, प्रत्युत य बतलाने के लिए है कि वेदों की इसी दिशा के द्वारा वैदिक आर्यों ने अपनी एक विशेष सभ्यता स्थिर की है, जो आदि सृष्टि से लेकर आज पर्यन्त जीवित है। हमने जो मनुष्यों की स्वाभाविक इच्छाओं से लेकर मोक्ष सुख पर्यन्त वेदमन्त्रों की शिक्षा का क्रम दिया है, इसी अन्तिम पारलौकिक मोक्ष प्राप्ति की सुदृढ़ भूमिका पर आर्यों ने अपनी सभ्यता की इमारत स्थिर की है। उन्होंने अपना अन्तिम ध्येय मोक्ष को ही माना है। परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि मोक्ष भी इसी संसार के द्वारा ही प्राप्त होता है, इसलिए मुमुक्षु को इस संसार के तत्त्व का और उसके उचित उपयोग का ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य होता है। संसार का तत्त्वज्ञान और इसका उचित उपयोग ही मोक्ष का साधक है, इसीलिए आर्यों ने संसार का उपयोग करते हुए मोक्ष प्राप्त करने की विधि को अपनी सभ्यता का मूल ठहराया है और उस विधि को चार भागों में अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष के नामों से विभक्त किया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष

अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष आर्यों की सभ्यता की आधार शिलाएं हैं। इनमें मनुष्य की वे समस्त अभिलाषाएं अन्तर्भूत हो जाती हैं, जिनका उल्लेख हमने वेदों के मन्त्रसंग्रह के आदि में किया है। क्योंकि मनुष्य के शरीर ... आवश्यकताओं को चाहनेवाले चार ही स्थान हैं और ये चारों पदार्थ उनकी पूर्ति कर देते हैं। मनु भगवान् अपने एक श्लोक में कहते हैं कि—

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥ (मनुस्मृति

अर्थात् पानी से शरीर, सत्य से मन, विद्या और तप से आत्मा तथा ज्ञान से बुद्धि शुद्ध होती है। इस श्लोक में शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की गणना अलग अलग की गई है। हम देख रहे हैं कि इन चारों की जहां पानी आदि अलग अलग चार पदार्थों से शुद्धि होती है, वहां इन शरीरादि चारों अंगों को अलग अलग चार पदार्थों की आवश्यकता भी होती है। ये चार आवश्यक पदार्थ अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष ही हैं।

शरीर पोषण के लिए अर्थ की, मनस्तुष्टि के लिए काम की, बुद्धि के लिए धर्म की और आत्मा की शांति के लिये मोक्ष की आवश्यकता होती है, क्योंकि विना भोजनादि (अर्थ) के शरीर निकम्मा हो जाता है, विना काम (स्त्री) के मन निकम्मा हो जाता है, बिना मोक्ष (अमरता) के आत्मा निकम्मा हो जाता है और विना धर्म (सत्य और न्याय) के बुद्धि निकम्मी हो जाती है। अर्थ और शरीर का, काम और मन का तथा मोक्ष और आत्मा का सम्बन्ध तो प्रत्यक्ष ही है, इसमें किसी को शंका नहीं हो सकती, परन्तु धर्म और बुद्धि का सम्बन्ध सुन कर संभव है, लोग कहने लगें कि यह बात ठीक नहीं हैं। क्योंकि संसार के धर्मों को बुद्धि का साथ करते हुए नहीं देखा जाता। परन्तु हम जिस वैदिक धर्म की बात कर रहे हैं, उसकी दशा ऐसी नहीं है। वैदिक धर्म बुद्धिपूर्वक ही है। इसका कारण यही है कि वैदिक धर्म वेदों द्वारा स्थिर किया गया है और वेद "बुद्धिपूर्वा वाक् प्रकृतिर्वेदे" अनुसार बुद्धिपूर्वक हैं। इसलिए इस धर्म पर वह शंका नहीं हो सकती। दूसरी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ह है कि बुद्धि ज्ञान से सम्बन्ध रखती है। जैसे जैसे ज्ञान की वृद्धि
, वैसे ही वैसे बुद्धि का विकास होता है। इसलिए बुद्धि और ज्ञान
वस्तु के दो विभाग हैं। जिस प्रकार बुद्धि और ज्ञान एक ही वस्तु
विभाग हैं उसी तरह धर्म और ज्ञान भी एक ही वस्तु के दो विभाग
योंकि देखा जाता है कि जैसे जैसे ज्ञान की वृद्धि होती है वैसे ही वैसे
भी वृद्धि होती है। धर्म में जितना ही ज्ञानांश होता है और ज्ञान में
ही धर्मांश होता है, बुद्धि में उतनी ही स्थिरता होती है। इसी
पर पहुंच कर योरप का प्रसिद्ध विद्वान् हक्स्ले कहता है कि
ज्ञान और सच्चा धर्म, दोनों यमज भाई हैं। इनमें से यदि एक
अलग कर दिया जायगा, तो दोनों की मृत्यु हो जायगी। विज्ञान
नी ही अधिक धार्मिकता होगी, उतनी ही अधिक उन्नति होगी ।
का अभ्यास करते समय मन की धार्मिक वृत्ति जितनी ही
होगी, विज्ञान विषयक खोज उतनी ही अधिक गहरी होगी और
आधार में जितना ही अधिक दृढ़ होगा, धर्म का विकास भी उतना
धिक होगा। तत्त्ववेत्ताओं ने जो अब तक बड़े बड़े काम किये हैं, उन्हें
उनके बुद्धिवैभव का ही फल न समझिये, किन्तु उनकी धार्मिक वृत्ति
में अधिक कारणीभूत है। इसलिए धर्म का ज्ञान के साथ और ज्ञान
द्धि के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है, इसमें सन्देह नहीं।

जिस प्रकार धर्म से बुद्धि का सम्बन्ध है, उसी तरह अर्थ से शरीर का,
से मन का और मोक्ष से आत्मा का भी सम्बन्ध है। इन्हीं अर्थ, धर्म,
दि में मनुष्य के जीवन, रति, मान, ज्ञान और परलोक आदि की समस्त
ओं का समावेश हो जाता है, अर्थात् जीवन की अभिलाषा अर्थ में,
त्रादि की काम में, मान, ज्ञान और न्याय को धर्म में और परलोक की
मोक्ष में समा जाती है। अर्थात् समस्त ऐषणाओं का समावेश अर्थ,
काम और मोक्ष में हो जाता है और चारों पदार्थ एक दूसरे के आधार
बन जाते हैं। जिस प्रकार अर्थ अर्थात् भोजन वस्त्रादि के बिना शरीर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की स्थिति नहीं रह सकती और न काम अर्थात् रति के बिना शरीर ही हो सकता है और न बिना शरीर और शरीर निर्वाह के मोक्ष सा[धन] हो सकता है, उसी तरह बिना मोक्षसाधन के बिना मोक्षमार्ग निर्धार[ण] अर्थ और काम को भी सहायता नहीं मिल सकती। क्योंकि अर्थ औ[र] के समस्त पदार्थ प्रायः मनुष्यों, पशुओं और वनस्पतियों से ही प्रा[प्त] हैं। ये सभी जीव हैं और कर्मफल भोग रहे हैं। इनका भी उद्धार त[भी हो] सकता है, जभी ये कर्मफल भोगकर मनुष्य शरीर में आवें और यह[ां] का मार्ग खुला हुआ पावें। इसलिए मोक्ष की सच्ची कामना से ही अ[र्थ] काम को अर्थात् मनुष्यों, और वनस्पतियों की सहायता मिल सकती है। की सच्ची कामना के बिना अर्थ और काम का उचित उपयोग हो [नहीं] सकता और बिना उचित उपयोग के अर्थी स्वार्थी हो जाते हैं और [काम] वाले कामी हो जाते हैं, तथा स्वार्थी और कामी मिलकर समाज को ना[श कर] देते हैं।

इसीलिए कहा गया हैं कि मोक्ष से अर्थ और काम को सहायता [मिलती] है। किन्तु प्रश्न यह होता है कि अर्थ काम से मोक्ष को और मोक्ष [से अर्थ] काम को परस्पर उचित सहायता दिखाने वाला नियम कौन सा है? [इसका] उत्तर स्पष्ट है कि अर्थ, काम और मोक्ष में सामंजस्य उत्पन्न करने वाल[ा धर्म] है। धर्म पूर्वक मोक्ष साधन से अर्थ और काम की उचित व्यवस्था हो [जाती] है और धर्मपूर्वक अर्थ काम को ग्रहण करने से मोक्ष सुलभ हो [जाता] है। इस प्रकार से ये चारों पदार्थ एक दूसरे के सहायक हो जाते हैं। ये चारों पदार्थ परस्पर एक दूसरे के सहायक है। और अपने [अपने] कार्य में चारों बड़े महत्व के हैं, पर चारों में मोक्ष का स्थान सब से [ऊंचा] है। मोक्ष की महत्ता का कारण मृत्यु के दुखों से छूट जाना है। मनु[ष्य की] समस्त अभिलाषाओं में दीर्घातिदीर्घ जीवन की अभिलाषा ही सर्वश्रे[ष्ठ है।] जिन्दगी के मुकावले में मनुष्य अर्थ, काम, मान, न्याय और ज्ञान की [परवाह] नहीं करता। इस बात का प्रमाण मरने के समय ही मिलता है। [इसलिए] जिस साधन से मृत्यु का भय सदैव के लिये दूर हो जाय—जिसके प्रा[णों]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर मृत्यु के कारणरूप इस जन्म ही का अभाव हो जाय—उस मोक्ष मता कौन कर सकता है ? यही कारण है कि आर्यों ने अपनी सभ्यता मोक्षप्राप्ति के उच्च आदर्श पर स्थिर किया है और केवल धर्म पूर्वक अर्थ और काम को ही उसका सहायक माना है, धर्मविरुद्ध को नहीं। र्वक अर्थ और काम को ग्रहण करके मोक्ष प्राप्त करने के लिए ही आर्यों पना जीवन धार्मिक बनाने की शिक्षा दी गई है। इसलिए वे ब्रह्मचर्याश्रम कर संन्यास पर्यन्त सन्ध्योपासन प्राणायाम और योगाभ्यास द्वारा अपने को मोक्षाभिमुखी बनाते हैं।

मोक्ष की प्रधानता

मोक्षप्राप्ति के मार्ग में चलने वाले को दो बातों की आवश्यकता होती एक तो सृष्टि उत्पत्ति के कारणों का जानना और कारणों के कारण को प्राप्त करना, दूसरे सृष्टि के उपयोग करने की विधि का समझना। के कारणों और ईश्वर की प्राप्ति उपाय के ज्ञान से सृष्टि, प्रलय, जीव, ,कर्म, कर्मफल और ईश्वर जीव के संयोग तथा उनकी प्राप्ति आदि का खुल जाता है, और सृष्टि के उपयोग करने की विधि के ज्ञान से अर्थ काम के उपयोगी का तात्पर्य समझ में आ जाता है, तथा दोनों के मौलिक और उचित उपयोग से मोक्ष हो जाता है। अर्थ और काम के फेर से टने का नाम मोक्ष है, पर बिना इन दोनों के फेर में पड़े मोक्ष होता भी । ऐसी सूरत में धर्म का सहारा लेकर ही दोनों में सामंजस्य उत्पन्न जा सकता है। क्योंकि सभी को अर्थ की आवश्यकता है। भोजन, , गृह और गृहस्थी के बिना किसी का गुजर ही नहीं होता। वे सभी संसार (सृष्टि) से ही लेने पडते हैं। इसी तरह सब को काम की भी आवता होती है। सभी लोग स्त्री, वच्चे, शोभा, श्रृंगार और ठाटबाट की रखते हैं। ये पदार्थ भी सृष्टि से ही लिये जाते हैं। अर्थात् आदि से तक व्यक्ति या समाज को जो कुछ आवश्यक होता है, वह सब र से ही—सृष्टि से ही—लिया जाता है, इसलिए जब तक संसार के णों का ज्ञान न हो जाय, तब तक उसके कार्य का यथार्थ उपयोग हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही नहीं सकता—तब तक यह ज्ञात ही नहीं हो सकता कि हमको
से—इस संसार से—क्या-क्या, कितना-कितना, कब-कब और
प्रकार ग्रहण करना चाहिए। इसलिए आर्यों ने सबसे पहिले संसार
का पता लगाया है। यहा हम अर्थ और काम की देनेवाली सृष्टि
का वर्णन करते हैं और दिखाते हैं कि उन कारणों से उत्पन्न कार्य
और कामरूप से संसार में विद्यमान है, अतः इसका उचित उपयोग
ही मोक्ष प्राप्त करना चाहिये।

कारणों से ही कार्य होता है और कारण ही कार्य में अवतरि
अनेक प्रकार के नियमों में परिवर्तित हो जाता है। इसलिए जब
कारण का अनुसंधान किया जाता है तो कार्य के नियमों का ही
किया जाता है। हमें सृष्टि के कारणों को जानना है, अतएव आवश्य
हम भी इस कार्यरूप सृष्टि के कारणों का अनुसंधान करें।

नियमों से कार्य का पता

इस कार्यरूप सृष्टि में तीन नियम बहुत ही स्पष्ट रूप से दिखा
हैं। एक तो यह कि इस सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ नियम पूर्वक परिव
है, दूसरा यह है कि प्रत्येक जाति के प्राणी अपनी जाति के ही अन्द
मध्यम और निकृष्ट स्वभाव से पैदा होते हैं और तीसरा यह कि इस
सृष्टि में जो कुछ कार्य हो रहा है, वह सब नियमित, बुद्धिपूर्व
आवश्यक है।

इन तीनों प्रत्यक्ष नियमों में सबसे पहला नियम नियमित परिवर्तन
का है। बड़े-बड़े सूर्यादि ग्रह-उपग्रह से लेकर मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट
और तृणपल्लव तक में नित्य परिवर्तन दिखलाई पड़ता है। जिस पद
आज से सौ वर्ष जैसी स्थिति थी, वह आज नही है और जो आज है,
वर्ष बाद न रहेगी। जन्म, बाल, युवा और विनाश का क्रम जारी
'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः' के अनुसार उत्पन्न होकर नष्ट होने का
नियम परिवर्तन रूप से चल रहा है। परन्तु स्मरण रखना चाहिए
परिवर्तन का नियम इस सृष्टि का स्वाभाविक गुण नहीं है, क्योंकि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में परिवर्तन नहीं होता। जो लोग कहते हैं कि इस सृष्टि का परिवर्तन ही स्वभाव है, वे गलती पर हैं। वे भूल जाते हैं कि परिवर्तन नाम अस्थिरता का है और स्वभाव में अस्थिरता नहीं होती। फेरफार उंलटपलट, आदि अस्थिर गुण तो नैमित्तिक हैं, स्वाभाविक गुण तो वही है, जिनका अपने द्रव्य के साथ समवाय-सम्बन्ध है—नित्य सम्बन्ध है। इसलिए इस सृष्टि का परिवर्तन ही स्वभाव मानना उचित नहीं है। परिवर्तन ही स्वभाव मानने से प्रकृति में अनन्त परिवर्तन अर्थात् अन्नत गति मानना पड़ेगी और एक समान अनन्त गति मानने से संसार में किसी प्रकार के हल्लास विकास के मानने की गुञ्जायश न रहेगी। किन्तु सृष्टि में पदार्थों के बनने और बिगड़ने का क्रम नित्य देखा जाता है, इसलिए सृष्टि का परिवर्तन नैमित्तिक ही प्रतीत होता है स्वाभाविक नहीं।

बनने और बिगड़ने तथा जन्म और मृत्यु के नित्य दर्शन से ज्ञात होता है कि यह सृष्टि अनेक छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी है। संसार का चाहे जो पदार्थ लीजिए वह झुक जायेगा, टेढा हो जायेगा और टूट जायेगा। यहां तक कि विजली और ईथर भी टूट जाता है। अतएव सिद्ध होता है कि समस्त संसार छोटे-छोटे परमाणुओं से ही बना है। क्योंकि यदि संघात से संसार न बना होता और केवल एक ठोस चीज से ही बना होता तो न इसमें परिवर्तन ही होता और न कभी कोई चीज बनती, न ही विगड़ती। किन्तु हम पदार्थों को नित्य बनते बिगड़ते और परिवर्तित होते देख रहे हैं, इसलिए सृष्टि के इस परिवर्तनशील परमाणुरूप से विद्यमान हैं। परन्तु प्रश्न होता है कि क्या ये परमाणु चेतन और ज्ञानवान् भी हैं इनका उत्तर बहुत ही सरल है। यदि ये परिवर्तनशील परमाणु ज्ञानवान् भी होते तो नियमपूर्वक काम न करते। क्योंकि चेतन और ज्ञानवान दूसरे के बनाए हुए नियमों में बंध ही नहीं सकता। वह सदैव अपनी ज्ञान-स्वतन्त्रता से निर्धारित नियमों में बाधा पहुँचाता है। पर हम देखते हैं कि सृष्टि के परमाणु बड़ी ही सच्चाई से अपना काम कर रहे हैं। शरीर में या सृष्टि के अन्य जड़ पदार्थों में जिस जगह लगा दिए गए हैं, वहां आंख बन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करके अपना काम कर रहे हैं और जरा भी इधर उधर नहीं होते। इस ज्ञात होता है कि इस सृष्टि का परिवर्तनशील कारण जो परमाणुरूप विद्यमान है, वह ज्ञानवान् नहीं किन्तु जड़ है। इसी जड़, परिवर्तनशील औ परमाणुरूप उपादान-कारण को माया, प्रकृति, परमाणु, माद्दा और मैट आदि नामों से कहा गया और संसार के कारणों में से एक समझा जाता है

सृष्टि का दूसरा नियम प्राणियों के उत्तम और निकृष्ट स्वभाव का है अनेक मनुष्य स्वभाव से ही बड़े प्रतिभावान् सौम्य और दयावान् होते और अनेक मूर्ख, उद्दण्ड तथा निर्दय होते हैं। इसी प्रकार अनेक गौ, घोड़ आदि पशुस्वभाव से ही सीधे—गरीब होते हैं। इसी तरह बहुत से वृक्ष मीठ फलों से मनुष्यों की तृप्ति करते हैं और बहुत से वृक्ष ऐसे भी होते हैं, जो पास में आए हुए प्राणियों को पकड़कर चूस लेते हैं और खा जाते हैं। इस प्रकार से समस्त प्राणी समूह के स्वभाव में विरोध है। यह स्वभावविरोध शारीरिक अर्थात् भौतिक नहीं है, प्रत्युत आध्यात्मिक है, जो चैतन्य, बुद्धि और ज्ञान से सम्बन्ध रखता है। इस प्रकार के बुद्धि सम्बन्धी प्रमाण वृक्षों में भी पाए जाते हैं। तारीख २४ फरवरी, सन् १९३० के 'लीडर' पत्र में छपा है कि 'बगीचों में पड़े हुए नलों के सूराखों को वृक्ष ताड़ लेते हैं और उन सुराखों में अपनी जड़ें डाल देते हैं। इसी तरह एक बेल ऐसी है, जो किसी वृक्ष की चोटी तक जाकर जमीन में वापस आती है और फिर दूसरे वृक्ष में चढने के लिए दौड़ती है। चाहे भले वह वृक्ष पचास गज की ही दूरी पर क्यों न हो'—। परन्तु यह न समझना चाहिए कि यह ज्ञान प्राणियों के सारे शरीर में व्याप्त है। यह सारे शरीर में व्याप्त नहीं है। क्योंकि यदि सारे शरीर में व्याप्त होता तो हाथ, पैर, नाक और कान के कट जाने पर वह भी कट जाता और कटा हुआ ज्ञानांश कम हो जाता, पर हम देखते हैं कि दोनों टांगें जड़ से काट देने पर भी किसी गणितज्ञ के गणित सम्बन्धी ज्ञान में या इतिहासज्ञ की इतिहास सम्बन्धी याददास्त में कुछ भी अन्तर यही मालूम होता है कि मेरा ज्ञान पहिले से कम है। इसलिए यह निश्चित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं पड़ता और न उसको और निर्विवाद है कि ज्ञानवाली शक्ति सारे शरीर में व्याप्त नहीं है, प्रत्युत वह एक देशी, परिच्छिन और अणुरूप ही है, क्योंकि सूक्ष्मातिसूक्ष्म कृमियों में भी मौजूद है। यदि सारे शरीर में व्याप्त होती, तो शरीर के वढने के साथ उसको भी वढ़ाना पड़ता और शरीर के कटने के साथ उसे भी संकुचित होना पड़ता। अर्थात् उसकी दशा ठीक रवर या स्प्रिंग की भांति होती और बिना अनेक परमाणु, संघात के इस प्रकार का ह्रासविकास न हो सकता।

ज्ञानवान् तत्व संयुक्त परमाणुओं सेन हीं बन सकता और न अनेक अज्ञानी परमाणु एक जगह एकत्रित होकर परस्पर ज्ञानसंवाद ही जारी रख सकते हैं, इसलिए यह शक्ति रवर की तरह घटने बढने वाली और अनेक परमाणुओं के संयोग से वनी हुई वस्तु नहीं है, प्रत्युत स्वयंसिद्ध, असंयुक्त, और ज्ञानवान् वस्तु है। इसके अतिरिक्त वह शक्ति असंख्य भी प्रतीत होती है। क्योंकि एक मनुष्य का अनुभव समस्त मनुष्यों और प्राणियों में आप ही आप फैलता हुआ नहीं देखा जाता। कलकत्ते वाला मनुष्य जिस समय हावड़ा के पुल से जिस नाव को देख रहा है, उसी समय समस्त संसार के मनुष्य उसी नाव को नहीं देख रहे। इससे मालूम होता है कि प्रत्येक शरीर में एक अणु परिच्छिन्न और ज्ञानवान् स्वतन्त्र सत्ता विद्यमान है, जो अपने स्वभाव के अनुसार उत्तम अथवा निकृष्ट आचरण से सूचित होती है। इसी को लोग जीव, रूह और सोल के नाम से पुकारते हैं और यही सृष्टि का दूसरा कारण है, जो सृष्टि के इस व्यापक नियम से ही ज्ञात हो रहा है।

सृष्टि का तीसरा नियम यह है कि इस विस्तृत सृष्टि में जो कुछ कार्य हो रहा है, वह नियमित बुद्धिपूर्वक और आवश्यक है। सूर्य, चन्द्र और समस्त ग्रह उपग्रह अपनी अपनी नियत धुरी पर नियमित रूप से भ्रमण कर रहे है। पृथिवी अपनी दैनिक और वार्षिक गति के साथ अपनी नियत सीमा में घूम रही है। वर्षा, सर्दी और गर्मी नियत समय में होती है। मनुष्य और पशु पक्ष्यादि के शरीरों की बनावट, वृक्षों में फूलों और फलों की उत्पत्ति, बीज में वृक्ष और वृक्ष से बीज का नियम और प्रत्येक जाति की आयु और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भोगों की व्यवस्था आदि जितने इस सृष्टि के स्थूल-सूक्ष्म व्यवहार हैं, सबमें व्यवस्था, प्रबन्ध और नियम पाया जाता है। नियामक के नियम का सबसे बड़ा चमत्कार तो प्रत्येक प्राणी के शरीर की वृद्धि और ह्रास में दिखलाई पड़ता है। क्यों एक बालक नियत समय तक बढ़ता है और क्यों एक जवान धीरे-धीरे ह्रास की ओर वृद्धावस्था की ओर जाता है, इस बात को कोई नहीं कह सकता। यदि कोई कहे कि वृद्धि और ह्रास का कारण आहार आदि पोषक पदार्थ है, तो ठीक नहीं। क्योंकि हम रोज देखते हैं कि एक ही घर में, एक परिस्थिति में और एक ही आहार विहार के साथ रहते हुए भी छोटे-छोटे बच्चे बढ़ते जाते हैं और जवान वृद्ध होते जाते है तथा वृद्ध अधिक जर्जरित होते जाते हैं। इन प्रबल और चमत्कारिक नियमों से सूचित होता है कि इस सृष्टि के अन्दर एक अत्यन्त सूक्ष्म, सर्वव्यापक, परिपूर्ण और ज्ञान-रूपी चेतनशक्ति विद्यमान है जो अनन्त आकाश में फैले हुए असंख्य लोक-लोकान्तरों का भीतरी और बाहरी प्रबन्ध किये हुए है। क्योंकि नियम बिना नियामक के, नियामक बिना ज्ञान के और ज्ञान बिना ज्ञानी के ठहर नहीं सकता। पर हम संपूर्ण सृष्टि में नियमपूर्वक व्यवस्था देखते हैं, इसलिए सृष्टि का यह तीसरा कारण भी सृष्टि के नियमों से ही सिद्ध होता है। इसी को परमात्मा, ईश्वर, खुदा और गाड आदि कहते हैं। इस तरह से संसार के तीनों नियमों से तीनों कारणों का पता मिलता है। सृष्टि के ये तीनों कारण स्वयंसिद्ध और अनादि हैं, इसीलिये यह प्रवाह से अनादि सृष्टि भी बुद्धिपूर्वक नियमों में आबद्ध होकर कार्य कर रही है। क्योंकि जितने पदार्थ स्वयंसिद्ध, कारणरूप और स्वयंभू होते हैं, उन्हीं के गुण, कर्म, स्वभाव भी निश्चित होते हैं और उन्हीं गुणों से जो कार्य बनते हैं, वे नियमपूर्वक कार्य करते हैं। यह कार्यरूप सृष्टि प्रत्यक्ष ही सुव्यवस्थित, बुद्धिपूर्वक और नियमित कार्य कर रही है, इसलिए इसके तीनों कारणों के स्वयं सिद्ध होने में कुछ भी सन्देह नहीं रह जाता। इसलिए अब आगे इन कारणों से कार्य का वर्णन करते हैं।

कारणों से कार्य की उत्पति

उपयुक्त तीनों कारणों में से पहिला कारण जड़, परमाणु रूप और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नियम से परिवर्तित होने वाली प्रकृति है, दूसरा कारण असंख्य, परिच्छिन्न और चेतन जीव है और तीसरा कारण व्यापक परिपूर्ण और ज्ञानी परमात्मा है। इन तीनों में से प्रकृति और जीव इस अनन्त सृष्टि को परस्पर सम्बन्ध स्थापित करते हुए नियम में नहीं रख सकते। क्योंकि दोनों अणु, परिच्छिन्न और एकदेशी हैं। यद्यपि समस्त जीव ज्ञानवान् हैं, परन्तु अणु होने से उनमें ज्ञान भी अणुमात्र ही है, इसलिए इस अनन्त जगत् को वे सब मिलकर भी नियम में नहीं रख सकते। इसका नियामक तो परमात्मा ही हो सकता है, जो अपनी अनन्त सत्ता और अनन्त ज्ञान से सर्वत्र व्याप्त है। किन्तु प्रश्न यह है कि परमात्मा इस सृष्टि का नियमन क्यों करता है ?

हम लिख आये हैं कि इस सृष्टि के तीन कारणों में से एक कारण असंख्य अल्पज्ञ जीव भी हैं। ये जीव जब मनुष्य रूप होकर शरीरों को धारण करते हैं तो एक देशी होने के कारण अपने से भिन्न अन्य पदार्थों की प्राप्ति की इच्छा से सदैव कुछ न कुछ प्रयत्न किया करते हैं। इनके इस प्रयत्न से परस्पर संघर्ष उत्पन्न होता है और उस संघर्ष से बहुतों को महान् कष्ट होने लगता है। कभी-कभी तो इनमें इतने अधिक अत्याचारी मनुष्य उत्पन्न हो जाते हैं कि उनकी सम्मिलित क्रिया से संसार में बहुत बड़े-बड़े उथलपथल हो जाते हैं और सृष्टि में अभूतपूर्व अपवाद उत्पन्न हो जाते हैं। तथा अच्छे प्राणियों को घोर यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं। ऐसी दशा में अपनी उच्च सभ्यता, न्याय और दया से प्रेरित होकर परमात्मा सृष्टि नियमों की रक्षा करने के लिए और हानिकारकों से हानिवाहकों को बदला दिलाने के लिए विवश होता है। जिस प्रकार दो लड़ते हुए मनुष्यों में एक को अन्याय करते हुए देख कर एक भद्र पुरुष अन्याय करने वाले से अन्याय प्राप्त का प्रतिफल दिलाकर झगड़ा शान्त करने की कोशिश करता है, ठीक उसी प्रकार दया, धर्म और न्यायस्वरूप परमात्मा भी अत्याचारी जीवों को दण्ड देकर अर्थात् अत्याचार सहने वालों को प्रतिफल दिलाकर सृष्टि नियमों की रक्षा करता है। यह न्याय वह नाना प्रकार की योनियों को बनाकर करता है और एक योनि से दूसरी को लाभ पहुँचाता है। अर्थात् पूर्वजन्म का प्रतिफल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिलाता है। यही उसके नियामक बनने का कारण है।

इस पर कुछ लोग करते हैं कि जब यह मालूम होने पर कि अमुक समय में, अमुक स्थान में डाका पड़ने वाला है, साधारण पुलिस तुरन्त ही प्रबन्ध कर लेती है, तो भविष्य में होने वाले अत्याचारों का परमात्मा क्यों नहीं प्रबन्ध कर लेता? इसका उत्तर यही है कि मनुष्य की बुद्धि सदैव परिवर्तित होती रहती। चोर चोरी करने के लिए चलता है, पर कभी बीच ही से लौट आता है। ऐसी सूरत में यदि इरादा करते ही अथवा चोरी के लिए चलते ही सजा दे दी जाय तो अन्याय ही कहा जायेगा। क्योंकि इरादे की सजा नहीं होती। यदि करोड़ रुपये के दान का इरादा करे, तो क्या उसको दान का फल इतने ही से मिल जायेगा? कभी नहीं। इसलिए कर्म चुकने पर ही फल की व्यवस्था करना उचित है। रहा यह कि परमात्मा जीवों को बुरे कर्मों को चेष्टा से ही क्यों नही जुदा कर देता? तो इसका उत्तर स्पष्ट है कि प्रथम तो स्वाभाविक चेतन जीव ऐसे निश्चेष्ट हो नहीं सकते, दूसरे यदि परमेश्वर जीवों की वृत्तियों के साथ साथ उनको दबाता फिरे तो स्वयं वही महान् संकट में पड़ जाये, जिसे परमात्मा तो क्या कोई मूर्ख मनुष्य भी मन्जूर नहीं कर सकता। इसलिए कर्म के पूर्व ही फल दे देना या कर्म करने को ही रोकते फिरना युक्ति संगत नहीं है। युक्ति और अन्याय के अनुसार यही है कि जीव स्वतन्त्रता से कर्म करें और ईश्वर स्वतन्त्रता से उनका न्याय करे। यही आज तक होता आया है और यही संसार की उत्पत्ति का प्रधान कारण है और ईश्वर की सर्वत्र व्यापकता का पूर्ण प्रमाण है।

परमेश्वर की इस सर्वत्र व्यापकता पर कुछ लोग यह भी प्रश्न करते हैं कि जब परमात्मा इस अनन्त आकाश में फैले हुए असंख्य जीवों का न्याय करता है तो क्या वह अपनी लम्बाई चौड़ाई को जानता है? क्या वह जानता है मैं कहां तक फैला हुआ हूँ? इस प्रश्न का इतना ही उत्तर है कि जिस प्रकार जीव अत्यन्त छोटा है, पर अपनी छोटाई को ठीक ठीक नही जानता कि मैं कितना छोटा हूँ, उसी तरह परमात्मा बहुत बड़ा है, पर अपनी बड़ाई का अन्त वह भी नहीं जानता कि मैं कितना बड़ा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हूँ। क्योंकि अपने आपके जानने में सब अल्पज्ञ ही होते हैं। जैसे आंख अपने आपके देखने और जानने में असमर्थ है, उसी तरह जीव और परमेश्वर भी अपनी छोटाई और बड़ाई जानने में असमर्थ हैं इसलिए अपने आपकी पूरी मर्यादा का पूर्ण ज्ञान न होना अपने अभाव की दलील नहीं है। क्योंकि जब जीव अपनी छोटाई को न जानता हुआ भी है और अपने भाव को जानता है और जब आंख अपने आपको न देखती हुई भी है और अपने भाव को जानती है, तब परमात्मा भी अपनी अनन्तता को जानता हुआ भी है और अपने भाव को जानता है। तात्पर्य यह है कि जो चीज जैसी होती है, वह वैसी ही प्रतीत होती है जैसे जीव अत्यन्त छोटा है पर वह अपनी अत्यन्त छोटाई को नहीं जान सकता। यदि जान ले तो अत्यन्त छोटाई ही न रहे। इस तरह परमात्मा अनन्त है, यदि अनन्तता को जान ले तो उसकी अनन्तता ही न रहे, प्रत्युत सान्तता आ जाए। इसलिए अपने आपके पूर्ण ज्ञान के न होने से अपने आप में कोई अन्तर नहीं आ सकता। परमात्मा अनन्त है और अनन्तता से सर्वत्र व्यापक होकर सब जीवों की न्याय व्यवस्था करता है, करता रहा है और करता रहेगा। यही सृष्टि के कारणों और उनके नियमों का दिग्दर्शन है। ●

जो भी है हिन्दू का घर, गूंजे वहां वेद का स्वर

परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

(मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित)

लागत मूल्य 500 रु. । साथ में 251 रु. का बढ़िया वैदिक साहित्य (वैदिक सम्पत्ति, महाभारत एवं गीता हिन्दी भाष्य सहित और भी अन्य उपयोगी साहित्य) उपहार में प्राप्त करें।

साहित्य न लेना चाहें तो सम्पूर्ण वेदभाष्य 375 रुपये में प्राप्त करें :

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम,
डाकघर मुखमेलपुर, दिल्ली-110036

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हास्य व्यंग्यपूर्ण कहानी

वंश वृद्धि

—मुकेश कौशिक

मुरारी गट्टल और गोविंद खनाई। गांव में, अपने-अपने चारित्रिक गुणों के कारण दो प्रसिद्ध नाम। दोनों का आपस में कोई रिश्ता-नाता नहीं। एक-दूसरे के घर उठक-बैठक भी नहीं। विचार और गुणों में भी जमीन-आसमान का अन्तर। और शारीरिक समानता की तो बात ही छोड़ दो।

गोविंद नाई छः फीट लम्बा। सिर्फ छत्तीस का होने के बावजूद सिर की चांद दूर-दूर तक खाली—बिल्कुल चिकनी नहीं, बालों का हल्का रूँआ जमा है। कपड़े एकदम मेले। साईकिल जो सुधारता है। कपड़े मेले हो जाना उसकी मजबूरी है और उन्हें ढंग की जगह भी बदलकर न जाना उसका शोक बोलने में बिल्कुल गलसंडा। गालियां बकते समय तो वह अपनी औलाद को भी नहीं बख्शता। ऐसी-ऐसी बक जाता है जो सीधी उस पर ही चोट करती हों। कहेगा, "उल्लू के पट्ठे···हरामी की औलाद···साले तू पढ़-लिखकर बड़ा गट्टू तीर मारेगा जो तेरे बाप ने मार लिया···। हमारा सुसरा इंजीनियर और मनिस्टर तो बनने से रया। सुधारेगा वोई लोग्गों की साईकिलें ई।"

पर गाली कितना ही बकता हो, कामचोर नहीं है। पैसा कमाने की खातिर वह क्या-क्या नहीं करता। साईकिलें सुधारने और नाईपने में जिजमानी करने के अलावा पान-बीड़ी-सिगरेटों की दुकान भी घर में ही कर रखी है। ग्रामोफोन भी ला रखा है। शादी-ब्याह के दिनों में काफी कमाई कर लेता है। वैसे रिकार्ड़ बजाना उसका शौक भी है। बैटरियां चार्ज करने का चार्जर भी है। दो रुपए प्रति बैटरी इस तरह कमाता है।

और मुरारी गट्टल गोविंद नाई का एकदम उलट। लम्बाई कुल मिलाकर चार से आगे नहीं होगी। उसका सरनेम गट्टल भी इसी कारण पड़ा है। नहीं तो उसका असली नाम मुरारी सुनार हुआ करता है। जब मजाक में गांव का कोई उसे खुश करना चाहता है तो प्यार से मुरारी लाल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहकर पुकारते है। मुरारी फूलकर कुप्पा। लम्बी सांस मारकर जब वह मुस्कराता है चश्मा माथे पर और मूंछें दांत न होने के कारण, नाक से छू जाती है। पर खुश करने वाला करता मजाक में ही खुश, है। कोई गंभीरतापूर्वक उसे खुश करने की बात सोच ही नहीं सकता और कोई खुश करे भी क्यों ? जर, जोरू जमीन इन तीनों चीजों में से कोई भी उसके पास नहीं जो कोई हथियाने का बात सोचकर खुश करने की बात गंभीरता से सोचे। मुरारी को भी मालूम रहता है कि अगला अगर मुरारीलाल कह रहा है तो किसी आदर से नहीं, बल्कि अपने दिल बहलावे के लिए। वह इसी पर संतोष कर लेता है कि "चलो हफ्ते भर में कोई तो तमीज से बोला।" और कभी कभी तो वह तमीज से बोलने वाला भी धोखा कर जाता है। थोड़ी देर तक तो मुरारी लाल कह-कहकर खुश करता रहेगा, फिर "देख तो गट्टल सुनार का कैसाखुश हुआ", कहकर भागने का उपक्रम करता है। बस फिर क्या था ? मुरारी उसे ऐसी गालियां सुनाता है कि पूछो मत। मगर क्या ऐसा करके वह चिढ़ाने वाला की भावना का आदर नहीं करता ? करता है ? अगर वह गाली न दे तो चिढ़ाए ही कौन। इस बात को मुरारी भी जानता है। इसलिए गालियां देने में वह कंजूसी नहीं करता।

गोबिंद और मुरारी में समानता का थोडा सा पुट यहीं मिलता है। गालियां गोबिंद भी देता था और मुरारी भी। मगर गालियों की "आरिजनलिटी" गोबिंद नाई की गालियों में थी। बहुत सी तो ऐसी थीं जिनका प्रचलन गोविन्द ने ही किया। लेकिन उनका बेहतर इस्तेमाल वह नहीं कर पाता था।

... ...

मुझे गोबिंद के पास बैठने का शोक था। उसकी बातों का रस, मेरे मुंह लग गया था। साईकिलें सुधारता जाता और बातें करता जाता। पास गुजरने वाला कोई ही ऐसा होगा, जिससे वह कोई-न-कोई बात न करता हो। और नहीं तो व्यक्ति की व्यस्तता को देखकर कह देता, "आओ जी, बैठो···कहां चल दिये।" कोई बच्चा गुजरता तो कहता, "लाल्ला, तेरे पिता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जी ठीक हैं।"

और मुझे यह भी पता था कि जिन बच्चों, बड़ों, युवकों के वह इतने प्यार से हालचाल पूछ रहा है, उनके थोड़ी ही दूर जाते ही वह क्या-क्या उद्‌गार प्रगटेगा। कोई खादीधारी गुजरता तो कहता, "आओ नेत्ता जी! क्या कर रिया अपना राजीव। लौंड़े से सम्भल नई रया लगता देश।" कहता हुआ वह एक झटके से साईकिल का पहिया अलग कर देता। जवाब में नेता जी क्या कह रहे हैं, उसका उसे ख्याल नहीं होता था। नेता जी अपनी बात कहकर थोड़ा ही आगे बढते और वह शुरू हो जाता।

"सुसरे···नेत्ता बने फिरते हैं नेत्ता। सालों के घर में खाने कू कुछ नई और करेंगे नेतागिरी।"

उल्टे अगर कोई कालेज जाना वाला लड़का वहां से गुजरता तो बड़ी तमीज से कहता, "बाबूजी, चल दिये स्कूल। पढ़ाई-लिखाई तो ठीक चल रही है।" और वह थोड़ी ही दूर खिसकता कि गोबिंद की बौछार शुरू।

"यो सुसरा क्या चला है "बैल बाटम।" फिर जोर देकर कहता, "बैल बोटम।" पास बैठे व्यक्ति के हँसने का इंतजार करता और फिर आगे बोलने लगता, "अभी तो "गधा बाटम" भी आवेगा···जेब में एक धेल्ला नई होणे का···और पहनेगें हमारे सुसरे गधा बाटम।"

मुझे भी गोविंदा की इन बातों से डर लगता था। लगता कि हो न हो मेरे बारे में भी इसी तरह कहता हो। इसलिए जब मैं उधर से होकर गुजरता तो कम से कम फैशन में। मैंने कानों पर बाल रखे हुए थे लेकिन वहां से गुजरते समय अपने बाल में कानों से हटा लेता था। क्योंकि मैं कई बार गोबिंद के मुंह से ऐसे बालों वाले लड़के लिए उपदेश सुन चुका था। कहता, "लौंड़े-लौंडिया का फासला ही खत्म कर दिया इस फैसिन ने। हिप्पीकट बने फिरें···हिप्पीकट।

ये सारी ही बातें बहुत मनोरंजक होती थीं। पर एक बात और भी थी जिसे मैं मनोरंजन की हद मानता हूँ। पेट पकड़कर हंसता हूं वो बातें याद करके। और यह घटना एक बार नहीं, कई बार घटी। हर बार वैसी ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तें को गोबिंद ने ।

जब गोबिंद को मलेरिया आता था तभी वह ऐसी बातें करता था। रू-शुरू में जब मैंने उसे बुखार की हालत में सुना था तो मैं डर गया था गोविंद पागल हो गया है।

वह बेतहाशा बड़बड़ाहट घर के बाहर सुनाई दे रही थी। मैं अन्दर ही ला गया। उस गोविंद आंख मूंदे पड़ा था। मैंने उसके लड़के से पूछा कि ा हुआ तो वह अपने पिता के अंदाज में ही बोला था, "होणा क्या है बार चढ़ा पड़ा। बुखार उतर जागा तो ठीक हो ज्जांगे।"

मैंने माथे पर हाथ रखकर देखा। बुखार १०४ डिग्री से कम नहीं था। माथे पर हाथ रखते ही गोविंद की आंख खुल गई। बोला, "आ लाल्ला ।" मैंने पूछा, "तबीयत खराब है चचा।"

तो बड़े ही अंदाज में बोला, "तबीयत क्या भैया कुम्भकरण बना पड़ा । भूख लग रही है और म्हारा सुसरा कोई खाने कू कुछ दे ही थई रयां। ह रें, बुखार बिगड़ जागा। अब इससे ज्यादा क्या बिगड़ेगा।"

मुझे लग गया कि गोबिंद वास्तव में ही गफलत में है। मैंने सहानुभूति ताई, "दवाई लाकर दूँ चचा।"

"ना लाल्ला दवाई ना। बस इतना कर कि संजय की मां कू समझा दे। सके भेज्जे में भर कि जब कुम्भकरण कू भूख लगे थी तो क्या हाल होवे था"

फिर अचानक उठकर बैठ गया। बोला, "बेटे, तूने कुम्भकरण का नाम ो सुना कि नई। वो ओश रावण का छोटा भैया···बड़ाई मक्कार था। निया भर का एय्याश!"

अब मुझे उसकी बातों में मजा आने लगा था। मैंने और कुरेद दिया, एय्याश कैसे था चचा?"

"बस एय्याश!·· दुनिया भर का हरामखोर···। मुरारी गट्टल से भी यादा।"

"गट्टल से भी ज्यादा" मैंने आंख फैलाई। तो गोविंद और आगे बढ़ा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गया, "हां लाल्ला···कुछ पूछ मत। छः महीने सोना और छः महीने जाग
छः महीने भी कहां जागता था, बस उतनी देर कुई जितने देर खाना-पीना
हो।···और उठते ही हाय तोबा···जो सामने आया उसे खा गया···
लक्कड़-पत्थर सब हजम। तो इसी करके रावण पहले सेई इन्तजाम कर
लेता था।

"कैसा इन्तजाम ?" मैंने हुंकारा भरा।

"उसके जागने से पहले ही वो रोटी बनवानी शुरू कर देता था···
सोच रहा होगा कि कैसे तो बनती होगी उसकी रोटी और कैसे गूंथा जाता
होगा आटा।" उसने खुद ही प्रश्न किया। इस बात पर उसके लड़के
हंसी आ गई।

"हंस रिया दारी के···। बाप की सेवा तो करने से रया।" मैंने होंठ
पर उंगली रखकर सबको चुप रहने का इशारा किया।

गोविंद फिर शुरू हो गया।" हां, तो मैं कहां था···कुछ बात नई क
देती यो ओलाद···। तो मैं कह रिया था कि रोटी कैसे बनती थी। क
करते थे कि आटे की बोरी सिमेन्टेड तालाब में पलट देते थे। ए
नहीं, दसियों बोरी आटा। और पता है आटे में मुल्की कैसे मारते थे···
इतने सारे आटे कू मलना कोई मजाक बात थोड़ाई है। तो भैया राव
अपनी सेना के सारे हाथी उस आटा पड़े हुए तालाब में छोड़ देता था। ज
सौ-ड़ेढ़ सौ हाथियों ने आटे में करवट बदली कि आटा गूंदा गया। अब आ
रोटी बनाने की दिक्कत। पर रावण के पास सब चीजों का इन्तजाम था
म्हारे सुसर ने, ऐसे-ऐसे हजारों तन्दूर लगवा रखे थे जैसे कुम्हार मटके
पकाता है।"

बीच में मैं कुछ बोलने ही वाला था कि उसने चुप कर दिया। बोल
"और तुझे पता है लाल्ला उसके नाईयों की कितनी मुसीबत थी···
परेशान थे बेचारे। अच्छा हुआ मैं उस जमाने में पैदा न हुआ। चल मे
मां ने एक तो अच्छा काम करा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसीबत क्या थी उनकी ?" मैंने गोविंद की अपेक्षा के मुताबिक प्रश्न
या ।

"मुसीबत न होती तो और क्या होता । म्हारे सुसरे की दाढ़ी थोड़ाई दाढ़ा था दाढ़ा । छः महीने सोने के बाद उठता तो उसके थोबड़े पे झूंड़ के खड़े हो जाते थे । इस बीच बालक अगर उसकी दाढ़ी में घुस जाये तो ना मुश्किल पड़ता । पर नाई भी भौंत हुशियार थे । क्या करते थे कि मशीन बना रखी थी । ऐसी जैसी गेहूं काटने की मशीन-सी होती है··· -सी बस चार-पांच बार इधर-उधर मशीन घुमाई कि दाढ़ी सफा ··· । सबको ज्यादा दिक्कत आती थी उसकी नाक के अन्दर के बाल काटने नाक क्या कि पूरी गुफा समझ लो । तो नाई क्या करते कि घोड़ों पर र हुए और नाक वे अन्दर के घुस जाते । अब एक दिन क्या हुआ कि नाक के अन्दर घुसे हुए बाल काट रहे थे । अचानक कुम्भकरण को छींक गई । छींकते टैम उसे यह भी नईं याद रहा कि दस-बीस घोड़े और अन्दर हैं । छींका ऐसा कि पहाड़ हिल गया । अब सारे के सारे नाई घोड़ों त धेड़ देसी बाहर जाकर गिरे । नाई तो क्या बचते घोड़ों की भी हड्डी ली हाथ नहीं लगी ।"

मेरा हंसते-हंसते बुरा हाल था और गोविंद सब किस्सा ऐसे बखान रहा जैसे आंखें देखी कमेंट्री हो । बिल्कुल बगैर हंसे ।

उसका बोलना जारी रहा, "लाल्ला एक दिन और मरे थे दस नाई । वे क से नहीं, दम घुटने से मरे थे । उस दिन भी कम से कम पन्द्रह नाई ड़ों पर चढे हुए उसकी नाक के बाल काट रहे थे । कुम्भकरण को याद ं रही । घोड़ों के अन्दर दौड़ने से उसकी नाक में कुछ सुरसरी हुई तो पूछने के लिए रूमाल उठा लिया । रूमाल भी कितना बड़ा था कि कुछ ो मत । ऐसा था जैसा बीस चौब का शामियाना हो । बस जी, रूमाल या और नाक का पौरुवा भींच दिया । नाक के फाटक बन्द हो गए । तो तने के जितने नाई और घोड़े थे···सबके सब दम घुटकर मर गए अन्दर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही बड़ी मुश्किल से फिर उनकी लाश निकली।"

गोविंद का बोलना जारी रहता मगर उसे नींद आ गई। मुझे बहुत हुआ उसके सो जाने पर। सच इतना मजा किसी कामेडी फिल्म में आज नहीं आया जितना उस दिन आया था।

जिन दिनों में दिल्ली चला आया उस समय गोविंद काफी वुढ़िया था उसकी आवाज का तैंवर खत्म हो चुका था। चला फिरा नहीं ज था। वह शायद बकता भी हो, मगर समझ में कुछ नहीं आता था, वड़वड़ रहता था।

उसका लड़का संजय जवान हो चुका था। पढ़ाई बीच में छोड़नी थी उसे। साइकिलें सुधारने लगा था वह भी। अपने पिता का काम बढ़ाया। यहां तक कि गालियां भी वह अपने पिता की तरह ही वकने ल था। बल्कि और उससे अच्छी ही। कहता है, "ये हमारा बाप अगर होते ही चल बसा होता तो अच्छा था। धरती का बोझ हल्का हुआ हो कम से कम हम पढ़-लिखकर कुछ अच्छा काम तो कर लेते।"

मुझे दिल्ली आते समय संतोष था कि चलो गांव में एक और गो पल बढ़ रहा है। मगर दुःख था सो गट्टल सुनार का। उस समय वह में नहीं था। उसे झोपड़ी से निकाल दिया था सेठने। अदालत के च काटे, इधर-उधर मारा-मारा फिरा, पर एक न चली। रोजी-रोटी पह ही नहीं थी। घर भी छिन्न गया है तो वह गांव छोड़कर चला गया था। भीख मांग कर रोटी खाता और हरि की पोड़ी पर सो जाता था। फिर दिन जाड़े में शरीर ऐंठ गया उसका। चल वसा। दिल्ली आते समय दुख था कि गट्टल की कमी पूरी नहीं हो पाई।

लेकिन पिछले साल जो घटना घटी उसे देखकर मुझे लगा कि गट्टल उत्तराधिकारी होना ही नहीं चाहिए था। मैं सुबह-सुबह उठकर अ पलट रहा था कि नीचे से आवाज आई, "ये बच्चा तीन दिन से भूखा कोई भगवान का भगत सुनता हो तो कुछ दे। भगवान तुम्हारे बच्चे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुखी रखेगा। मेरे बच्चे को कुछ दो। यह मर जायेगा।" आवाज में भर्राहट और रूआंसापन था। ऐसा अक्सर होता रहता है हमारी कालोनी में, अगर उस दिन मुझे कुछ अजीब सा लगा। आवाज जानी-पहचानी सी लग रही थी। मैंने बालकनी से झांक कर देखा। लम्बी दाढ़ी वाला साधु मरियल से बच्चे को कंधे से लिपटाए चीख रहा है। मुझे बालकनी में खड़ा देख वह चिल्लाया, "बाबूजी ! ये बच्चा भूखा है। आना-चार आना, कुछ दे दो।"

आवाज फिर जानी पहचानी लगी। मेरा कौतुहल बढ़ गया। उस पर तरस भी आ गया था। सोचा पैसे नीचे उतर कर ही दूंगा। ठीक से देखकर मन का भ्रम भी दूर कर लूंगा।

नीचे उतर कर जब मैं उसके पास आया तो शक्ल देखते ही मैं अवाक् रह गया। मुरारी गट्टल था वह। वह मुझे नहीं पहचान पाया था। उसने मेरी ओर हाथ फैला दिये। पहले सोचा, पांच रुपए देकर में अपना फर्ज पूरा कर दूं, मुसीबत गले न लगाऊं, पर मुझसे रहा नहीं गया। मैंने कहा, "गट्टल चाचा आप।" तो वह सकपका गया। गले से कुछ कहना चाह रहा था, मगर बोल नहीं पाया वह। फिर गोर से देखकर बोला, "मैं पहचाना नहीं बेटे।"

"मैं हूँ चाचा सूरजभान···सरजू कहते थे मुझे आप।"

"अच्छा···अच्चा, ठाकुर साहब का बेटा है। बेटे तू यहां कहां है।"

"चलो चाचा ऊपर बैठकर बात करेंगे," कहकर मैं गट्टल का हाथ थामे हुए ऊपर ले आया। मुझे बहुत कुछ पूछना था अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए। पहले चाय बनाई उसके लिए मैंने। गिलास भर चाय पीता था। मुझे याद था कि हमारे घर भी वह गिलास भर चाय से नहीं मांनता था।

उसने चाय सुड़कनी शुरू कर दी तो मैंने घुमाफिरा कर पूछा "चाचा ! हमारे गांव में तो अफवा उड़ी थी कि तुम चल बसे हो।"

"मर जाता तो अच्छा होता। पर मरा नहीं। एक बला यह हाथ लग गई। नदी किनारे पड़ा था। मैंने उठा लिया। अब इसके लिए भी दूध-पानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का इन्तजाम करना होता। मैं तो भूखा भी रह लूं। पर यह तो ज
लेता है।"

मेरी बच्चे पर निगाह गई। एकदम मरियल सा बेजान। आंखें
हुई। पेट चिपका हुआ। मैंने उसे भी दूध गर्म करके दिया। गट्टल को
में रोटी भी सेंककर खिलाई। खाने के दौरान ही गांव के बारे में बहुत
पूछता रहा था वह।

मैंने पूछा था, "अब क्या करने का इरादा है चाचा।"

"कुछ करने की अब हिम्मत ही कहां है", वह बोला। "सोचत
गांव चला जाऊँ। गांव के कुछ तो शरम करेंगे ही।"

मैंने भी हां में हां मिला दी। जब वह चलने लगा तो उसकी हथेली
बीस का नोट भी रख दिया मैंने। गट्टल ने कृतज्ञतापूर्ण नजरों से
ओर देखा था।

और वह बच्चा ? अब उसमें कुछ जान न थी। वह भी मेरी ओर
रहा था। दो का नोट मैंने उसके हाथ में भी थमा दिया। गट्टल को
तक छोड़कर ऊपर आ गया। मगर उस बच्चे का चेहरा मेरी निगाह
नहीं हट रहा था। चार साल का होकर भी वह कद में काफी
लग रहा था। मुझे ग्लानि हो आई। तो क्या एक और गट्टल हमारे
पहुँच रहा है। सोचकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए। पर इसी समय गोवि
लड़के संजय की तसवीर मेरे दिमाग में उभरी। लगा जैसे उसे मलेरिया
है और वह मेरे भतीजे को कुम्भकरण की कथा सुना रहा है। लम्बी-
कथा। और भतीजा कुणाल बेतहाशा हंस रहा है—मेरी तरह।

जानने योग्य बातें

★ रेडक्रास संस्था की स्थापना भारत में १९२० में हुई।

★ २६ जनवरी १९६५ से हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा हो गई है।

★ भारत में ब्रिटिश राज्य का अन्तिम डाक टिकिट १९४६ में जारी किया गया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महिलाएं अपनी शक्ति को पहचानें

—मृदुला सिन्हा

आए दिन समाज में स्त्री एवं पुरुष की स्थिति को लेकर हुई चर्चाओं में कुछ चिन्तक पुरुष की प्रधानता पर बल देने लगते हैं तो कुछ स्त्री ी। स्त्रियों पर पुरुषों की ज्यादतियों की चर्चा अधिक होने लगती है। ारतीय समाज में नारी को उसके व्यक्तिगत, सामाजिक एवं कानूनी अधि-ार दिलाने के पक्ष पर स्त्री-पुरुष, इस बात पर बल देने लगते हैं कि सदियों पुरुष-समाज ने नारी को गुलाम बनाकर, उस पर तरह-तरह के अत्याचार िये हैं। नारी को दूसरे दर्जे की नागरिकता प्राप्त रही है। नारी-स्वतन्त्रता ये हिमायती स्त्री-पुरुष इतिहास-पुराण के श्लोकों में वर्णित भाव की दुहाई कर कहते हैं—"नारी की तीनों अवस्थाएं पुरुष के अधीन मानी गई हैं। ीनों अवस्थाओं में उसे पुरुष की गुलामी निभानी है। वह कभी स्वतंत्र कर नहीं जी सकती।"

ुरुष की सतत संबल—

किन्तु समाज की वस्तु स्थिति पर दृष्टिपात करने पर बात उल्टी दिखती । ऐसा जान पड़ता है कि पुरुष बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक स्त्रियों र आश्रित रहता है। नारी का बड़ा या छोटा रूप हो, पुरुष की अपेक्षा धिक परिपक्व, व्यवहार कुशल होता है। अन्यान्य सामाजिक बन्धनों के लस्वरूप भारतीय समाज में लड़की का जन्म सुखकर नहीं लगता, पर लड़की ों-ज्यों बड़ी होने लगती है, घर के काम में हाथ बंटाने लगती है। खास कर ाईयों एवं पिता की सेवा तो उत्साह पूर्वक करेगी जिसका पिता, जो पहले पने हर काम के लिए पत्नी पर आश्रित रहता था, अब बेटी पर हो जाता । बेटी उसकी छोटी-मोटी जरुरतें पूरी करती रहती है। इतना ही नहीं, पने से एक दो साल छोटे अथवा बड़े भाईयों का भी ख्याल रखेगी। उसके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाई अपने कामों के लिए अपनी बहन पर आश्रित हो जाते हैं।

युवावस्था में पुरुष अपनी पत्नी पर पूर्णरूपेण आश्रित हो जाता है। लगता है कि यौवनावस्था में स्त्री-पुरुष का आकर्षण मात्र योन रुझा उत्पन्न होता है लेकिन स्त्री-पुरुष सम्बन्धों पर गहराई से विचार कर स्थिति कुछ और ही मिलेगी। पुरुष अपने सारे जरूरत के कामों के तो स्त्री पर आश्रित रहता ही है, उसकी भावनाओं एवं संवेगों को भी का ही सहारा लेना पड़ता है। स्त्रियों की भावनाएं अधिक दृढ़ हो पुरुष उनकी अपेक्षा दयालु एवं भावुक होते हैं। जो पुरुष अपनी पत्न अवहेलना करते हैं उनकी भावनाओं या संवेगों को भी कहीं न कहीं अन्य स्त्री का सहारा मिलता है।

दर असल सृष्टिकर्त्ता ने पुरुष एवं प्रकृति के निर्माण में स्त्री को मना, मोहिनी, कार्य कुशल बना कर जगत निर्माण का पूर्ण दायित्व दिया। यह पुरुष को जन्म देने वाली ही नहीं, वरन् गर्भावस्था से लेकर वस्था तक उसकी सारी सुप्त भावनाओं को जगाकर उसे क्रियाशील रख संसार के बड़े से बड़े कार्य करवा लेती है। नन्हें से रोते हुए बालक को पुरुष का स्पर्श चुप नहीं करा पाता। स्त्री (मां) के एक स्पर्श से अपना बंद कर गाढ़ी नींद लेने वाला बालक पूर्ण पुरुष का बीज रूप ही तो वृद्धावस्था तक उसकी यही गति रहती है।

वृद्धावस्था में पुरुष पूर्णरूपेण अपनी पत्नी अथवा बेटी-बहू पर अ हो जाता है। वृद्ध दम्पतियों को देख कर मुझे आश्चर्य होता रहा है कि ही उम्र के दोनों स्त्री-पुरुष हैं, दोनों को वृद्धावस्था की समान लाचार फिर भी वृद्धा अपने वृद्ध पति की सेवा में तत्पर है। उसकी इच्छाओं आवश्यकताओं की चिन्ता करती रहती है। दूसरी ओर पुरुष बिल्कुल अ हो जाता है। बिहार के लेखक एवं सामाजवादी नेता स्वर्गीय रामवृक्ष बे जी की पत्नी को मैंने एक बार अपने घर बुलाया। बोली कैसे कहीं जा एक पल के लिए भी मुझे अलग नहीं होने देते। चिल्लाने लगते हैं— गई, कहां गई?" मुझे तो इन्हें एक बच्चे की तरह पालना पड़ रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभी भारतीय वृद्धों की यही गति होती है जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपना पौरूष दिखाने वाला पुरुष भी बुढ़ापे में बच्चा बन जाता है—पूर्णरूपेण स्त्री पर आश्रित।

यह मनोवैज्ञानिक खोज है कि स्त्रियां मानसिक, शारीरिक एवं सांवेगिक शक्ति से अपने हम उम्र पुरुषों की अपेक्षा अधिक परिपक्व होती है। कष्ट, सहिष्णुता, व्यक्तित्व की दृढ़ता, शारीरिक सहनशीलता और कार्य करने की विशेष क्षमता उनमें कूट-कूट कर भरी होती है। अपनी इन क्षमताओं के आधार पर ही वह दूसरों की सेवा भी कर सकती हैं।

अक्सर देखा जाता है कि पुरुष अपनी तीनों अवस्थाओं में बहन, मां, प्रेमिका, पत्नी अथवा बहू-बेटी के हाथों के एक स्पर्श का भूखा रहता है। स्त्री के एक स्पर्श से उसे राहत और पुनः अपना पौरूष दिखाने की शक्ति मिलती है। बाह्य जगत के कार्यकलापों से उत्पन्न मानसिक खिन्नता, तनाव सांवेगिक बेचैनी एवं शारीरिक थकान स्त्री के एक स्पर्श से दूर हो जाती है।

कभी-कभी ऐसा लगता है कि समाज निर्माण के प्रारम्भ में पुरुष के अन्दर स्त्री पर अपनी निर्भरता का अपरोक्ष भाव ही कालांतर में स्त्री को अपने अधीन रखने का भाव बन कर रह गया। स्त्री को उसके तीनों अवस्थाओं में अपने अधीन रखने के पीछे निश्चय ही उसकी अपनी कमजोरी रही है, स्त्री की नहीं। स्त्री तो उसके साथ-साथ अपने को भी सम्भालने की पूर्ण क्षमता रखती है। परिवार की गाड़ी चलाने के लिए अर्थार्जन मात्र एक पक्ष है, जो पुरुष करता रहा है। (अब तो स्त्रियां भी अर्थार्जन करने लगी हैं। परिवार के समुचित विकास में अर्थ का सही उपयोग, हर सदस्य को एकसूत्र में बाँधने और उन्हें सही दिशा देने में स्त्रियों का योगदान रहा है।

समान नहीं, सम्मानीय—

विदेशी नारे की चकाचौंध में भारत में भी नारी स्वातंत्र्य की हामी भरते महिला समाज को स्त्री की उपादेयता और उसका महत्व तो समझना ही चाहिए। समाज रूपी अखाड़े में स्त्री को पुरुष के समक्ष खड़ा कर लड़ाई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लड़ने योग्य बनने की आवश्यकता नहीं। आवश्यक तो पुरुष समाज को उनके जीवन में स्त्रियों की उपयोगिता की (जो वह उपयोग करता आया है) अनुभूति भर कराने की है। आवश्यकता है, नारी अपनी क्षमताओं को बढ़ाकर पुरुष को पूरक बने, प्रतिद्वन्द्वी नहीं। समाज के बदलते मूल्यों के साथ नारी भी अपनी अर्थवेत्ता जोड़ने की पहल करे। वह तो पुरुष की सृष्टि कर उसके कर्त्तव्य की प्रेरणादायी शक्ति रही है। समाज में उसका हाथ ऊपर रहा है। पुरुष के समक्ष आने की आवश्यकता क्यों पड़े ?

महात्मा गांधी का विचार था—"स्त्री की अन्तःप्रज्ञा पुरुष की अपेक्षा अधिक बलवान है। नौ महीने तक अपने उदर में बच्चे को रखने की सामर्थ्य और फिर वर्षों तक उसके पालन-पोषण में कष्ट सहने की परीक्षा में डाल प्रकृति ने उसे सुदृढ़, धैर्यवान और सहनशील बना दिया है। माता के रूप में उसकी शक्ति अजेय है, सर्वोपरि है। उसकी कोख में जन्म लेने वाला पुरुष उसके मुकाबले में कैसे ठहर सकता है ?" भारतीय नारी के अन्दर की इस शक्ति को जगा कर उसका आवाहन कर गांधी जी ने शिक्षित-अशिक्षित सभी स्त्रियों को पुरुषों के कंधे से कंधा मिला कर स्वाधीनता संग्राम में लड़ने के लिए प्रेरित किया था।

★ स्वतन्त्र भारत के विशेष तीन डाक टिकिट नवम्बर १९४७ में जारी किये गये।

★ विश्व में सबसे अधिक वर्षा भारत के आसाम प्रदेश में चेरापुंजी में होती है।

★ विश्व में सबसे ऊंचा दरवाजा भारत में फतहपुर का है।

★ विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा भारत में सुन्दरवन (८००० वर्ग मील का) है

★ विश्व का सबसे बड़ा प्लेटफार्म भारत में सोनपुर का है, जिसकी लम्बाई (२४१५ फीट) है।

★ विश्व में सबसे लम्बा बरामदा भारत में रामेश्वर का (४००० फीट) से भी अधिक है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अच्छे स्वास्थ्य के लिए भोजन में सुधार

स्वस्थ मन स्वस्थ शरीर में निवास करता है और स्वस्थ शरीर का राज है पौष्टिक व संतुलित आहार। ये बातें हम बरसों से अपने बुजर्गों से सुनते आ रहे हैं। सन्तुलित आहार का महत्व संयुक्त राज्य अमेरिका सीनेट की पोषण समिति ने भी महसूस किया और १९७० में पोषण समिति इस निष्कर्ष पर पहुँची कि १० में से ६ व्यक्तियों की मृत्यु का कारण हृदय-रोग, कैंसर और अन्य दौरे हैं। इन सबका सम्बन्ध भोजन से ही है। संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने अपने नागरिकों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए भोजन संबंधी हिदायतें जारी कीं। इन हिदायतों में बताया गया कि किस किस प्रकार का भोजन खाना चाहिए।

सरकारी हिदायतों का महत्व समझते हुए आजकल औसत अमेरिकी अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। वे अब सिगरेट और शराब कम पीने लगे हैं। व्यायाम ज्यादा करते हैं, खान-पान का बहुत ध्यान रखते हैं और केवल स्वास्थ्यवर्द्धक खाद्य पदार्थ ही खाते हैं। वैसे तो खाना प्रत्येक व्यक्ति अपना मन पसन्द ही खाता है, परन्तु स्वास्थ्य के पीछे बढ़ती सजगता से अमेरिकियों के खानपान में भारी परिवर्तन हो रहा है।

परम्परागत अमेरिकी भोजन मांस और आलू का स्थान अब ताजी सब्जियां फल और सलाद ले रहे हैं। पशुओं की चर्बी की खपत अब बहुत कम होती जा रही है। पशुओं की चर्बी से हृदय रोग और बड़ी आन्त व छाती कैंसर की बहुत संभावना है। मक्खन और सुअर की चर्बी के स्थान पर अब वनस्पति तेलों और माग्रेन (वनस्पति चर्बी से बनाया गया मक्खन की तरह का तेल) प्रयोग किया जाने लगा हैं। दूध में भी वसा बहुत कम पाया जाता है। प्रोटीन पूर्ण मात्रा में प्राप्त करने के लिये मछली और मुर्गी बहुत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्यादा खाई जाती हैं।

उच्च रक्त चाप से वचने के लिए भोजन में नमक का प्रयोग अब बहुत कम या न के बराबर है, जबकि औसत अमेरिकी पहले आवश्यकता से १० या २० गुणा अधिक नमक खाते थे अब वे इस विषय में बहुत सजग हैं और प्रत्येक खाद्य पदार्थ में नमक का प्रयोग कम कर दिया है। उच्च रक्तचाप कम करने का एक अन्य तरीका है भोजन में पोषक तत्वों की वृद्धि। न्यूयार्क विश्वविद्यालय के मेडिकल प्रोफेसर तथा सरकारी भोजन पथ प्रदर्शिका के सदस्य, डॉ. राबर्ट इ. ओलसन ने सुझाव दिया है कि अमेरिकियों को कैल्शियम से भरपूर भोजन खाना चाहिए।

यद्यपि चीनी से कोई भयंकर रोग लगने की सम्भावना नहीं है फिर भी अधिक मात्रा में चीनी और मिठाइयां खाने से मोटापे और दंतक्षय की संभावना तो रहती ही है। इसलिए आजकल अमेरिका में चीनी की मात्रा कम की जा रही है। कार्बोहाइड्रेट्स वाले खाद्य पदार्थ, साबूत दालें, आलू और चावल की मात्रा भी कम कर दी गई है। वैसे तो यह भोजन विटामिनों, खनिजों व अन्य तत्वों से भरपूर होता है लेकिन अन्त का कैंसर और आन्त संबंधी अन्य बीमारियों से बचने के लिए इनकी मात्रा कम कर दी जाए तो बेहतर होगा।

शराब वैसे खाद्य पदार्थ तो नहीं है परन्तु अमेरिकी भोजन में इसकी विवादस्पद भूमिका रही है। यद्यपि ऐसा समझा जाता है एक या दो औंस शराब पीने से हृदय रोग नहीं होते परन्तु इसके हानिकारक प्रभावों के प्रमाण ज्यादा पाए जाते हैं। धूम्रपान और शराब दोनों से मुंह, गले, फेफड़े और भोजन नली में कैंसर हो सकता हैं। गर्भावस्था में इन दोनों का सेवन करने से अपंग-शिशु पैदा हो सकता है। उपर्युक्त भयंकर परिणामों को देखते हुए अमेरिकियों ने व्हिस्की, जिन, रम और वोडका जैसी शराबों का प्रयोग कम करके बीयर या अलकोहल रहित पेय पीना शुरू कर दिया है।

आम व्यक्ति या गृहणियां तो खान-पान के तरीके बदल ही रही है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रेस्टोरेंट भी अब अपने मीनू में भारी परिवर्तन कर रहे हैं। रेस्टोरेंट में चर्बी नमक व कैलॉरी रहित भोजन बनाया जाता है। सलाद में ताजी हरी सब्जियां, कच्चे फल और सब्जियां ज्यादा मात्रा में हैं।

चिकित्सकों की सलाह के अनुसार 'पौष्टिक भोजन ही स्वस्थ शरीर का राज है' इसी बात को ध्यान में रखकर आज पूरे अमेरिका में खाने-पीने में बहुत सतर्कता और सावधानी बरती जा रही है। (महिला भास्कर से साभार)

'नकली सिखों' का गिरोह राजधानी में

—शिवकुमार गोयल

दिल्ली में कुख्यात आतंकवादी पम्मी की गिरफ्तारी तथा आधुनिक शस्त्रास्त्रों का जखीरा पकड़े जाने के बाद ऐसे सुराग हाथ लगे हैं कि पाकिस्तान में प्रशिक्षित नकली सिखों का गिरोह, राजधानी दिल्ली में पहुंच कर किसी बड़ी वारदात करने की फिराक में है।

कुछ विदेशी पत्रकार भी भारत विरोधी तत्वों को प्रोत्साहित करने में सक्रिय हैं। ये पंजाब के आतंकवादियों के इण्टरव्यू तथा उनकी छवि बनाने वाले वक्तव्य प्रसारित कर उन्हें प्रोत्साहित कर रहे है। भारत सरकार की उदार नीति के कारण उन्हें ऐसा करने की छूट मिली हुई है।

गृह मंत्रालय को गुप्तचर विभाग ने यह रिपोर्ट भी दी है कि कुछ धार्मिक सम्प्रदायों की आड़ में भारत विरोधी तत्व भारत में घुसपैठ करने में सफल हो चुके हैं। ये तत्व धर्म गुरुओं के शिष्यों का रूप धारण करके भारत पहुंच जाते हैं तथा अन्दर ही अन्दर जासूसी जैसे कार्य में लग जाते हैं।

गृह मंषालय जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी की भूमिका के प्रति भी चिन्तित है जो कभी पाकिस्तान जाकर भारत विरोधी वक्तव्य देते हैं तो कभी जम्मू-कश्मीर पहुंच कर भारत सरकार के विरुद्ध विषवमन कर भारत विरोधी तत्वों के हाथ मजबूत करते रहे हैं।

गृह मंत्रालय इमाम के कश्मीर में दिये गये भाषाओं की जांच करवा रहा है। इस बात की भी जांच की जा रही है कि इमाम बुखारी ने पंजाब के आतंकवादी तत्वों से भी पिछले दिनों कश्मीर में गुप्त भेंट की थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आप बच्चों की हरकतों से परेशान रहते हैं

—अश्विनी केशरवानी

गत दिवस जब मैं कालेज से घर लौटा और चाय की चुस्की ले रहा था कि तभी तृप्ति के अचानक रोने की आवाज आई। मैं दौड़कर कमरे में गया। वहां तृप्ति और टीसू आंपस में लड़ रहे थे। टीसू,तृप्ति के बाल पकड़कर खींच रहा था और तृप्ति रोये जा रही थी। मैंने दोनों बच्चों को लड़ने से मना किया और तृप्ति के बाल छुड़वा दिया। फिर तो टीसू बिफर गया और रैक में रखी पुस्तक को फेंकने लगा और पेपर को फाड़ने लगा। मुझे गुस्सा आ गया और न चाहते हुए भी मेरे मुंह से निकल गया—"बेवकूफ ऐसी हरकतें क्यों करता है। अब पुस्तक को फाड़ देगा तो मैं क्या पढ़ूंगा…।" मैं अवाक रह गया जब दो साल के टीसू को कहते सुना—"बेवकूफ कहते हो और कुछ नहीं आता…?"

मुझे दो दिन पहले ही एक घटना याद आ गई जिसमें मेरे एक मित्र ने मेरे बेवकूफ कहने पर उक्त बात कही थी। तृप्ति टीसू वहीं खेल रहे थे। उनके इस प्रकार नकल करने से मुझे काफी सतर्क रहने की आवश्यकता पड़ी। ऐसे कितने लोग होंगे, जो बच्चों की इस प्रकार किसी के नकल करने से सतर्क हो जाते हैं? अधिकांश बच्चे अपने मां-बाप, भाई-बहन और टीचर की नकल करते हैं।

शारीरिक और मानसिक विकास की दृष्टि से बच्चे की पहले पांच वर्षों में अपने माता-पिता और परिवार के दूसरे सदस्यों के सक्रिय सहयोग और सही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। यह स्वाभाविक भी है कि माता-पिता अपने बच्चे को प्रसन्न क्रियाशील, समझदार और समृद्धिशाली व्यक्तियों के रूप में पनपता हुआ देखना चाहें, किन्तु अधिकांश माता-पिता बच्चे की प्रतिक्रिया और उसमें उनके सहयोग से अनभिज्ञ होते तथा कार्य व्यस्तता के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कारण समुचित ध्यान नहीं दे पाते, आज जिन परिस्थितियों में वे रह कर जी रहे हैं, वे उससे बहुत भिन्न है, जिसमें उनके माता-पिता का पालन-पोषण हुआ था। आइये ! बच्चों के विकास की आवश्यकताओं और हमारे कर्त्तव्यों के ऊपर विचार करें।

बच्चे दो वर्ष की उम्र से चलना और बोलना प्रारम्भ कर देते हैं। इस से ही अपने चारों ओर की वस्तुओं और व्यक्तियों के बारे में बच्चे की उत्सुकता बढ़ जाती है। वह कूदता, पंजों के बल खड़ा होता, चिल्लाता और कागज फाड़ता है। इस तरह की हरकतें करके अपनी दक्षता का विकास करने का प्रयास करता है। वह कुछ शब्दों का उच्चारण करने का प्रयास करता है। उनका असंबद्ध रूप से बोलना बड़ा अच्छा लगता है। उसे अपने माता-पिता और अन्य लोगों की स्नेहमय सद्भावना और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। जिस घर में प्रगतिशीलता नहीं होती, वहां बच्चों का विकास सही ढंग से नहीं हो पाता।

यदि बच्चा जल्दी-जल्दी सीखने लगे तो माता-पिता को अत्यधिक खुश नहीं होना चाहिए और यदि उसे सीखने में देर लगे तो अत्यधिक चिंतित नहीं होना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं का विकास भिन्न गति से विभिन्न क्रम में होता है। अगर बच्चा असामान्य व्यवहार करने लगे तो उसके हाथ कठोरता से व्यवहार न करके नरमी से पेश आए।

दो और तीन वर्षों के आयु के बच्चे अपने कपड़े खुद पहनने और उतारने लगते हैं। इस कार्य से वह खुश होता है। माता-पिता को चाहिए कि बच्चों की छोटी-मोटी गलतियों का ध्यान न दें बल्कि बच्चों की उपलब्धियों के लिए उन्हें शाबासी दें और उसे अपनी गलतियों को सुधारने की उचित सलाह दें तथा उसकी सहायता करें। माता-पिता की सहायता और मार्गदर्शन के फलस्वरूप बच्चा कठिन समस्याओं को भी सहज रूप में लेने का प्रयास करेगा। इस अवस्था में बच्चा घर में चारों ओर घूमता और उछलता है। अतः खतरनाक चीजों और शीघ्र टूटने वाली सामग्रियों को ऐसे स्थान पर रखें जहां बच्चों की पहुंच न हो अन्यथा अहित होने की संभावना बन जाती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चार से छ: वर्ष के बच्चों में कल्पना शक्ति का विकास होने लगता है। वह माता-पिता का, दूसरे लोगों की बातों का नकल करता है। इसमें कुछ बातें अच्छी होती हैं तथा कुछ अनुचित। उनकी उचित और अच्छी बातों की ओर ज्यादा ध्यान दे। आनंददायक प्रगति की इस अवधि में बच्चा आत्म निर्भरता की ओर बढ़ने लगता है। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चे को आत्म निर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित करें। कभी-कभी बच्चों में व्यर्थ का भय उत्पन्न हो जाता है, जिसे दूर किया जाना अति आवश्यक है।

छह से आठ वर्ष का बच्चा बड़ी सरलता से अपने कार्य करने लगता है। वह ठीक ढंग से बातें करने लगता है। और जो कुछ वह करता है, उसे बताता जाता हैं। वह अपनी जिज्ञासा की संतुष्टि के लिए अनेक सवाल करने लगता है। वह अपने अच्छे कार्यों पर गर्व का अनुभव करता हैं। वह अपनी मित्रता का विस्तार करने लगता है। मगर वह अस्थायी होता है, वह अनेक बातें सीखने का प्रयास करता है। वह न केवल बड़ों के हाव-भाव और क्रिया-कलापों की नकल करता है। बल्कि जीवन के प्रति उनके रवैयों को भी अपनाने लगता है। यहां माता-पिता को चाहिए कि अपना व्यवहार शिष्ट व मधुर रखें। यही अवस्था बच्चों में शारीरिक व मानसिक विकास की नींव डालने की अवस्था होती है।

बच्चों के समुचित शारीरिक, मानसिकऔर व्यावहारिक ज्ञान के विकास के लिए ऐसे संतुलित भोजन की आवश्यकता होती है जो विटामिन से भरपूर हो। बच्चा इसे सरलता से खायें। इसे खेल न समझें इसका ध्यान रखें। बहुत आवश्यक नही हैं कि बच्चा प्रतिदिन थका होने पर भी पूरा भोजन करे।

बच्चों के लिए नियमित नींद लेना बहुत ज़रूरी है। रात्रि में बच्चे को जल्दी सुलाएं। इस बात का ध्यान रखें कि सोते समय बच्चे को पानी न पिलाएं क्योंकि इससे बिस्तर में पेशाब करने की पूरी सम्भावना है।

सुखद पारिवारिक वातावरण तथा स्नेहमय व्यवहार अन्य किसी भी सुविधा की अपेक्षा सब से अधिक वांछनीय है। बच्चों को भरपूर प्यार दें, उसका खूब ध्यान रखें, परन्तु उसके साथ अनुचित लाड़-प्यार न करें। बच्चा आप की भावनाओं को समझता है, अतः ऐसी बातें अथवा व्यवहार न करे जिससे बच्चे के मन-मस्तिष्क में गलत प्रभाव पड़े, इसका ख्याल रखें। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गंध-पहचान का जीवन में उपयोग

—महावीर दत्त गिरि

औद्योगिक कारखानों में विभिन्न रसायनों की तेज गंध के बीच वहां के कर्मचारी बिना किसी परेशानी के कैसे रोज खाना खा लेते हैं ? कमरे में बारीक से बारीक "लीक होती गैस का अहसास हमें शीघ्र ही कैसे हो जाता है ? किसी चीज की गंध पाकर हमें कैसे वर्षों पुरानी बात याद आ जाती है ? धूम्रपान का कमरे की वायु पर क्या प्रभाव होता है ? क्या महिलाओं में घ्राणेन्द्रिय अथवा सूंघने की क्षमता पुरुषों से ज्लादा पैनी होती है ? मामूली जुकाम से भोजन का स्वाद और गंध क्यों नहीं मिलता ?

इन प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में "मनुष्य में गंध की पहचान की क्षमता" का वैज्ञानक अध्ययन कर रहे हैं। यद्यपि जीभ (स्वाद इन्द्रिय) की अपेक्षा नाक बहुत जधिक संवेदनशील इन्द्रिय हैं, किन्तु शोध के मामले में इस पर कम ही ध्यान दिया जाता रहा है।

सभी प्रकार की गंधों की सूची बनाने के लिए प्रयत्नशील वैज्ञानिक इन प्रश्नों का भी अध्ययन कर रहे हैं कि लोग विभिन्न प्रकार की गंघ को कैसे अनुभव कर लेते हैं और तद्नुरूप प्रतिक्रिया करते हैं ? हानिकारक गंध के प्रभाव से मुक्त रहने के लिए क्या किया जा सकता है ? और घ्राणेन्द्रिय के कमजोर हो जाने अथवा सूंघने की क्षमता समाप्त हो जाने के क्या कारण हैं।

गंध क्षमता और योन भेद—

येल विश्वविद्यालय के डा० विलितम केन ने एक शोधपत्र में कहा है कि व्यक्ति जितना जानता है उससे कहीं ज्यादा उसकी नाक अनुभव कर सकती है। उनके अध्ययन के अनुसार यह आम धारणा गलत है कि महिलाओं में गंध पहचाने की क्षमता अधिक होती है। प्रसाधन सामग्री के उपयोग, सजने-संवरने, भोजन और तरह-तरह के व्यंजन बनाने तथा अन्य घरेलू कामों में महिलाओं का समय अधिक लगता है जिसके दौरान उन्हें विभिन्न प्रकार की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गंध का अनुभव नियमित होता रहता है। इसलिए वे अधिक प्रकार की गंध पहचान सकती हैं। पुरुषों के साथ ऐसा नहीं होता, क्योंकि उनका अधिक समय एक प्रकार की वायु वाले दफ्तरों अथवा कारखानों में अधिक व्यतीत होता है।

सूंघने का जटिल तंत्र—

कुछ व्यक्तियों को किन्हीं प्रकार विशेष की गंध का अनुभव नहीं होता इससे उनकी घ्राणेंन्द्रिय में असामान्य विरुपता अथवा गड़बड़ी का पता चलता है। नाक में इस गड़बड़ी का पता लगने पर ब्रैन ट्यूमर, सिर के अन्दर पनप रहे घाव, मिरगी तथा कई रोगों के इलाज में सहायता मिलती हैं।

चिकित्सकों का कहना है कि ऐसे रोगियों की संख्या बढ़ी हैं जिन्हें किसी खाद्य पदार्थ का स्वाद नही मिलता। लेकिन इन रोगियों में अधिकांश ऐसे हैं जिनके "सूंघने के तंत्र" में कहीं कोई गड़बड़ी हो गई है। स्वाद विशेषज्ञ डा० लिदा वरतीशक ने एक अध्ययन में पाया कि जिन व्यक्तियों में शुरू से ही गंध के अनुभव की क्षमता नहीं है, उन्हें यह पता ही नहीं लगता कि वे किसी संवेदना से चूक रहे हैं। किन्तु जिनकी घ्राण शक्ति आगे चल कर समाप्त हुई है उन्हें इसका अहसास बरावर होता है कि उन्हें गंध का अनुभव नहीं हो रहा। जो लोग सूंघने में अक्षम हैं, उन्हें केवल तेज मिठाई और नमक का हल्का स्वाद मिलता है। चिकित्सा वैज्ञानिकों के अनुसार स्वादेन्द्रिय की अक्षमता का कारण कुपोषण कदापि नहीं है।

डा० बरतोशक ने स्वाद न मिलने का कारण नाक के पालिप ऊतक का एलर्जी से उभरना बताया है। किसी चीज को सूंघने के लिए गंधअणु युक्त वायु का विशेष तांत्रिक कोशिकाओं के एक छोटे से गुच्छे तक पहुंचना आवश्यक है। ये तंत्रिका कोंशिकाएं नाक के ऊपरी भाग पर ग्राही कोशिकाओं के रूप में कार्य करती हैं। एक नासिकापुट में ऐसी लगभग पचास लाख कोशिकाएं होती हैं। नाक से ली गई वायु पहले कई हड्डियों की शृंखलाओं से होकर ऊपर की ओर गुजरती है और तब इस वायु का एक बहुत ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गंध का हिस्सा गंधग्राही कोशिकाओं तक पहुंचाता है। पालिप ऊतक के ऊभरने पर वह हिस्सा भी गंधग्राही कोशिकाओं तक नहीं पहुंच पाता, फलतः सूंघने पर गंध का अनुभव नहीं होता। सामान्य व्यक्ति किसी हल्की-सी गंध को ठीक से पहचानने के लिए तेजी से साँस खींचता है जिससे गंधग्राही कोशिकाओं तक सामान्य से ज्यादा वायु पहुंच जाती है और तब हल्की सी गंध का स्पष्टता से अनुभव होता है।

कुत्ते और बिल्ली जैसे दूसरे स्तनधारी जीवों में सूंघने की क्षमता मनुष्य से ज्यादा होती है। इन जानवरों की नाक में ग्राही कोशिकाएं अधिक संख्या में होती हैं जो नाक में मुख्य वायु मार्ग पर स्थित होती हैं।

शरीर में केवल गंधग्राही कोशिकाएं ही ऐसी हैं जो दो-एक महीने में निष्क्रिय होकर विलुप्त हो जाती हैं और उनकी जगह नयी कोशिकाएं बनती रहती हैं। इसीलिए सिर में चोट आदि पहुंचने के कारण जिन व्यक्तियों की गंधग्राही कोशिकाएं नष्ट हो जाती हैं, उन्हें गंध का अनुभव पुनः तब मिलना शुरू होता है जब कि नयी गंधग्राही कोशिकाएं बन आती है और मस्तिष्क के सम्बन्धित भागों से उनका सम्बन्ध पुनः जुड़ जाता हैं।

गंधग्राही कोशिकाएं जब किसी गंधअणु को ग्रहण करती है तो इसकी सूचना तंत्रिक तन्तुओं के माध्यम से आंख तथा मस्तिष्क के विभिन्न भागों में तुरन्त पहुंच जाती है और गंध की अनुभूति, संवेग तथा अन्य प्रतिक्रियाएं होती हैं। मस्तिष्क में हमारे कार्य या अनुभव संग्रहीत होते रहते हैं। इन परस्पर जटिल सम्बन्धों से स्पष्ट हैं कि गंध से पुरानी स्मृतियां भी ताजा हो उठती हैं। वांस या पुआल की गंध पाकर किसी व्यक्ति को अपनी दादी की झोपड़ी याद आ जाती है जिसे उसने चालीस वर्ष से न देखा न सूंघा। गंध की स्मृति बहुत लम्बे समय तक बनी रहती है।

गंध, रुचि और समझौता—

जिस गंध को बिल्कुल नापसंद किया जाता है, यदि अधिकाधिक उसके सम्पर्क में रहना पड़े तो, आगे चल कर उसके प्रयोग से लोगों को कोई परे-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शानी नहीं होती। रसायनों की तेज गंध वाले कारखाने में जब नय चारी आता है तो उसे वहां खाना खाने में बहुत परेशानी होती है, आगे चल कर परेशानी कम होने लगती है।

"जान वी. पियर्स फाऊन्डेशन लेबोरेटरी" के एक शोध निष्कर्ष में गया है कि गंधग्राही कोशिकाएं और मस्तिष्क दोनों ही गंध के प्रति कूलनशील होते हैं। मस्तिष्क में अनुभूत गंधों की स्मृति संग्रहीत रह इसलिए मस्तिष्क प्रत्येक गंध की भिन्नता को पहचानता है। कई प्रका गंध तीव्र और मंद मात्रा में एक साथ उपस्थित हों तो भी मस्तिष्क उन्हें अलग पहचान लेता हैं। इस प्रकार रासायनिक कारखाने का कर्मचारी मजे से खाना खा लेता है जबकि एक आगन्तुक व्यक्ति को वहां किसी की बजाय केवल "दुर्गन्ध" का अहसास होगा, क्योंकि यह दुर्गन्ध उसके नयी है जो उसके मस्तिष्क की स्मृति में नहीं है।

गंध का वैज्ञानिक उपयोग—

कीट-पतंगों तथा अवांछित जानवरों को मारने के लिए हानिकार पदार्थों का प्रयोग किया जाता है। सैद्धान्तिक रूप से, प्रत्येक मनुष्य के की गंध उसी प्रकार अलग-अलग होती हैं जैसाकि अंगुली के निशान। के प्रशिक्षित कुत्ते किसी अपराधी व्यक्ति का पता उसकी गंध के आधा लगाते हैं। कुत्ता, शेर, बाघ, चीता जैसे जानवर अपने आवागमन के तथा मांद की पहचान अपनी पेशाब की गंध से करते हैं।

सुगंध का परंपरागत प्रयोग—

मनाव समाज में सुगन्ध का महत्वपूर्ण स्थान पहले से ही है। देव विवाह, पार्टी, मृत्यु, आदि प्रायः सभी अवसरों पर सभी समाजों-ध सुगंधित पदार्थों का उपयोग किया जाता है। कहीं धूप-लोबान जलाया है कहीं अगरबत्ती सुलगाई जाती है, कहीं कपूर जलाकर आरती ज जातीं है तो कहीं लोग विभिन्न प्रकार के सुगन्धित फल-पत्ती सजाकर हैं। ये सभी सुगंध वायु प्रदूषण को दूर करने के अचूक उपाय हैं। इ परम्पराएं अब धीरे-धीरे समाप्त होती आ रही है। अब सेंट, स्प्रे "परफ्यूम" अपने कपड़ों पर निथारे लोग नजर आते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाल कथा

जंगल की रानी

—राकेश वत्स

पूरा जंगल गर्मी के मारे तप रहा था। ऐसे लग रहा था जैसे जमीन से आग की लपटें निकल रही हैं। सारी बावड़ियां सूख गई थीं। नदी में भी पानी का नामोनिशान नहीं था। सिर्फ एक पोखर बचा था जिसमें थोड़ा पानी था। पोखर पर गुस्सैल बाघिन अपना अधिकार जमाए बैठी थी। सिर्फ अपनी जाति यानी की शेर, बाघ, चीता, आदि को ही पानी पीने की इजाजत देती थी दूसरी जातियों के जानवर पोखर के पास फटक तक नहीं सकते थे।

आखिर छोटे-मोटे सब जानवर एक पेड़ के नीचे जमा होकर अपना अपना रोना रोने लगे। चीतल ने कहा—'प्यास के मारे मेरा तो घर ही उजड़ गया। दो बच्चे थे दोनों मर गये, बताओ अब मैं क्या करूं?"

लोमड़ी ने कहा—'मेरा तो दम निकलने को हो रहा है। भला पानी के बिना भी कोई जी सकता है? कैसी बुरी बात है। गुस्सेल बाघिन को कुछ तो शर्म आनी चाहिए।

बन्दर ने कहा—'हम लोग यहां बातें मार कर अपना वक्त बरबाद न करें। चलो किसी दूसरे जंगल में चलें।

सियार ने कहा—'इतनी दूर हम सब कैसे जा सकेंगे। सब लोग चलते चलते रास्ते में ही मर जायेंगे। इससे तो अच्छा था कि जब तक बादल नहीं आते तब तक सब जानवर एक-दूसरे का खून पीकर जिन्दा रहें।

खरगोश को सियार की बात बहुत बुरी लगी। उसने कहा—'कैसी बातें करते हो सियार मामा। तुम तो जंगल के जानवरों में बहुत चालाक माने जाते हो। उस गुस्सैल बाघिन को पोखर के पास से हटाने की कोई तरकीब निकालो ना। 'मैं?' सियार को खरगोश पर गुस्सा आ गया। 'मैं क्या तरकीब निकालूं। तू अपने पूर्वजों की तरह इस बाघिन को ले जाकर किसी कुएं में क्यों नहीं गिरा देता?"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खरगोश ने जवाब दिया—'अब वो जमाने कहां हैं मामा जी, शेर जाति अब बहुत चालाक हो गई है।

भालू ने कहा—'तुम लोग यूं ही कायरता की बातें किये जा रहे हो। चलो मेरे साथ, उस कुत्ती बाघिन पर टूट पड़ते हैं। जीत हमारी ही होगी।'

उसकी बात सुनकर सियार फिर बोला—'कैसी मूर्खों जैसी बात कर रहे हो कालू भाई, बाघिन कोई भेड़ है जो उस पर टूट पड़ोगे। वह सबको मारकर भी रत्ती भर नहीं थकेगी।

सबने ऊंची आवाज में सियार का समर्थन किया—'ठीक कह रहे हैं, ठीक कह रहे हो।'

'तो फिर और क्या रास्ता है इस भयंकर गर्मी में अपनी जान बचाने का?' बाहर सिंगे ने निराशा से जमीन पर अपने घुटने टेक दिये।

एक सेही, जो अब तक त बैठी, कभी इधर देखकर तो कभी उधर देखकर सबकी बातें सुन रही थी सरक कर आगे आई और बोली—'छोटे मुंह बड़ी बात के लिए अगर सब लोग क्षमा करें तो मैं एक बात कहना चाहती हूँ।

'तुम लोग मेरे साथ चलो। मैं बाघिन को अपने में उलझा कर लड़ती रहूंगी। तब तक सब लोग पानी पी लेना और भाग जाना।'

सेही की बात सुनकर सियार के दिमाग में आया, अगर यह मूर्ख अपनी जान पर खेलना ही चाहती है तो खेलने दो। उसने ऊंची आवाज में कहा—'हां-हां, सेही ठीक कह रही है। चलो सब लोग इसके पीछे-पीछे चलते हैं। अगर और कुछ न हुआ तो मरने से पहले सरकस का खेल तो देख ही लेंगे।' डूबते को तिनके का सहारा मिला तो दूसरे जानवरों ने भी सेही का बलिदान देने का समर्थन कर दिया। सेही को सबकी बात सुनकर बहुत अच्छा लगा उसके मन में गर्व जागा कि वह भी किसी के काम आने की चीज है। वह धीरे-धीरे पोखर की तरफ बढ़ने लगी और सब जानवर उसकी अगल-बगल चलने लगे, जैसे किसी का जनाजा लेकर आ रहे हों।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब पोखर दिखाई देने लगा तो सब ठिठक गये। सेही ने सबको हाथ जोड़कर प्रणाम किया और आगे बढ़ गई।

जब वह पोखर के पास पहुँची तो गुस्सैल बाघिन मरे जानवरों में से एक का नर्म-नर्म मांस खाकर और जी भर कर ठंडा पानी पीकर आराम से सो रही थी। पत्तों पर सेही के चलने की गड़गड़ाहट सुनकर वह जाग गई और गर्दन घुमाकर लाल-लाल आंखों से सेही को देखने लगी।

सेही ने उसे देखा, पर वह डरी नहीं। मरना तो था ही, प्यास से नहीं तो बाघिन के हाथों से ही सही। वह धीरे-धीरे सरक कर पानी के पास पहुँच गई।

अभी उसने पानी को सूंघा भर था कि बाघिन की कड़कती हुई आवाज आई—'कमजात सेही, तुझे शर्म नहीं आती। बिना इजाजत के पोखर की तरफ बढ़ रही है, तुझे इसका अंजाम पता नहीं ?"

सेही ने जवाब दिया—'रानी बाघिन, इस पानी पर सबका अधिकार है। यह दयालु बादलों का दिया पानी है, मुझे इस पानी को पीने दे।'

सेही जैसे साधारण से जीव को जुबान लड़ाते देख गुस्सैल बाघिन गुस्से से लाल हो गई। वह गुर्राई, 'ठहर जा मैं तुझे जुबान लड़ाने का मजा चखाती हूँ।' बाघिन अपनी दहाड़ से सारे जंगल को कंपाकर खड़ी हो गई और उसकी दहाड़ को सुनकर ओट में खड़े सारे जानवरों में से सियार और खरगोश सिर पर पैर रखकर भाग निकले।

पर सेही तो पहले से ही जान देने के लिए तैयार होकर आई थी। उसने भी बलिदान देने के जोश में आकर अपने शरीर के सारे कांटे खड़े कर लिए।

बाघिन ने एक ही ग्रास में सेही को निगल जाने के लिए अपना पूरा जबड़ा खोलकर सेही के शरीर पर गाड़ दिया। उस मूर्ख को गुस्से के पागलपन में इतना भी ख्याल नहीं रहा कि जिस पर वह बुर्क मार रही है वह खरगोश नहीं है सेही है। पलभर में ही लम्बे-लम्बे तीखे कांटे उसके हलक तालू, मसूड़ों और नथुनों में जा घूसे। कई कांटे तो गालों के आरपार हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गए। एक कराह के साथ बाघिन सेही को छोड़ कर अलग हट गई। पर उसको लहू लुहान करते काँटे भी सेही की देह को छोड़कर उसके साथ ही अलग हट गए।

अब बाघिन अपने सिर को दर्द के मारे जमीन पर पटकने लगी। उसके हलक में चुभे कांटे उसे मुंह पूरी तरह से बन्द नहीं करने दे रहे थे। इस अन-होनी की तो उस मूर्ख ने कल्पना तक नहीं की थी।

सेही ने अपने कांटे बिठाकर मुंह बाहर निकाला और बाघिन की हालत देखी। वह समझ गई कि अब बाघिन किसी का शिकार करने के काबिल नही रही। मुंह में चुभे कांटे तो उसे पानी तक नहीं पीने देंगे। उसने सब जानवरों को आवाज देकर जल्दी से पानी पीने के लिए आमंत्रित किया और खुद एक तरफ खड़ी होकर बाघिन की निगरानी करने लगी।

अब जानवर पोखर का ठण्डा पानी पीकर अपनी प्यास बुझा रहे थे और बाघिन जमीन पर लोटपोट होकर हुड़दंग मचा रही थी। उसे अब पोखर के अधिकार की नहीं बल्कि अपनी जान के लाले पड़े थे। सबके पानी पी लेने के बाद सेही ने भी पोखर के किनारे जाकर पानी पिया और ईश्वर को धन्यवाद दिया। अब उसे पता चला कि उसका पैर थोड़ा सा जख्मी हो गया है। जब वह लंगड़ाती हुई उसी ठण्डे पेड़ के नीचे पहुंची तो वहां का दृश्य देखकर हैरान रह गई। सारे जानवर बड़े-बड़े फूलों के गुच्छे लेकर उसका स्वागत करने के लिए खड़े थे। सब जानते थे कि अब बाघिन नहीं बचेगी। जब वह अपने मुंह से कुछ खा ही नहीं सकेगी तो उसको कौन बचा सकता है?

बारह सिंगे ने आगे बढ़कर सेही का अभिनंदन किया और सबकी तरफ से कहा—'हमारे दिलों की रानी आज से आप ही हैं सेही बहन। बाघिन को रानी तो हम डर के मारे ही मानते थे। असली राजा तो वही होता है जो जनता के दिलों पर राज करे।' दूसरे जानवरों ने भी हां-हां कहकर इस बात का समर्थन किया और उल्लास में भरकर नाचने गाने लगे। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत में भावात्मक : आवश्यकता और उपाय

डा. गया प्रसाद उपाध्याय शास्त्री, प्रयाग

भावात्मक एकता का स्वरूप :—

प्रत्येक परिवार, समाज एवं देश में भावात्मक एकता की आवश्यकता है। इसके बिना कहीं भी शान्ति एवं समृद्धि के दर्शन नहीं होते है। भावात्मक एकता ही सुख शान्ति एवं समृद्धि की आधार-शिक्षा है। भावात्मक एकता का रूप परिवार, समाज एवं देश में सर्वत्र एक सा ही होता है। परिवार की अपेक्षा समाज अथवा देश में इसकी व्यापकता अवश्य बढ़ जाती है। किन्तु इसका रूप सर्वत्र प्रायः एक सा रहता है। अतः परिवार का उदाहरण लेकर ही इसके स्वरूप का उल्लेख करना उचित है। यह एक छोटा परिवार है जिसमें पति-पत्नी के अतिरिक्त दो सन्तानें भी है। घर में गृहस्थी में सुविधा की समस्त सामग्री है। पतिदेव एक कार्यालय में एक ऊँचे पद पर प्रतिष्ठित है और उन्हें अच्छा वेतन मिलता है। जब वह अपने कार्यालय जाते हैं तो पत्नी घर तथा सन्तान की देख-भाल के लिए घर में रहती है। कार्यालय में कार्यरत गृहस्वामी के अन्तःकरण में यह आशंका नहीं जन्म लेती कि उसकी पत्नी ने गृहस्थी के पदार्थजात को नष्ट कर डाला होगा अथवा सन्तान को लेकर अन्यत्र चली गई होगी। इसी प्रकार गृहिणी के मन में भी पति के प्रति कभी कोई आशंका उत्पन्न नहीं होती है। दोनों को एक-दूसरे के प्रति अगाध विश्वास हैं। दोनों के हृदय में सन्तान के प्रति ममता है और गृहस्थी को सुचारू रूप तथा सुव्यवस्थित रूप से संचालित करने की आकांक्षा भी दोनों के ही मन में समान रूप से विद्यमान है। अतः यह कहा जा सकता है कि इस छोटे परिवार में भावात्मक एकता है।

परिवार में जितने भी सदस्य हैं यदि सभी के अन्तःकरण में एक-दूसरे के प्रति प्रेम तथा विश्वास है। गृहस्वामी मैसूर से भगवान् बाल-राम के लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चन्दन का एक सुन्दर पालना लाये हैं। घर में पालने के लाने में उन्हें गर्व एवं प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

आज कार्यालय में प्राय: प्रत्येक साथी से पालने के मूल्य और सौन्दर्य का उल्लेख करके अपने गर्व एवं प्रसन्नता को प्रकट करना चाहते है। उधर गृहस्वामिनी भी आज अपने गृह कार्य से शीघ्र निवृत्त होकर अपनी प्रतिवेसिनियों के चक्र में बैठी हुई उसी पालने की चर्चा करके अपने गर्व तथा अपनी प्रसन्नता के सबको उतारना चाहती है। बालक भी विद्यालय में अपने साथियों से पालने की बातचीत करके अपने गर्व और प्रसन्नता को प्रकट कर रहा है। कहने का अभिप्राय यह कि घर में एक नई सुन्दर वस्तु के आगमन से घर की तीनों इकाइयों को एक ही भाव की अनुभूति हो रही है। यही भावात्मक एकता है।

आज बिल्ली ने मेंज पर रखे चाय के सुन्दर सैट को गिरा दिया है जिससे कई प्याले और चायदानी टूट गई है। गृहस्वामिनी को उसके टूट जाने की जो खिन्नता और कष्ट हुआ है उसके कारण आज उसने खाना नहीं खाया है। गृहस्वामी और बच्चों को जब सैट के टूटने की सूचना मिली है तो उन्हें भी वह खिन्नता एवं कष्ट का अनुभव हुआ है जो गृहस्वामिनी को हुआ है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि घर के सामान के हानि-लाभ के प्रति सभी में भावात्मक एकता है।

अब थोड़ा पारस्परिकता में भी भावात्मक एकता को देखा जाय। कार्यालय से आते समय गृहस्वामी को ज्वर हो आया है। वह पीड़ा का अनुभव कर रहे है। उनके ज्वर के कारण गृहस्वामिनी एवं बालक भी खिन्न है। दूसरे दिन बालक की परीक्षा के सुन्दर परिणाम पर सभी हर्ष मना रहे हैं और सभी पड़ोसियों को चाय पर आमंत्रित करके अपनी प्रसन्नता को प्रकट कर रहे हैं। पारस्परिकता में भी सभी के अन्त:करण में समान भाव की अनुभूति होती है। अत: यह कहा जा सकता है कि एक-दूसरे के सुख-दुख एवं हानि-लाभ में इस परिवार में पूर्ण भावात्मक एकता है। परिणामत: यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छोटा परिवार शान्त एवं सुखी परिवार है। जो स्थिति एक छोटे परिवार के लिए आवश्यक है वही देश एवं समाज के लिए भी कही जा सकती है। इसका आगे उल्लेख किया जायगा।

भावात्मक एकता की आवश्यकता—

जिस परिवार, समाज एवं देश में पूर्ण भावात्मक विद्यमान है वह परिवार शान्त और सुखी तथा समाज एवं देश शांत एवं समृद्ध रहेंगे। समाज और देश में तो भावात्मक एकता के कारण एक शान्ति का आविर्भाव होगा जिसकी स्पष्ट अनुभूति समाज के प्रत्येक घटक तथा देश के प्रत्येक इकाई समाज को अवश्य होगी। ऐसे समाज का घटक व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत प्रगति से अथवा समाज के उन्नति के कार्यों से अपना तथा समाज का मुख उज्जवल कर सकता है। भावात्मक एकता की अनुभूति करने वाला देश भी अपनी अस्मिता

भारत का मुसलमान समाज भारत पर आक्रमण करने और यहाँ के मन्दिरों को तोड़कर मस्जिद स्थापित करने वाले आक्रमण-कारियों की मानसिकता से आक्रान्त है। अब बाबर और औरंगजेब का समय नहीं है। आक्रान्ता को मनोवृत्ति हिन्दू ने बाबर तथा औरंगजेब के समय में जिस अपमान एवं ग्लानि से पार की उसे वह सहन करने के लिए कैसे तैयार हो सकता हैं। अतः मुसलमान समाज की आक्रान्ता अथवा विजेता की मानसिकता असमायिक होने से त्याज्य है।

एवं स्वतंत्रता की अनायास ही रक्षा करने में समर्थ होगा। कहना तो यह होगा ऐसे देश की ओर किसी भी देश को आंख उठाने का साहस न होगा। वस्तुतः भावात्मक एकता शक्ति और शान्ति का आधार एवं स्त्रोत है। इसी-लिए दूरदर्शीता देश तथा समाज की भावात्मक एकता को दृढ़ करने का सर्वदा प्रयत्न करते हैं।

तात्मकालिक समय में भारत में भावात्मक एकता की स्थिति—

जिस तरह परिवार की घटक इकाइयां व्यक्ति होते हैं उसी प्रकार देश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की घटक इकाइयां समाज होते हैं। भारत में इस समय मुख्य समाज हैं : हिन्दू और मुसलमान। इन समाजों में भावात्मक एकता नहीं है। भारत का हिन्दू समाज बहुसंख्यक समाज है। उसकी पूजा-अर्चा के लिए श्रीराम जन्म-भूमि के ताले खुल गये हैं। उन तालों को खुलवाने के लिए वह आंदोलन के मार्ग पर उतर चुका था और शीघ्र ही सत्याग्रह का प्रारम्भ करने वाला था। ताले खुलने से उसे आनन्द की अनुभूति हुई है। वह हर्षोत्सव मनाने के लिए व्याकुल है। इसके विपरित मुसलमान समाज को पीड़ा और कष्ट की अनुभूति हुई हैं अतः वह उपद्रव करके समाज की शान्ति भंग करने पर उतारू है। दोनों समाजों में भावात्मक एकता के स्थान में भाव-विरोध अथवा भाव वैपरीत्य है।

यहां यह देख लेना भी आवश्यक है कि मुसलमान हिन्दुओं के हर्षोल्लास में सम्मिलित न होकर उनको कष्ट, भय, आतंक, तथा पीड़ा का अनुभव कराने के उपद्रवों का आयोजन करने लगे। स्पष्ट है कि उनका श्रीराम जन्म-भूमि से वह लगाव नहीं है जो सामान्य हिन्दू का है परन्तु उनका वह लगाव है जो बाबर अथवा औरंगजेब के समय में उनका था। कहने का अभिप्राय यह कि भारत का मुसलमान समाज भारत पर आक्रमण करने और यहां के मन्दिरों को तोड़कर मस्जिद स्थापित करने वाले आक्रमणकारियों की मानसिकता से आक्रान्त है।

अब बाबर और औरंगजेब का समय नहीं है। आक्रान्ता की मनोवृत्ति हिन्दू ने बाबर तथा औरंगजेब के समय में जिस अपमान एवं ग्लानि से पार की उसे वह गहन करने के लिए कैसे तैयार हो सकता है। अतः मुसलमान समाज की आक्रान्ता अथवा विजेता की मानसिकता असामाजिक होने से त्याज्य हैं। यह भी सच है कि संपूर्ण मुसलमान समाज इस अस्वाभाविक मानसिकता से आक्रान्त नहीं हैं। इस समाज में एक वर्ग ऐसा भी है जो हिन्दुओं के दुख में दुख और हर्ष में हर्ष बनाने के लिए तैयार है। अस्वाभाविक मनोवृत्ति वाला एक छोटा सा समुदाय है किन्तु सुविधा भोगी बन जाने के कारण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावी है।

जो वर्ग आक्रान्ता मनोवृत्ति से पीड़ित है वह पाकिस्तान की समृद्धि में प्रसन्न होता है, उसकी विजय को अपनी विजय मानता है चाहे उसकी भारत पर किसी मैच की ही विजय हो। वह भारत के महान पुरुषों को भी श्रद्धा एवं भक्ति की दृष्टि से नहीं देखता है। कहने का अभिप्राय यह उसका हिन्दुओं के साथ भावात्मक विरोध अथवा भावात्मक वैपरीत्य है। ऐसी स्थिति में देश में न तो भावात्मक एकता ही हो सकती है और न शान्ति तथा समृद्धि ही। भारतवर्ष हिन्दुओं की मातृ-भूमि और पुण्य भूमि है। दूसरे विभाजन के पश्चात् भी वह उसके लिए वच रही है। अतः भारत मे रह जाने वाले मुसलमानों को आक्रान्ता मनोवृत्ति त्यागनी होगी। यदि वे इस आक्रान्ता अथवा विजेता मनोवृति का परित्य,ग नहीं करते तो हिन्दुओं के साथ सौहार्द्र और सौमनस्य उत्पन्न नहीं हो सकता है। दोनों समाजों में सौहार्द्र एवं सौमनस्य की महती आवश्यकता है।

समय की मांग—

इसी आक्रान्ता मानसिकता ग्रस्त मुसलमान समाज को शासन की ओर से भी सहयोग मिल रहा है। शासन वोट के स्वार्थ में वास्तविकता की ओर से आंख वन्द किये है। किन्तु यह पहले देखा जा चुका है कि अब आक्रान्ता मनोवृत्ति रखने का समय नहीं। उसका परित्याग अवश्यम्भावी है। शासन वचनों से भावात्मक एकता स्थापित करने के लिए वचन वृद्ध हैं अतः उसे इस वर्ग की तुष्टीकरण नीति को समाप्त करना होगा। इसी में देश की समृद्धि और शान्ति निहित हैं।

— भारत का राष्ट्रीय जानवर चीता है।

— भारत में प्रथम और अन्तिम गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचार्य थे।

— भारत का पहला अखबार काला गजट था।

— भारत की सबसे लबी नदी ब्रह्मपुत्र नदी है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

1. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाए जाएं।

2 मजहब के आधार पर पुलिस और अन्य सरकारी विभागों में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

3. कश्मीर, असम व देश के सभी भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

4. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

5. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने को अनुमति न दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

6. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

7. कश्मीर सम्बन्धी धारा 370 तुरन्त हटाई जाए और वहां भारत के नागरिकों के बसने की व्यवस्था हो।

8. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

9. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उन्हें वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथपत्र भरने का नियम बनाया जाए जिसमें वह स्वीकार करे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति रहेगी।

10. गोहत्या का कलंक तुरन्त मिटाया जाए।

11. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय भाषाओं की मां संस्कृत !

—राजशेखर व्यास

संस्कृत भाषा भारतीयों की अपनी वस्तु है। भारतीय जीवन की रक्तवाहिनी है। उसने कश्मीर से कन्या कुमारी तक, पूर्व से पश्चिम तक समस्त जनों को चाहे उनकी अपनी कोई भी मातृभाषा रही हो, एकता के सांस्कृति सूत्र में गूंध कर रखा है। चाहे किसी भी भाषा या लिपि का कोई जानकार हो, संस्कृत भाषा और देव-नागरी लिपि उसे अपनी एकता में गाठे हुए है। हमारे देश में ही नहीं, विदेश में भी किसी भाग का बसने वाला व्यक्ति यदि संस्कृत से सम्पर्क रखता है तो वह एक भाषा और एक लिपि से आबद्ध बना हुआ है। उसे अन्य भाषा या लिपि-भेद बाधक नहीं बनता, जबकि अनेकता की राजनीति ने ही जन्म दिया है और उलझाया हो। संस्कृत ने अपना एक संस्कृति में सभी को समवेत बनाए रखा है।

किसी भारतीय को संस्कृत भाषा के महत्त्व को बताने की आवश्यकता उत्पन्न हो, यह भारतीयता के लिए लज्जास्पद ही है। जो भारतीय संस्कृत नहीं जानता, वह भारतीय संस्कृति को भी नहीं जान सकता, इस देश की ९५ प्रतिशत भाषाएं संस्कृत से ही उत्पन्न हुई हैं और पश्चिम की अनेक भाषाएं संस्कृत से ही सम्बन्धित हैं। यह भाषा-विज्ञानियों ने स्वीकार किया है। आज की भारतीय और विदेशी अनेक भाषाएं संस्कृत से ही पोषण प्राप्त करती है। जिस माता का दूध पीकर, अंचल में पालित होकर, अनेक भाषाएं पोषित होती रहती हैं, उसी माता को 'मृत' भाषा प्रचारित किया जाए, यह कितने आश्चर्य और खेद की बात हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महत्वपूर्ण साहित्य

हमारा समस्त महत्वपूर्ण साहित्य-ज्ञान-विज्ञान संस्कृत में भरा हुआ है और वह इतना उन्नत एवं समृद्ध है कि उसका अंश-दान प्राप्त कर विदेश के समर्थ-साक्षर अपने को सम्पन्न अनुभव करते हैं, हमारे साहित्य-सागर में गोता मारकर अपने जीवन को सार्थक समझते हैं। आज के पख्तूनों को हम चाहे 'पुश्तो' से प्रभावित देखते हैं, परन्तु दो-ढ़ाई हजार साल पूर्व उसी प्रदेश के महान् व्याकरण-पाणिनी ने संस्कृत का अमर व्याकरण निर्मित किया है, इसी प्रकार आज का कश्मीरी चाहे हमें पलटा हुआ दिखाई दे, किन्तु इसी कश्मीर के अनेक पूर्व पुरुषों ने संस्कृत साहित्य को बहूमूल्य और विपुल साहित्य की देन दी हैं। काशी, कश्मीर, अवन्ती, कांची पाटलिपुत्र, भारत के महान् संस्कृत एवं संस्कृति के केन्द्र रहे हैं। इनके अंचल में प्रणीत साहित्य ने विश्व-साहित्य में अपना अनन्य एवं अमर स्थान प्राप्त किया है।

अपनी भाषा

जिस देश में संस्कृत-साहित्य का निरन्तर-निर्भर प्रवाहित होता रहा हो, वहां आज रेगिस्तान दिखाई देने लगे, संस्कृत-साहित्य के ज्ञान के लिए सुझाव देने को बाध्य बनना पड़े, तो यह वास्तव में भारतीयता के लिए लज्जा से मस्तक झुका देने वाली बात ही हैं। संस्कृत भाषा भारतीयों की अपनी वस्तु हैं। भारतीय जीवन की रक्तवाहिनी है। उसने कश्मीर से कन्याकुमारी तक, पूर्व से पश्चिम तक समस्त जनों को चाहे उनकी अपनी कोई भी मातृ-भाषा रही हो, एकता के साँस्कृतिक सूत्र में गूंथ कर रखा है। चाहे किसी भी भाषा या लिपि का कोई जानकर हो, संस्कृत-भाषा और देवनागरी लिपि उसे अपनी एकता में गांठे हुए हैं। हमारे देश में ही नहीं, विदेश में भी किसी भाग का बसने वाला व्यक्ति यदि संस्कृत से सम्पर्क रखता है तो वह एक भाषा और एक लिपि से आबद्ध बना हुआ है। उसे अन्य भाषा या लिपि-भेद बाधक नही बनता, जबकि अनेकता को राजनीति ने ही जन्म दिया है और उलझाया हो। संस्कृत ने अपनी एक संस्कृति में सभी को समवेत बनाए रखा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अँग्रेज गए हम उनका अधूरा काम पूरा कर रहे हैं

—विनायकप्रसाद हिम्मत सिंह

अँग्रेजों भारत छोड़ो का नारा बुलन्द हुआ था सन १९४२ ई० में अंग्रेजों भारत छोड़ना पड़ा सन् १९४७ ई० में। भारतवासियों ने स्वतन्त्रता प्राप्त । अंग्रेजी हकूमत समाप्त हुई अंग्रेज चाहते थे कि भारत की राष्ट्रभाषा ग्रेजी हो, भारतवासी पश्चिमी पोशाक पहने व इनकी संस्कृति पश्चिम तों की हो। अँग्रेज अपने शासन काल में अपने उद्देश्यों में सफल न हो सके किन अब हम सारे भारतवासी खुशी-खुशी व पूरे जोश के साथ उनके अधूरे म को पूरा करने में लगे हुए हैं।

आज माता-पिताओं में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में अपने बच्चों को र्ती कराने के लिए कतार लगीं हुई हैं, जिस स्कूल में ३० बच्चों की भर्ती नी है वहाँ हजारों बच्चों का फार्म भरा जा रहा है, बच्चों के माता-पिता साक्षात्कार लिया जा रहा है जिससे विद्यालय अधिकारी यह समझ सकें बच्चे के माता-पिता अँग्रेजी बोलना जानते हैं कि नहीं, वरना बच्चा अँग्रेजी क तरह से न समझ सकेगा, ऐसी हालत हो रही है कि बच्चे को अँग्रेजी खाने के लिए घर वालों को बच्चे से अंग्रेजी में बात करनी पड़ रही । ऐसा लगता है कि इक्कीसवीं सदी में प्रवेश के समय देश में अँग्रेजी लने वाले ही नजर आएँगे।

अँग्रेजों ने बड़ी चतुराई से हमारा पहनावा बदलवा दिया। स्कूलों में फ पेन्ट व कमीज एवं कालेजों में फुल पेन्ट व कमीज का प्रचलन शुरू किया। ाजादी के पहले राष्ट्रीय पोशाक का नारा बुलन्द हुआ था और धोती कुर्ता या गाँधी टोपी का प्रचलन हुआ। गांधी टोपी आजादी के बाद राजनीतिज्ञों गलत कार्य-कलापों के कारण बदनाम हो गई व धीरे-धीरे अँग्रेजी पोशाक अपनी जड़ जमाई। आज शहरी क्षेत्रों में भारतीय पोशाक में गिने चुने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यक्ति ही नजर आऐंगे। तेजी से अँग्रेजी पोशाक की ओर झुकाव बढ़ रहा है। कुछ ही वर्षों में हमें भारतीय पोशाक पहने व्यक्ति को खोजना मुश्किल हो जाएगा। महिलाओं का झुकाव भी दिन-प्रतिदिन विदेशी पोशाक की ओर है। विवाह शादी, धार्मिक अवसरों पर भी अधिकतर लोग अँग्रेजी पोशाक में ही नजर आ रहे हैं।

अँग्रेज मद्यपान व नशीली वस्तुओं के अभ्यस्त थे। हम इस क्षेत्र में भी उनसे पीछे नहीं रहे हैं। उनका अनुकरण बड़ी शान के साथ कर रहे हैं। विवाह-शादी के अवसरों पर होटलों में ठहरना व मद्यपान का सेवन इज्जत की बात मानी जाने लगी है।

स्वतन्त्र यौन सम्बन्ध अँग्रेजी सभ्यता का एक अंग था। भारतवासी भी इस ओर आगे बढ़ रहे हैं। इसी कारण गर्भपात व भ्रूण हत्या को देश में कानूनी दर्जा प्राप्त हो गया है। महात्मा गाँधी गर्भपात व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे। सनातन धर्म भ्रूण हत्या को ब्रह्महत्या जैसा जघन्य पाप मानता है। वर्ष १९८६ में एक रिपोर्ट के अनुसार ४१ लाख गर्भपात किये गये। इसमें गुप्तरुप से की गई गर्भपात की संख्या शामिल नहीं है।

विवाह सम्बन्ध के बाद परिवार में टकराव व उसके बाद तलाक-क्या अँग्रेजों की देन नहीं है ? आज तलाक के मामले जिस तेजी से बढ़ रहे हैं, उसे देखते हुए लगता है कि हमारे पारिवारिक सम्बन्धों का ढाँचा पूरी तरह से चकनाचूर हो जायेगा।

एक तरफ हमारे शास्त्रीय संगीतों को विश्वभर में मान्यता मिल रही है, दूसरी तरफ हम पश्चिम के डिस्कोडान्स को बढ़ावा दे रहे हैं। डिस्कोडान्स को आधुनिक सभ्यता का एक अंग समझा जा रहा है।

अँग्रेजी शिक्षा, सभ्यता व संस्कृति का भारतीय मानस पर कितना गहरा असर पड़ेगा इसे भविष्य ही बतायेगा। हमारे परिवारों पर पश्चिमी संस्कृति का क्या असर पड़ेगा इसका मूल्यांकन भी समय आने पर ही हो सकेगा। आज परिवारों में अलग-अलग होने की मनोवृत्ति बढ़ती जा रही है, बड़ों का सम्मान नहीं के बराबर रह गया है। पश्चिमी देशों में "ओल्ड एज होम" वृद्ध लोगों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के रहने के आवास का प्रचलन है, वह दिन दूर नहीं जब भारत में भी जगह-जगह उसकी आवश्यकता महसूस की जाने लगेगी।

ऐसा लगता है कि अँग्रेजी भाषा सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए आज देश का हर नागरिक जोरों से प्रयत्नशील है। उसकी जवान पर मौखिक विरोध सुना जा सकता है लेकिन उसका मन अँग्रेजों के इस कार्य को पूरा करने में लगा हुआ है। क्या यह प्रश्न हमारे लिए विचारणीयनहीं है।

प्रेरक प्रसंग

दूरगामी कौन

केशवदेव मिश्र 'कमल'

वह बूढ़ा हो गया था। उसके तीन बेटे थे, तीनों की बहुओं में आपस में बनती नहीं थी, क्योंकि हर कोई गृह-स्वामिनी बनना चाहती थी।

उनकी कलह से तंग आकर वृढ़े किसान ने एक दिन अपने बेटों को बुलाकर कहा-"रोज-रोज तुम्हारी बोवियाँ झगड़े खड़े कर देती हैं। मैंने एक पहेली सोची है। जो उसे बूझ लेगी, वही घर कीमालकिन होगी।" बेटों और उनकी बहुओं ने यह यह शर्त स्वीकार करली।

उस सांझ को बूढ़े ने तीनों बहुओं से कहा, "वह क्या चीज है, जो सबसे अधिक दूर तक जाती है? जिसका उत्तर सही होगा, वह इस घर की मालकिन बनेगी।"

अगले दिन सुबह-सुबह बूढ़े ने तीनों बेटों और तीनों बहुओं को बुलाया। बारी-बारी से उसने उत्तर पूछा। बड़ी बहू बोली, "मुर्गे की आवाज! जब वह बांग लगाता है, तब सबसे दूर तक जाती है।"

मझली बहू ने कहा-"कुत्ते का भौंकना। जब वह रात को भौंकता है, तब उसकी आवाज मुर्गे की बांग से दूर तक जाती है।"

"मोठी-वाणी" तीसरी ने उत्तर दिया, "यह वाणी सबसे दूर तक पहुंचती है।"

बूढ़े ने फैसला दिया, "तुम ठीक कहती हो। मीठी-वाणी हजारों मील तक पहुंचती है। इस घर की मालकिन होने की हकदार तुमही।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिहार में बंगला देशी घुसपैठ

ये इलाके असम बनेंगे या पाकिस्तान

—प्रिय रंजन भारती

भारत में बंगलादेशी मुसलमानों की घुसपैठ कोई नयी बात नहीं है। बंगल और असम को यदि अलग रख के देखा जाए तो राजनैतिक शह पर इन घुसपैठियों को बिहार के पूर्णिया, कटिहार, साहेबगंज तथा सहरपा जिलों में बड़े ही सहज रूप से भरने दिया जा रहा है। नतीजा यह है कि बिहार के इन जिलों में इन घुसपैठियों की आबादी १० लाख से भी ज्यादा हो गयी है।

कैसी विडम्बना है कि हिन्दुओं का एकमात्र घर भारत घुसपैठियों का चारागाह बन गया है। नेता पुलिस और प्रशासन निजी स्वार्थों से प्रेरित होकर न केवल इन्हें विहार के क्षेत्रों में घुसने ही देते हैं बल्कि हर तरह की सुविधाएं भी प्रदान करते हैं। किसी को राष्ट्र-हित की परवाह नहीं है। कितने हिन्दू गांव छोड़ छोड़कर भाग रहे हैं। आखिर यह हो क्या रहा है? क्या सरकार और जागृत राष्ट्र नाम की कोई चीज इस देश में बची नहीं रह गई है? जो देश पर आने वाले भावी संकट को भाँप सके।

सवाल है कि जब सीमा पर संतरी तनात हैं तो सरकार इसे रोकने के उपाय क्यों नहीं करती?

हर रोज घुसपैठ के नये-नये तरीके निकल रहे हैं। पश्चिम बंगाल की ग्यारह सौ कि. मी. लम्बी सीमा बंगलादेश से लगती है। विभाजक रेखा के रूप में सिर्फ नागर नदी सरीखी कुछेक छोटी बड़ी नदियां और मील के पत्थर' ही हैं। बिहार से सटे बंगाल के इलाके हैं और तब बगलादेश की सीमा रेखा। बिहार में घुसपैठियों से सबसे अधिक प्रभावित जिला है पूर्णिया। पूर्णिया जिले का किशनगंज अनुमंडल एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ से बंगलादेश तथा नेपाल की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सीमा बहुत नजदीक है। किशनगज से बंगलादेश की दूरी २० कि. मी. से ज्यादा नहीं है। इसी प्रकार कटिहार जिले के सूधानी, तेतला, बारसोई, आजमनगर तथा साहेबगंज जिले के राजमहल और पाकुड आदि क्षेत्र बंगलादेश की सीमा के नजदीक हैं, यह नजदीकी ही घुसपैठ के लिए महत्वपूर्ण है।

आठ लाख की आबादी वाले पूर्णिया जिले का किशनगंज अनुमंडल इस संदर्भ में 'बोटल आफ दि नेक' कहा जाता रहा है। किशनगंज के करीब देवीगंज, धरमपुर, इस्लामपुर तथा पांजीपाड़ा आदि के बाजारों में बंगलादेशी मुसलमान बेरोकटोक आते जाते हैं। कुकूरदाह बी. एस. एफ. कैंप के जवान भी यह बेहिचक कबूल करते हैं कि बिहार और बंगाल के सीमावर्ती गांवों में बस रहे मुसलमान ग्रामीणों की बंगलादेश के गांवों में रिश्तेदारियां हैं और इसी बहाने लोग आते-जाते रहते हैं। बी. एस. एफ. के एक अफसर ने नाम छापने की मनाही करते हुए यहाँ तक कहा कि घुसपैठ के लिए पुलिस और बी. एस. एफ. के लोग भी दोषी हैं। इनका कहना था कि बी. एस. एफ. के जवानों को घुसपैठियों के दलालों से भारी रकम मिलती है।

बी. एस. एफ. वाले खुलेआम ऐसा कैसे करते होंगे ? इस सवाल के जवाब में इस अफसर ने समझाते हुए कहा—"आप ऐसा समझिये···नागर नदी के उस पार इधर के किसानों की जमीन है और इस पार उधर के किसानों की, खेतीबाड़ी के कामों के लिए तो कोई रोक नहीं सकता, कानून भी ऐसा नहीं है। फिर बी. एस. एफ. वालों को हर समय एक ही जगह तो रहना नहीं होता इसी की ओट में बी. एस. एफ. के लोग अपनी जिम्मेदारी से बच निकलते हैं; हालांकि इस साजिश में उनका हाथ होता है। पहरे पर तैनात टुकड़ी के दूसरी जगह जाने पर ये ग्रामीण बोरिया-बिस्तर लेकर आसानी से सीमा पार कर जाते हैं। नमक की तस्करी और मवेशियों का भारी संख्या में बंगलादेश जाना भी इसी तरीके से होता है। मवेशियों की चोरी करवाने और बेचने ले जाने के लिए बहुत बड़ा गैंग काम करता है।

पुलिस वाले इन घुसपैठियों, दलालों और तस्कर ठेकेदारों की किस तरह मदद करते हैं, इस पर इस अफसर ने पिछले दिनों हुई इस घटना का जिक्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया। इस्लामपुर थाना क्षेत्र में कुछ दिनों पहले बी. एस. एफ. के जवान ने मवेशियों का एक झुंड सीमा पार करते हुए पकड़ा था। बाद में दलालों ने स्थानीय पुलिस को भारी रकम देकर थाने में इस आशय की एफ. आई. आर. दर्ज करवायी कि उनके ३५ मवेशी चोरी चले गये हैं···पुलिस ने फिर बी. एस. एफ. कंप से मवेशियों को बरामद करके दलालों को सौंप दिया।

घुसपैठ और तस्करी का यह तरीका अब काफी पुराना हो चला है। अब तो राजनेताओं ने अपना वोट बैंक बनाये रखने के लिए कई नये तरीके भी ईजाद किये हैं। कटिहार जिले से सटे पश्चिम बंगाल के राधिकापुर स्टेशन से घुसपैठियों को पुलिस-प्रशासन की मदद पर बड़ी सख्या में लाया जाता है। राधिकापुर स्टेशन से ट्रेन का सहारा है जहां से इन्हें कटिहार के बलरामपुर आजमनगर तथा बारसोई आदि प्रखंडों में बसा दिया जाता है, इसी तरह के धंधे साहेबगंज जिले में भी होते हैं। रेलवे अधिकारियों की मदद पर इन्हें फरक्का से रेल के जरिये बरहखा ले आया जाता है, जहां से फिर संथाल परगना के दूसरे हिस्सों और देश भर में बसाने की व्यवस्था करवायी जाती है।

मजे की बात है कि सरकार इन मामलों की पुष्टि सम्बद्ध अधिकारियों से करवाती है। साहेबगंज जिले के राजमहल विधानसभाई क्षेत्र से जीतकर आये भाजपा विधायक ध्रुव भगत का कहना है कि उनके जिले में चालीस हजार से अधिक घुसपैठिये आकर बस गए हैं लेकिन विधानसभा में जब भी यह मामला उठाया जाता है तो सरकार जांच का आदेश दे देती है और फिर सरकारी अधिकारियों से लिखवा लिया जाता है कि यहां कोई घुंसपैठ नहीं हुई।

यह महत्वपूर्ण बात है कि असम समझौता होने के बाद घुसपैठियों के लिए असम में घुसना बहुत मुश्किल हो गया है। पूर्णियां जिले का तो हर गांव इससे तबाह है। खासकर किशनगंज अनुमडल के ठाकुरगंज, बहादुरगंज, दिघलबेंक टेढ़ागाछ और कोचाधापन प्रखंडों, अररिया अनुमंडल के सिकटी पलासी, अर-रिया अनुमंडल के सिकटी पलासी, अररिया, फारबिसगंज और पूर्णियां सदर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ुमंडल के कई गांवों में भाटिया (बंगलादेशी) मुसलमानों की बाढ़ सी आ
ी है। इनके अतिक्रमण से कई गाँवों के हिन्दु गांव छोड़कर भाग रहे हैं।
कुरगंज प्रखंड के मारूगच्छ ग्राम पंचायत के सरपंच ने बताया कि धाँगी
खर माउलीगच्छ तथा मारूगच्छ गाँवों के ग्रामीण घुसपैठियों के आतंक से
ांव छोड़कर भाग रहे हैं। उनका कहना था कि भाटिया लोग ग्रामीणों की
म्पत्ति और मवेशी धड़ल्ले से लूट रहे हैं मगर पुलिस खामोश है।

इधर कटिहार जिले में भी भाटिया मुसलमानों का खासा अतिक्रमण हुआ
। भाजपा के भूतपूर्व विधायक जगबंधु अधिकारी कहते हैं कि मनिहारी के
विधायक भाटिया मुसलमानों के सरगना हैं और उनके संरक्षण में इन इलाकों
ी आबादी भाटिया मुसलमानों से भर रही है। एक सर्वेक्षण के मुताबिक
कटिहार प्रखंड में १० हजार, कोढ़ा प्रखंड में २० हजार, बारसोई में ३० हजार,
ाजमनगर में २० हजार, परानपुर में १५ हजार, मनिहारी में १५ हजार,
हमदाबाद में २० हजार और बरारी में १५ हजार की संख्या में घुसपैठिये
स चुके हैं।

आदिवासी बहुल साहेबगंज से सटा दुमका जिला है, भाटियों की आबादी
ीरे-धीरे इस इलाके में भी बढ़ती जा रही है।

दिलचस्प बात यह है कि भाटिया मुसलमान स्थानीय पंचायतों के सरपंचों
ी मदद से नागरिकता भी पा लेते हैं। सिर्फ इतना ही नहीं, भाटिया (जिसे
रकार पिछड़ी जाति घोषित कर चुकी है) होने का लाभ उठाकर हरिजनों
े नाम पर दी जाने वाली सरकारी जमीनों की बंदोबस्ती ये अपने नाम से
करवा लेते हैं। किशनगंज अनुमंडल के दिघलबैंक थाना क्षेत्र के लक्ष्मीपुर तथा
ठाकुरगंज प्रखंड के आजमनगर, खखाड़ी आदि गांवों में भाटियों ने हेराफेरी
से तीस एकड़ से भी ज्यादा जमीन अपने नाम करवा ली है। किशनगंज
अनुमंडल के युवा अनुमंडलाधिकारी आदित्य स्वरूप इस बात से इन्कार
नहीं करते।

कोई भी सरकारी अफसर भाटिया मुसलमानों को संरक्षण देने वाले
किशनगंज और अररिया के राजनेताओं का विरोध नहीं कर सकता। इन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाटियों की सुख सुविधाओं के लिए स्थानीय विधायकों ने तो किशनगंज अनु मंडल के पोठिया, ठाकुरगंज, दिघलबैंक, कोचाधावन और बहादुरगंज के प्रखं व अंचल कार्यालयों में सिर्फ मुसलमान अफसरों की नियुक्ति करवायी है किशनगंज के ठाकुरगंज और पोठिया प्रखंडों में तो भाटियों का साम्राज स्थापित होता जा रहा है, नागरिकता हासिल करने के अलावा ये लोग अ सरपंच और मुखिया तक होने लगे हैं। खगड़ा नवाब ने तो अपनी जमीनें ता दान कर रखी हैं, इन विदेशी मेहमानों के लिए।

किसी भी बाहरी आदमी का इन गाँवों में अकेले जाना खतरे से खाल नहीं होता। ये लोग रटी रटायी भाषा में कहते हैं—हम मालदा से आये हैं मेरा घर मुर्शिदाबाद पड़ता है। जब यह संवाददाता 'ढेकसरा' गया तो भाटियों ने यह जानने के लिए घेर लिया कि मैं कोई **देशिल** (हिंदु) तो नहीं हूँ। जब मैंने उन्हें सरकारी आदमी कहकर आश्वस्त **किया तो** एक हट्टे कट्टे भाटिया अब्दुलखुघुस ने मेरे सरकारीपन पर संदेह करते हुए वापस लौट जाने को कहा पर बूढ़े असमल ने हमें बैठाया और कहने लगा—आमार देश बंगाल के मुर्शिदाबाद आश्चे, आमि मालदा से आबो जाहिर बात है कि ये घुसपैठिये देशी मुस्लिम नहीं हैं।

गाहे बगाहे एक महत्वपूर्ण मसला यह भी उठ खड़ा होता है कि इन भाटिया मुसलमानों को इतनी रकम कहाँ से मिलती है। इस सवाल के जवाब में निगाहें उन पेट्रो डालरों पर अटक जाती हैं जो इन इलाकों में मदरसा, मस्जिद और इस्लाम के नाम पर आते हैं और जिनकी खबरों से पिछले दिनों अखबारों में गहमागहमी रही थी।

पूर्णियाँ जिला घुसपैठियों से इतना भर गया है कि यहां की दूसरी जातियां अल्पसंख्यक हो गयी हैं। भाटिया मुसलमानों के अलावा यहां ईरानियों की संख्या भी बहुत ज्यादा है। ये ईरानी खानाबदोश हैं और चश्मा, काजल आदि बेचने का धंधा करते हैं। मगर किशनगंज के मोहल्लों में कई ईरानी परिवार ऐसे हैं जिनके पास एक दो साल में कई एकड़ जमीनें, कार और बंगला सब कुछ हो गया है। सवाल है कि छोटी-मोटी चीजों का व्यापार करके कोई भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यापारी इतने कम दिनों में इतना पैसा कैसे कमा लेगा। स्थानीय नागरिकों ने कई ईरानियों के नाम गिनाते हुए बताया कि ये नेपाल सीमा से तस्करी और चोरी डकैती का काम करते हैं। इनमें कई के घरों में चुरा कर लायी गयी लड़कियां भी रखी जाती हैं। मगर पुलिस प्रशासन खामोश रहता है। स्थानीय प्रशासनिक अधिकारी के अनुसार इन तस्करों बदमाशों को राजनैतिक संरक्षण दिया जा रहा है। आरोप है कि जनता पार्टी के नेता सैयद शहाबुद्दीन की शह पर पूर्णिया जिले के टेढागाछ इलाके में 'क्रांति दल' नामक एक आतंकवादी दल भी काम कर रहा हैं जिसके संचालक याहिया मियां है। स्थानीय प्रशासन पर इनका काफी रोबदाब है। तथाकथित 'क्रांति दल' के बारे में खबर है कि इसके सदस्य लूटमार, धर्मपरिवर्तन, डकैती अपहरण और हत्याओं के दर्जनों कांडों से जुड़े रहे हैं। यह भी बताया गया है कि इसके तमाम सदस्य भाटिया लोग हैं और दल के पास लाखों के विदेशी हथियार हैं।

पूर्णियां कटिहार और साहबगंज जिलों के आदिवासियों पर भी इन भाटिया मुसलमानों ने कहर बरपाये हैं। संथाल आदिवासियों ने इन दिवकुओं का कई दफा जमकर मुकाबला भी किया और कई लोग मारे भी गए। अगस्त ८३ में हुए लक्ष्मीपुर (पूर्णियां) कांड में ५ आदिवासियों को इन भाटिया मुसलमानों ने मौत के घाट उतार दिया था, इसी तरह १९७४ में सिंघीमारी पंचायत में कई लोग मारे गए तथा १९७८ में पूर्णियां के भवानीपुर, धमदाहा क्षेत्र में भाटिया-संथाल संघर्ष ने दंगे का रूप ले लिया था। २१ सितम्बर ८१ को पश्चिमी दीनाजपुर में हुई एक ऐसी ही घटना में ९ भाटिया तथा २ संथाली मारे गये हैं।

संसद में अटलबिहारी वाजपेयी के प्रश्न का जवाब देते हुए तबके गृह राज्य मंत्री निहाररंजन लश्कर ने १६ जुलाई ८२को माना था कि बिहार के पूर्णियां, कटिहार और संथाल परगना जिलों में घुसपैठ हुई है। बाद में केन्द्र सरकार के फरमान पर चुनाव आयोग ने ८३ में बिहार सरकार को इन घुसपैठियों को नागरिकता प्रमाणित करने के बारे में नोटिस जारी की, अकेले पूर्णियां जिले के सात विधानसभाई क्षेत्रों के ऐसे १८०० मतदाताओं के नाम नोटिस जारी की गयी जिन्हें १९८० के बाद मतदाता सूची में शामिल किया गया था। इस छानबीन के क्रम में विशेष पदाधिकारी नियुक्त किये गये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परन्तु साफ निर्देश व नियम के बिना दंडाधिकारियों ने राशन कार्ड 'विधायक' सांसद और मुखिया सरपंचों की सिफारिश और दबाव के कारण इस काम को ठीक से अंजाम नहीं दिया। फिर भी दस हजार लोगों को मतदाता सूची से निकाल दिया गया था।

असम आंदोलन के बाद बिहार के इन सीमावर्ती जिलों में विद्यार्थी परिषद की सुगबुगाहट शुरू हुई। सबसे पहले १९८० में परिषद ने विदेशी घुसपैठ विरोधी संघर्ष समिति गठित की और पूर्णियां में एक सम्मेलन बुलाया गया जिसमें करीब १५ हजार लोग शरीक हुए। आंदोलन का नेतृत्व परिषद के प्रांतीय नेता सुशीलकुमार मोदी, हरेंद्र पांडेय और राजेन्द्र जी ने किया। परिषद के कई कार्यकर्ता जेलों में बंद रहे उसी दौर में कथित संघर्ष समिति ने सर्वेक्षण से एक किताब भी छापी जिस पर बाद में राज्य सरकार ने रोक लगा दी। संगठन के अभाव में परिषद का यह आंदोलन कमजोर पड़ गया है।

सैयद शहाबुदीन ने १९८३ में मतदाता सूची से हटाये गये घुसपैठियों को फिर से शामिल कर लिये जाने की कोशिश शुरू की है। इसका आभास लगते ही बिहार प्रदेश भाजपा के सत्यनारायण दुदानी, रामदास राय और राम नारायण राम ने २२ मार्च ८६ को पूर्णियां और कटिहार इलाकों में घूमकर एक सर्वेक्षण रिपोर्ट दुबे सरकार को दी। मजे की बात है कि सैयद शहाबुदीन ने फिर खुलेआम कहा कि यहां कोई घुसपैठ नहीं हुई। इसके बाद बिहार प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष कैलाशपति मिश्र ने साहेबगंज सहित कई इलाकों का दौरा किया और पटना में ८ अप्रैल को एक पत्रकार सम्मेलन के मार्फत सरकार तथा जातीय राजनीति करने वाले नेताओं को खुली चुनौती दी।

पूर्णियां जिले में मुस्लिम नेताओं के राजनैतिक समीकरण इधर काफी तेजी से बदले हैं। डा० जगन्नाथ मिश्र के साथी ठाकुरगंज के इंका विधायक मोहम्मद हुसैन आजाद का नाम भी इस संदर्भ में लिया जाता है।

कमोवेश ऐसी ही हालत कटिहार जिले की भी है। कुल ७ विधान सभाई क्षेत्रों और एक संसदीय क्षेत्र का यह इलाका घुसपैठियों से भरा पड़ा है और इन्हें शह दे रहे हैं। पांचों मुसलमान विधायक—कदवा के उस्मानी गनी, बरारी के मंसूर आलम, बारसोई की विहुला दोजा, परानपुर को मांगन इन्सान तथा मनिहारी के मुबारक हुसैन-मुबारक हुसैन सिरबदिया मुसलमानों के बीच खासे चर्चित और लोकप्रिय बताये जाते हैं। सन ८४ में जब चंद्रशेखर सिंह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिहार के मुख्यमन्त्री थे, तब इसी लोकप्रिय नेता ने रेलवे ग्राउंड में कौमी एकता सम्मेलन कराके भाटियों की भारी भीड़ जमा की थी और साबित किया था कि भाटिया मुसलमान संगठित हैं तथा इन्हें मुल्क से कोई नहीं निकालेगा। मुख्य अतिथि की हैसियत से चंद्रशेखर सिंह ने यहाँ तक कहा था कि गरीब लोग सारी दुनिया के देशों में काम करने जाते हैं। हमारे यहाँ कुछ मेहमान आये भी हैं तो हम उन्हें दूरबीन लेकर ढूंढ़ने और बाहर निकालने नहीं जायेंगे। उस सभा में कटिहार के साँसद तारिक अनवर भी सदलबल उपस्थित थे, जिन्हें मुसलमानों का नेता होने का गर्व है। उधर साहेबगंज में साँसद श्वेद हेम्ब्रम-पाकुड़ के विधायक हावी मुहम्मद हक और बरहेट के विधायक मंत्री थामस हसदा भाटिया मुसलमानों के बीच अपना चुनावी आधार बनाने में जुटे हुए हैं।

ऐसे में राज्य के मुख्यमंत्री विदेश्वरी दुबे या डा० जगन्नाथ मिश्र को इस बात की क्या पड़ी है कि इन इलाकों की ज्वलंत समस्या पर नजर डालें। वैसे भी तो इनका वोट बैंक बढ़ना चाहिए सो बेरोकटोक बढ़ ही रहा है।

शायद इन राजनेताओं को इस बात से कोई वास्ता नहीं कि १९४२ में किशनगंज में हुए मुस्लिम लीग के सम्मेलन में यह प्रस्ताव पास किया गया था कि बिहार के पूर्णियाँ, कटिहार, संथाल परगना और पश्चिम बंगाल के मालदह, मुर्शिदाबाद और पश्चिम दीनाजपुर सहित २४ परगना जिलों को प्रस्तावित पाकिस्तान में शामिल कर लिया जायेगा। उसके बाद १५ अगस्त ४७ तक इसके समर्थन में आंदोलन भी चलाया गया, तब १७ अगस्त को रेडक्लीफ एवार्ड की घोषणा के बावजूद पूर्वी पाकिस्तान के अधीन मालदह और मुर्शिदाबाद को भारत के साथ रखने के लिए भारतीय सेना को बलप्रयोग करना पड़ा था। शायद हिन्दुस्तान और खासकर बिहार के नेताओं को यह याद नहीं है कि ये वे ही इलाके हैं जिन्हें फिर से मुस्लिम बहुल घोषित करने की दूसरी राजनीति खेली जा रही है, वास्तव में यदि इस पर तत्परता से कार्रवाई नहीं हुई तो कट्टरपंथी मुसलमान इन क्षेत्रों को बंगलादेश में शामिल करने की बात उठा सकते हैं यह भी संभव है कि घुसपैठ का मसला इन इलाकों में असम जैसी स्थितियां पैदा कर दे।

(दिनमान से साभार)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईसाई मिशनरियों का बजट 'अरुणाचलराज्य' से बड़ा है !

—गिरीश भट्टाचार्य

ईसाई मिशनरी किस तेजी से गिरीश भट्टाचार्य हिन्दुओं और जन-जाति बन्धुओं का धर्मान्तरण कर रहे हैं, यह इसी तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि अरुणाचल में इनके ईसाई धर्मान्तरण का बजट अरुणाचल राज्य के सरकारी बजट से अधिक है। चालाकी यह है कि अरुणाचल में धर्मान्तरण की छूट न होने के कारण ये लोग जनगणना में ईसाई धर्म नहीं लिखाते, किन्तु धर्मान्तरण की प्रक्रिया चुपचाप जारी है।

संपादक।

फादर क्रिम पहले पादरी थे जो 1851 में धर्म प्रचार के लिए अरुणाचल आए थे। करीब तीन वर्षों तक आदी एवं मिश्मी जनजातियों में उन्होंने कार्य किया। जब उन्होंने धर्मांतरण की कोशिश प्रारम्भ की, तभी 1854 में मिश्मी राजा कैशा के आदेश पर उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया। इसके पूर्व 1840 में भी रेब्रासन, तिरप जिले की नामसांग बस्तियों में रहे थे परन्तु जन-जातियों में अपने सम्पर्क ठीक प्रकार नहीं बना पाए थे।

सम्भवत: यह भी एक कारण था कि ब्रिटिश शासन ने 1873 में "इनर लाइन रेगुलेशन" लागू कर बाहरी लोगों की आवाजाही को नियंत्रित कर दिया और यह प्रणाली आज भी जारी है।

असम स्थित बालीफड़ा, उत्तरी लखीमपुर, सदिया और मगर रीटा में मिशनरियों के बेस कैंप बनाए। इन बेस कैंपों की बढ़ती गतिविधियां 1953 में भारत सरकार ने अनुभव कीं और पहली बार पादरियों के प्रवेश पर पाबंदी लगाई गई। इसके बावजूद धर्मान्तरण अभियान चोरी-छिपे जारी रहा। 1979 में तत्कालीन एर्जेंसी काउंसिल ने और 1972 में प्रदेश काउंसिल ने सर्व सम्मति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
से प्रस्ताव पारित कर मांग की कि धर्मान्तरण पर रोक के लिए कानून बनाए जाएँ। 1976 में इस सम्बन्ध में एक सम्मेलन भी हुआ। सम्मेलन ने जोरदार शब्दों से कानून बनाए जाने की मांग की। अन्तरिम विधानसभा ने भी प्रस्ताव पारित किया और 1978 में पहली निर्वाचित विधानसभा ने अपनी पहली ही बैठक में धर्मस्वातन्त्र्य विधेयक पारित किया, जो बाद मेंराष्ट्रपति की सम्मति से अधिनियम बना। यह अधिनियम बलात, प्रलोभन या धोखाधड़ी आदि से धर्मान्तरण की प्रक्रिया पर रोक लगाना है।

अधिनियम के विरुद्ध चर्च संस्थाओं ने जिसमें कैथोलिक और प्रोटेस्टेट दोनों शामिल हैं, जेहाद छेड़ रखा है। इसके प्रतिनिधि लगातार गृहमन्त्री को ज्ञापन आदि के जरिए अपना विरोध व्यक्त करते रहते हैं। परन्तु यह कानून बना देने और "इनर लाइन" के बावजूद धर्मान्तरण को रोका नहीं जा सका है। अरुणाचल प्रदेश राज्य कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष की प्रतिक्रिया ध्यान देने योग्य है-"धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है, सभी धर्मों के प्रति समान आदर व सम्मान परन्तु यहां इसकी आड़ में ईसाई संस्थाएँ हमारे विश्वासों, रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं को नष्ट करने का कुचक्र चला रही हैं।"

आश्चर्य तो इस बात का है कि अरुणाचल में कार्यरत ईसाई मिशनरियों का बजट इस राज्य के बजट से कहीं अधिक है। संसद में सरकार की ओर से प्रदत्त एक जानकारी के अनुसार 1976 से 1978 के बीच पूर्वोत्तर क्षेत्र में विदेशी धन अधिनियम के अंतर्गत ईसाई संगठनों को साठ करोड़ रुपए तो केवल विदेशी धन के प्राप्त हुए।

अरुणाचल के समानांतर भूटान से वर्मा सीमा तक असमी क्षेत्र में करीब बारह सौ किलोमीटर लम्बी और तींस किलोमीटर चौड़ी तराई पट्टी में ईसाई संस्थाएँ फैली हुई हैं।

मुख्यमन्त्री श्री अपांग बताते हैं. "पादरियों के निर्देश पर अधिकांश धर्मान्तरित लोग जनगणना में अपना धर्म ईसाई नहीं लिखवाते। पिछली जनगणना के अनुसार अरुणाचल में कोई ईसाई नहीं है। राज्य सरकार ने यह कोशिश की कि ईसाई लोगों की जिलेवार सूची बना कर उन्हें अल्पसंख्यक सुविधाएँ दी जाएँ, परन्तु यह प्रयास विफल रहा है। □□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

म० प्र०

बस्तर में धर्म प्रदेश बनाने की तैयारियाँ

—प्रभात झा

बस्तर के भाग्य से जुड़े पिछड़े और वहां ईसाईयत के फैलते प्रभाव पर न जाने कितनी रपट और लेख न्यौछावर किये जा चुके हैं। न जाने कितनी बार जन प्रतिनिधियों ने इसे सदनों के भीतर उठाकर हंगामा किया है। न जाने कितनी स्वयंसेवी और सामाजिक संस्थाओं ने अपनी सारी शक्ति इस क्षेत्र में खपा दी है! मगर इन सबसे दूर बस्तर के घने जंगलों में दूर-दूर स्थित गांवों में एक षडयन्त्र विदेशी पैसे की मदद से गति से बढ़ रहा है। बस्तर की सीमाओं को छूते आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और उड़ीसा के हिस्सों को मिलाकर एक पृथक 'धर्मप्रदेश' बनाने की तैयारियां बड़ी तेजी से मगर गुपचुप जारी हैं। इस विशाल इलाके को ईसाईयत के रंग में रंग कर पृथक राज्य का दर्जा देने की मांग सफल हो, इसके लिए कई एकड़ जमीन के गर्भ में एक विशाल चर्च का निर्माण चल रहा है। यह चर्च इस प्रकार से बनाया जा रहा है कि आने वाले संभावित संकट के समय में यह किले का काम दे सके।

शोर शराबे से दूर इस गहरे षडयन्त्र के दूसरे हिस्से में बड़ी सख्या में धर्मपरिवर्तन कराने का कार्य जारी है। आजादी के समय जहाँ इस क्षेत्र में केवल 28 ईसाई थे, आज इनकी संख्या 14 हजार तक जा पहुंची है। स्कूलों और अस्पतालों के बाद अब 'लहर' और 'परिवर्तन' जैसी संस्थायें बनाकर मतावलबियों की संख्या बढ़ाने की कोशिशें तेज कर दी गयी हैं।

कोई अचरज की बात नहीं होग यदि आने वाले समय में इस क्षेत्र में भी एक पृथक् राज्य की मांग उठ खड़ी हो जिसका आधार धार्मिक हो। यह तय है कि इस संभावित संघर्ष का हश्र ठीक नहीं होगा, न तो इस प्रदेश के लिए और न ही देश के लिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बस अड्डा हटा, जमीन चर्च को

जगदलपुर शहर से लगभग एक किलो मीटर दूर पर कभी मध्यप्रदेश राज्य परिवहन निगम का एक बस अड्डा हुआ करता था। जब यह अड्डा वहाँ से हटाया गया तो वह भूमि ईसाई मिशनरी लोगों ने एक धनाढ्य व्यक्ति के माध्यम से खरीदने में सफलता प्राप्त कर ली। इस बात की खबर स्थानीय लोगों को तत्काल तो नहीं लग सकी मगर जब इस इलाके में मिशनरी के धर्म प्रचारकों का जमाव बढ़ना शुरू हुआ तो यह राज खुला की यहाँ एक विशालकाय भूमिगत चर्च बनाया जाना हैं। यह राज जब खुला तब बात बहुत बढ़ चुकी थी और उसे टाल पाना किसी भी तरह संभव नहीं था।

यूं तो बस्तर में इस तरह की गतिविधियाँ चलना आम बात थी, मगर इन्हें लेकर शंकाओं का उठना तब से शुरू हुआ जबसे कुछ ऐसे प्रशासनिक अधिकारियों ने इन गतिविधियों का जायज-नाजायज तरीकों से लाभ पहुंचाना शुरू किया। बताया गया है कि बस्तर में कुछ वर्षों पूर्व आयुक्त नियुक्त किये गये थे, जो कि ईसाईयत से जुड़े रहे थे तथा उसके प्रति गहरी आस्था भी रखते थे। उन्होंने बड़े पैमाने पर यहाँ ईसाई मिशनरियों को स्थापित करने का कार्य किया। इसके बाद से यह सिलसिला तेजी से चल निकला। ईसाई मिशनारियों ने अपने सम्पर्क वाले सांसदों और मंत्रियों के जरिये ऐसे प्रशासनिक अधिकारियों को बस्तर क्षेत्र में नियुक्त कराना प्रारंभ करवाया जो कि किसी न किसी प्रकार ईसाईयत से जुड़े हों। इस विधि ने इस क्षेत्र में इन मिशनरियों को कितना लाभ पहुंचाया इसकी पुष्टि गत वर्षों के आंकड़ों से की जा सकती है जो ये बताते हैं कि कितनी तेजी से यहाँ मिशनरियों की चल और अचल संपत्ति में वृद्धि हुई हैं।

'धर्म प्रदेश' का वास्तविक क्षेत्र कितना बड़ा होगा यह तो अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो पाया है मगर जगदलपुर से जहाँ जहाँ तक सीधा सड़क मार्ग उपलब्ध है, वहां-वहां तक ईसाई धर्मप्रचारकों को फैला दिया गया है। उड़ीसा, आंध्रप्रदेश और महाराष्ट्र के उन सीमावर्ती जिलों में, जहां जगदलपुर से सीधे पहुंचा जा सकता है, ईसाई मिशनरियों ने अपनी योजना का ताना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाना बखूबी बुन लिया है। भारी सुविधाओं और धन सम्पत्ति के साथ इस पूरे क्षेत्र में सामाजिक कार्यों की योजना बद्ध तथाकथित क्रांति शुरू कर दी गयी है।

ईसाई मिशनरियों का धर्म परिवर्तन कराने का तरीका भी अपना ही विशिष्ट तरीका है। उन्होंने इस क्षेत्र में धर्म परिवर्तन के लिए उस तबके को सबसे पहले चुना जो कि न केवल आर्थिक दृष्टि से विपन्न था, बल्कि जिसे समाज में घुलने-मिलने का भी कोई मौका नहीं मिल सका था। वस्तर क्षेत्र के 'महरा' नामक हरिजन वर्ग के लोगों को ईसाई बनाने की प्रक्रिया में मिशनरियों ने अब तक लगभग 15 हजार लोगों का धर्म परिवर्तन करा दिया है। और अभी शेष 70 हजार लोगों का धर्म परिवर्तन कराने की कोशिश चल रही है। यह भी उल्लेखनीय है कि मिशनरियां इस वर्ग में धर्म परिवर्तन के लिए इसी वर्ग के धर्म प्रचारकों का इस्तेमाल कर रही हैं।

धर्म परिवर्तन के इस दौर में अभी तक यहां के मूल आदिवासी अछूते रहे हैं। हालांकि ईसाई मिशनरियों का मुख्यलक्ष्य इन्हीं लोगों का धर्म परिवर्तन करना है, क्योंकि इस क्षेत्र में इन्हीं की संख्या सबसे ज्यादा है, मगर उन्हें इस कार्य में अब तक सफलता नहीं मिल सकी है।

सफलता न मिलने का कारण आदिवासियों की सर्वाधिक पूजनीय देवी माई दन्तेश्वरी है। आदिवासी इस देवी को जान से भी अधिक चाहते हैं और वे देवी को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। ईसाई मिशनरियों को यह गंवारा नहीं है कि आदिवासी ईसाई बनने के बाद भी माई दन्तेश्वरी की पूजा करें। लोग इसे माई दन्तेश्वरी का ही कमाल मानते हैं। माई दन्तेश्वरी के प्रति आदिवासी कितनी अधिक श्रद्धा रखते हैं, इस बात का अन्दाजा इसी से लगाया जा सकता है कि रोगशैय्या पर पड़े आदिवासी मरीज का यदि कोई चिकित्सक, दवाई देता है तो आदिवासी उसे भी माई दन्तेश्वरी के सामने रख देते हैं, और अपनी विधि के अनुसार पूजा करने के बाद यदि माई दन्तेश्वरी की आज्ञा मिल गयी तब तो वह दवाई उस मरीज को खिला देंगे, और यदि माई ने अनुमति नहीं दी तो वे दवाई नहीं देंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
आदिवासियों के बीच कार्यरत शासकीय चिकित्सकों की स्थिति तो यह है कि यदि उन्होंने आग्रह पूर्वक किसी आदिवासी के घर में पड़े मरीज को दवाई खिला दी और वह एक दो दिन में ठीक नहीं हुआ तो उस चिकित्सक की फिर खैर नहीं है।

वहीं दूसरी ओर इस क्षेत्र में आदिवासियों के बीच, वनवासी कल्याण परिषद द्वारा भी निरंतर उनके मन में उनके धर्म के प्रति जाग्रत करने का काम शुरू कर दिया गया है राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से प्रेरित संस्थाओं द्वारा एक नहीं, अनेक ऐसी योजनायें प्रारम्भ की गयी हैं। इन संस्थाओं के लोग इन हरिजन आदिवासियों को बताते हैं कि वे हिन्दू हैं, उनकी अपनी संस्कृति है, उनका देश भारत है, भारत माता उनकी मां है, और वे इसी देश और समाज के अभिन्न अंग हैं। वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा परावर्तन कार्यक्रम चलाया जा रहा है जो हरिजन गरीबी या अस्पृश्यता से त्रस्त होकर धर्म परिवर्तन कर चुके हैं, उन्हें पुनः हिन्दू समाज में शामिल किया जा रहा है।

इस दृष्टि से भी भारी सफलता मिल रही है। जो लोग ईसाई मिशनरियों की घातक हरकतों से अवगत हो जाते हैं वे तत्काल उन्हें तिलांजलि देकर लौट आते हैं। स्थानीय जिला प्रशासन ने भी बताया कि पूर्व में जो लोग एक बार धर्म परिवर्तन कर चुके हैं, उनके बारे में उन्हें जानकारी मिली है कि उनमें से कुछ लोग पुनः अपने धर्म और संस्कृति को अपना रहे हैं।

स्थानीय वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों ने यह भी स्वीकार किया कि यहाँ भी एक विशालकाय भूमिगत चर्च बन रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि इन मिशनरियों द्वारा धर्म के नाम पर बस्तर जिले में अनेकों ऐसी जमीनों पर अवैध कब्जे किये गये हैं जो पूरी तरह से सरकारी हैं। प्रशासनिक अधिकारियों ने कहा कि वे कुछ कारगर कदम उठाने की सोचते भी हैं तो उन्हें किन्हीं कारणों से कारगर कदम न उठाने के मौखिक आदेश भी मिल जाते हैं।

(स्वदेश 5 अप्रैल, 1988 से साभार)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यजुर्वेद चत्वारिंशो अध्याय

(भाषा पद्यानुवादक—शिव कुमार रैकवार "बहराइच)

ईशा वास्यमिदं सर्वं···मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥ १ ॥

—इस नाशवान जग का हर एक कण सचल है।
व्यापक समान सबमें प्रभु एक रस अचल है॥
जग के समस्त वैभव स्थिर नहीं हैं किंचित्।
कर्मानुसार मिलते प्रभु की कृपा से सिंचित॥
इस हेतु त्याग पूर्वक उपभोग आमरण कर।
मत अन्य किसी का धन जीवन में अपहरणकर॥

कुर्वन्नेवेह कर्माणि·····न कर्मलिप्यते नरे ॥ २ ॥

—रे जीव ! इस जगत में शुभ कर्म तू किये जा।
सौ वर्ष तक निरंतर प्रभु प्रेम रस पिये जा॥
अतिरिक्त इसके रे नर ! जग अन्यथा नहीं है।
निर्लेप मन रहे तो कोई व्यथा नहीं है॥
उपदेश वेद का यह धारण जो तू करेगा।
निश्चय स्व, धन्य जीवन संसार में करेगा॥

—असुर्या नाम ते लोका···ये के चात्म हनो जनाः ॥३॥

—अज्ञान घन तिमिर से वे लोक ढ़के जग में।
गति आसुरी प्रकृति में रत स्वार्थ-मोह मग में॥
जीवन जगत् में क्योंकर यह ज्ञान नहीं जिनको।
कर्त्तव्य जन्मदाता के प्रति न भान जिनको॥
विषयों में लिप्त रह कर वे आत्म हनन करते।
फिर प्रेतयोनि को ही मरकर हैं चयन करते॥

अनेजदेकं मनसो जवीयो···मातरिश्वा दधाति ॥४॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—गति को गति देने वाला, मन से भी द्रुतगति वाला।
लांघ रहा सबकी गति को सबको गति देने वाला॥
ये अल्पज्ञ इन्द्रियां उसको कभो जान सकती क्या।
सीपी सागर का अथाह जल कभी नाप सकतीं क्या॥
जलवायु गर्भस्थ, मातृवत् प्रभु धारण करता है।
जैसे जीव गर्भ में धारण कर्म किया करता है॥

तदेजति तन्नैजति ···· तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥५॥

—गति शील वह जगत् में, अज्ञानी मानते हैं।
लेकिन अचल अचंचल विज्ञानी जानते हैं॥
हैं मूर्ख जो समझते प्रभु दूर बहुत हमसे।
सर्वत्र सर्व व्यापक ध्यानी ही मानते हैं॥
भीतर है और बाहर वह अतिनिकट हमारे।
उसकी अपार महिमा ज्ञानी ही जानते हैं॥

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेव—ततो न विचिकित्सति ॥६॥

—विद्वान सुधी जन ही आनन्द रस को चखते।
भौतिक पदार्थों को विश्वात्मा में लखते॥
सब जीव में जगत् में कण-कण में ईश दर्शन।
निज आत्मा में उसकी छवि निरखते ज्यों दर्पन॥
जो आत्मवत् समझते इस चर अचर जगत को।
संशय विमुक्त होकर पाते हैं मोक्ष गति को॥

यस्मिन्त्सर्वाणि ······· एक त्व मनुपश्यतः ॥ ७ ॥

—आत्म विज्ञानी की उस स्थिति का क्या वर्णन करें।
प्राणिमात्र में आत्मा का आत्मवत दर्शन करें॥
समभाव एक समान सबमें भास उसको हो रहा।
निज क्लेश सम पर क्लेश का आभास जिसको हो रहा।
इस अवस्था में नहीं भ्रम शोक मोह विक्षेप है।
आत्म विज्ञानी जगत में विचरता निर्लेप है॥

सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रण ····· श्वतीस्यः समाभ्यः ॥८॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

— इस जगत् का रचयिता परमात्मा स्वयंभूः ।
व्रण रहित, देह, नाडी से मुक्त पर शंभू ।।
पापों से नहीं बिधता वह शुद्ध, बुद्ध, अनुपम ।
सबके मनोभावों को है जानने में सक्षम ।।
सर्वज्ञ, सर्वज्ञाता, सर्वोच्च श्रेष्ठ नामक ।
भौतिक पदार्थों का शाश्वत्, उचित विधायक ।।

अन्धंतमः प्रविशन्ति · · · · सम्भूत्याछंरताः ।।९।।

—जो प्रकृति उपासते सुख प्राप्ति हित वे भूलकर ।
घोर तम में भटकते वे कष्ट पाते शूल कर ।।
और इससे भी गिरी गति प्राप्त करते लोग वे ।
कार्य रूपी सृष्टि के वश भोगते दुःख भोग वे ।।
श्रेष्ठ सर्वोपरि विधाता ब्रह्म केवल एक है ।
मात्र ध्यान उपासना उसका, ही सत्य विवेक है ।।

अन्य देवाहुः सम्भवादन्य · · · नस्तद्विचक्षिरे ।।१०।।

कार्य जग से अन्य फल कारण जगत् फल अन्य है ।
उभय जगत उपासना परिणाम भी दुःख जन्य है ।।
किन्तु जड़ मतिमंद इससे पृथक् अन्य न मानते ।
सर्व सुख की खान कारण-कार्य जग ही जानते ।।
धीर पुरुषों ने किया कल्याण हित उपदेश है ।
सृष्टि और प्रकृति से उत्कृष्ट वह अखिलेश है ।।

सम्भूतिं च विनाशं च······सम्भूत्यामृत मश्नुते ।। ११ ।।

सृष्टि का सद्ज्ञान जिनको मृत्यु की पहचान है ।
कार्य कारण सूक्ष्म कारण इस जगत् का ज्ञान है ।।
कर रहा है प्राण वायु को धारण पवन ।
प्राण आत्मा अमृत कोष अक्षय भवन ।।
तन से प्राण आत्मा का निकलना है मरन ।
इसलिए हे जीव कर ओ३म् का तू स्मरन ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसलिए भ्रम में कभी विद्वान जन पढ़ते नहीं ।
सृष्टि और प्रकृति में ही भूल कर रमते नहीं ॥
मृत्यु भय से अभय सदज्ञानी पुरुष के आप्त हैं ।
कार्य रूपी जगत् से अमरत्व करते प्राप्त हैं ॥

अन्धन्तमः प्रबिशन्ति······विद्याया छं रताः ॥ १२ ॥

अविद्या अज्ञानता के उपासक जन भूलकर ।
घोरतम में भटकते हैं कष्ट पाते शूल कर ॥
और इनमें भी अधम गति प्राप्त करते लोग वे ।
मात्र विद्या में रमे हैं भोगते दुःख भोग वे ॥
किन्तु विद्या अविद्या से सत्यविद्या अन्य है ।
जानता जो ब्रह्म विद्या जीव जग में धन्य है ॥

अन्य देवाहुर्विद्यया अन्य .... नस्तद्विच चक्षिरे ॥१३ ॥

मात्र विद्या ज्ञान का परिणाम जग में अन्य है ।
अरु अविद्या कर्म का परिणाम होता अन्य है ॥
किन्तु जड़मतिमंद पामर पृथक इसे न मानते ।
दम्भ वस विद्या अविद्या झूठ को सच जानते ॥
धीर पुरुषों ने किया कल्याण हित उपदेश है ।
ज्ञान से और कर्म से उत्कृष्ट वह अखिलेश है ॥

विद्यां चा विद्याँ च यस्तद्वेदो . . . विद्ययामृतमश्नुते ॥ १४ ॥

जानते विद्या अविद्या का सही परिणाम जो ।
ज्ञान-कर्म सहित निरन्तर उर्ध्वगति अविराम जो ॥
मृत्यु का भव सिन्धु करते पार वे शुभ कर्म से ॥
और करते प्राप्त अमृत ज्ञान रूपी धर्म से ॥

अतः विद्या अविद्या का न कर नर अभिमान तू ॥
लक्ष्य इस जोवन का अपना ब्रह्म विद्या मान तू ।

वापुरनिलममृतमथेदं : · ओ३म् स्मर
। किल्वेसार । कृत—स्मर ॥१५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आत्मिक शक्ति हित ओ३म् का स्मरन् ।
जो किये कर्म उनका तू कर अब स्मरन् ।।
अग्नेनय सुपथाराये——नम उक्तिं विधेम ।। १६ ।।
—हे अग्रनायक स्वप्रकाशक परम प्रभु परमात्मा ।
तव कृपा सद्ज्ञान से होवे प्रकाशित आत्मा ।।
देव सारे कुटिल दुष्कर्मों से हमको दूर कर ।
सुपथ पर ले चल सकल ऐश्वर्य से भरपूर कर ।
इसलिए विनयावनत स्तुति प्रभो हम कर रहे ।।
आपका आश्रय मिले आनन्द जीवन भर रहे ।।
हिरण्मयेन पात्रेण · · · · सोऽसावहम । ओ३म् खं ब्रह्म ।। १७ ।।
—स्वर्णादिक भौतिक पदार्थ के परदे में है सत्यस्वरूप ।
व्यापक सूर्यादि लोकों में शब्द रूप वह ब्रह्म अनूप ।
सर्वशक्ति सम्पन्न सभी का रक्षक श्रेष्ठ नाम है ओ३म् ।
वही जानने योग्य सभी के परम पुरुष वह ही है सोम ।।
उसे भूलकर अन्धकूप में पड़ा हुआ तू अज्ञानी ।
खोल आवरण लख स्वरूप उस परम ब्रह्म का अभिमानी ।। १८ ।।

पृष्ठ १०६ का शेष
को अपनी सांस्कृतिक विरासत बता कर गर्व महसूस करते हैं, उन्हें देखने के लिये विदेशियों को आमंत्रित करते हैं तो दूसरी ओर विज्ञापनों में नारी देह का प्रदर्शन देखकर बिदकने लगते हैं। इस दोहरी मानसिकता का बोझ हम कब तक ढोते रहेंगें हम गंभीरता से विचार करें तो पायेंगे उपर्युक्त दलील में रंचमात्र भी दम नहीं है। अजता, एलोरा औरकोणार्क की मूतियां मूर्ति कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। कला की उस गहराई को-पश्चिमी रंग में रंगे उपर्युक्त तर्क देने वाले बन्धुओं को समझ पाना मुश्किल है। उन्हें तो मात्र उन मूर्तियों का नंगापन ही दृष्टि-गोचर होता है।

कुछ अन्य बन्धु विज्ञापन में नारी शरीर के दुरुपयोग को व्यवसायिकता की दुहाई देते हुए उचित ठहराते हैं। परन्तु हमें जानना चाहिए कि व्यवसायिकता का अर्थ सभ्यताहीन नंगापन नहीं होता। प्रचार की सारी क्रांति आज नारी देह के अगल-बगल मडरा रही है। इस कुप्रवृत्ति को रोकना ही होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न्यायालय और न्यायालयों पर कुछ विचार

जो आदमी सहसा किसी बात का निर्णय कर दे, वह धर्म स्थित नहीं कहलाता। जो पण्डित जब अर्थ, अनर्थ दोनों का अच्छी तरह विचार कर, धीरज के साथ, निष्पक्ष होकर न्याय करता है, वही मेधावी धर्म रक्षक और धर्म स्थित कहलाता है।

'भगवान बुद्ध"

छात्र जीवन में सुना था कि वकील का काम बिना झूठ बोले नहीं चल सकता, परन्तु इसका मुझ पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। जहाँ तक मुझे याद है, वकालत करते हुए मैंने असत्य का प्रयोग नहीं किया और आमदनी का एक बड़ा हिस्सा केवल लोक-सेवा के लिए अर्पित कर देता था। मवक्किल से भी पहले ही कह देता था कि यदि मामला झूठा हो तो मेरे पास न आना गवाहों को बनाने काम करने की आशा मुझसे न रखना आगे जाकर तो मेरी साख हो गई थी कि कोई झूठा मामला मेरे पास आता ही नहीं था। मैंने यह भी अनुभव किया कि मेरे सत्य पालन का प्रभाव मेरे साथी वकीलों पर भी अच्छा ही पड़ा।

लोग दूसरों का दुख दूर करने के लिए नहीं, बल्कि पैसा पैदा करने के लिए वकील बनते हैं। इसलिए वकील का स्वार्थ झगड़ा बढ़ाने में है इससे वह खुश होते हैं। उनके दलाल जोंक की तरह गरीबों पर चिपकते हैं और उनका खून चूस लेते हैं........जो शब्द मैं वकीलों के लिए इस्तेमाल करता हूं, वे ही शब्द जजों को भी लागू होते हैं। ये दोनों मौसेरे भाई हैं और एक दूसरे को बल देने वाले हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

अदालतों में मुकदमें इतने लम्बे खींचे जाते हैं कि आज न्याय के प्रशासन में विलम्ब होना एक अपवाद होने के बजाय नियम बन गया है। धनी लोग प्रभावशाली वकीलों को जुटा लेते हैं। और वे मामले को लटकाने के लिए दांव पेच चलाते रहते हैं। न्याय देने में देश की गरीब जनता की उपेक्षा की जा रही है। यदि उचित एवं त्वरित न्याय उपलब्ध न कराया गया तो देश की जनता कानून अपने हाथों में ले लेने को बाध्य हो जायेगी।

श्रीमती इन्दिरा गांधी भू० पू० प्रधान मंत्री भारत सरकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न्यायालयों में निर्दोष व्यक्तियों को केवल परेशान करने के लिए झूठे दावे दायर करने की बुराई हमारे देश में बड़ती जा रही है। इस बुराई को खत्म करने की आवश्यकता है झूठे दावे दायर करने वालों को सख्त सजा देनी चाहिए। (उपराष्ट्रपति श्री हिदायतुल्लाह भारत के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश)

अगर समाज में कानूनी प्रक्रिया के माध्यम से परिवर्तन नहीं होता तो यह केवल रक्तपात के माध्यम से होगा। अदालतों में मुकदमों को निबटाने में देरी केवल विलम्ब नीति से नहीं होती बल्कि इसके अन्य अनेक कारण हैं। एक दल का वकील हो जाने के बाद वे दूसरे दल से सम्पर्क करते रहते हैं तथा कभी-कभी न्यायाधीशों को भी ऐसे मामलों में सम्बद्ध करते हैं, मुकदमों की बड़ी संख्या ने न्याय को निरर्थक बना दिया है। हमें मुकदमों के त्वरित निपटारे के लिए प्रभाव पूर्ण उपाय खोजने और उन्हें क्रियान्वित करने पर जोर देना चाहिए। (न्याय मूर्ति श्री वाई वी चन्द्रचूड़ मुख्य न्यायाधीश"

अदालत में विचाराधीन मुकदमों की बड़ी संख्या चिन्तनीय है मुकदमों के निपटाने में देरी वकीलों की विलम्ब नीति के कारण होती है जिससे जनता को भारी कठिनाई होती है। जहां एक और आम लोगों को सस्ता व उचित न्याय उपलब्ध नहीं हैं वही दूसरी ओर पैसे व प्रभाव का उपयोग कर अपराधी वेदाग बच जाते हैं। परिणाम स्वरूप अराजकता में वृद्धि हो रही है।

(श्री जगन्नाथ कौशल भू० पू० केन्द्रीय विधि मन्त्री)

देश में न्यायपालिका के प्रति विश्वास में क्रमशः आती जा रही कमी को दूर कर इसे दृढ़ करने की जरूरत है। पहले लोग अदालत के कमरों की दीवार पर माथा टेककर न्याय में अपना विश्वास व्यक्त करते थे। आज इस भावना और विश्वास में कमी होती जा रही है।

(न्याय मूर्ति श्री कामता नाथ सेठ)

न्याय का तात्पर्य यह है कि किसी भी व्यक्ति के साथ अन्याय न हो तथा सही व्यक्ति को न्याय अवश्य मिले। न्यायालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए अधिकारियों तथा वकीलों, दोनों को प्रयत्न करना चाहिए। (न्यायमूर्ति श्री बी. एन. सप्रू भू० पू० प्रशासकीय न्यायाधीश)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह भी देखने में आया है कि अदालतों में वकालत करने वाले अधिकांश अभिवक्ता अब कानूनी दांव-पेंच में उलझने के स्थान पर जजों और मजिस्ट्रेटों से व्यक्तिगत सम्बन्ध बढ़ाकर इच्छानुमार न्याय प्राप्त करना अधिक लाभकर समझने लगे हैं। अदालतों में कार्यरत अधिवक्ताओं में से प्रायः हर तीसरा अधिवक्ता यह कहकर मुवक्किल को ठगता देखा जा सकता है कि अमुक जज साहब से उसके बहुत अच्छे सम्बन्ध हैं, वह एक निश्चित धनराशि उन्हें पहुंचाने के बाद न्याय बादकारी की अभिलाषा के अनुरूप करा सकता है। न्याय की इस खरीद, की सम्भावना से उत्तर प्रदेश में फौजदारी मुकदमों में तेजी के साथ वृद्धि हो रही है।

(श्री वेद अग्रवाल दैनिक जागरण २३, ६, ८३)

निःशुल्क न्याय प्रदान करना राज्य का दायित्व है, पर इससे भी बड़ा दायित्व त्वरित न्याय प्रदान करना है। अब प्रश्न उठता है कि इस अदालती शुल्क समाप्त कर देने से भारत की गरीब जनता को न्याय मिल सकेगा ? इसकी सम्भावना कम ही लगती है। यदि किसी प्रकार त्वरित न्याय नहीं मिल सकता, तो अदालती शुल्क हटाना, बढ़ाना या घटाना कोई महत्व नहीं रखता।

इसके साथ यह भी जरूरी है कि अनावश्यक मुकदमों को दर्ज करने पर रोक लगे। अक्सर होता यह है कि कुछ अधिवक्ता कानून की भाषा का लाभ उठाकर दूसरों को तंग करने के लिए ही झूठे मुकदमे दर्ज करा देते हैं।

श्री अरुण शर्मा दैनिक जागरण

हमारा राष्ट्रीय वाक्य है सत्यमेव जयते, लेकिन वास्तविकता असत्यमेव जयते है।

सदाचार की स्थापना से ही हमारा देश उन्नति कर संसार में सच्चे अर्थों में सम्मानयुक्त शक्तिशाली तथा सुखी हो सकता है, न कि सैनिक शक्ति की वृद्धि और विदेशी आर्थिक सहायता से। शक्ति पूजा का अर्थ है कि हम अपने अन्दर शरीर और बुद्धि की शक्ति की वृद्धि करके, चरित्रवान बनकर, संगठित होकर बुराई का विरोध करें, और समाज में अच्छा वातावरण बनायें।

(ओंकार नाथ पुरी दुर्गावाड़ी के सामने गोरखपुर (उ० प्र०)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विज्ञापन में नारी शरीर क्यों

–राजीव मिश्र

आज हम भारत वर्ष के किसी भी प्रांत में किसी भी शहर अथवा कस्बे की किसी सड़क पर चले जायें, हमें उसके किनारों पर नारी शरीर का भौंडा चित्र किसी वस्तु का विज्ञापन करता दिखाई पड़ जाएगा। विज्ञापनों के पोस्टरों में नारी देह का नंगापन दिखाना इस कदर बढ़ गया है कि विज्ञापित वस्तु का चाहे नारी से कोई सम्बन्ध न भी हो परन्तु हम तो उसका शरीर दिखालायेंगे ही का भाव प्रदर्शित होता है।

वर्तमान युग को हम आर्थिक युग अथवा विज्ञापन का युग भी कह सकते हैं। उत्पादित वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने के लिये विज्ञापन जरूरी हो गया है। प्रतिस्पर्धायें बढ़ गई हैं। परन्तु यह स्पर्धायें हमें कितना नीचे गिरा सकती हैं वह हमें आज दिखलाई पर रहा है। विज्ञापन की विधा हमने पश्चिमी जगत से ली है साथ ही साथ नारी शरीर के दुरुपयोग की आदत भी हमने वहीं (पश्चिमी जगत) से ली है। हम इस आदत को इतना अपना चुके हैं कि हमारी सरकार भी इसी माया में उलझ कर रह गई है। उदाहरण के लिये हम दूर-दर्शन को देख सकते हैं।

हम इस युग में विज्ञापन की आवश्यकता को समझते हैं परन्तु हम आवश्यक कार्य में नारी शरीर के दुरुपयोग को उचित समझते हैं। यह भारतीय संस्कृति के साथ खिलवाड़ है। हम निहायत गलत रास्ते पर चले जा रहे हैं। हमें सचेत हो जाना चाहिए और उपयुक्त रास्ता अख्तियार करना चाहिए।

वस्तुओं के विज्ञापन के लिये नारी शरीर के अतिरिक्त तरीके अपनायें जा सकते है इसके लिये हमें अपनी सोच में परिवर्तन लाना पड़ेगा।

हमारे कुछ बन्धु इस विज्ञापन की नग्न दौड़ को उचित साबित करने के लिये तर्क देते हैं कि हम एक ओर अजंता, एलोटा और कोणार्क की मूर्तियों

(शेष पृष्ठ १०२ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा या राष्ट्र रक्षा ?

—निरंजन सिंह प्रेम "प्रभाकर"

परमादरणीया बहन राकेश रानी जी की कृपा से फाल्गुन २०४४ की जनज्ञान पत्रिका पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। "इतिहास से शिक्षा लें" नामक सम्पादकीय लेख से लेकर महात्मा वेदभिक्षु: जी की अमरवाणी, ईसाईलैण्ड बनाने का षड्यन्त्र" 'काश ५० सांसद ईमानदार होते," "राष्ट्रीय एकता के बारे में गांधी जी के विचार" आदि अमृत वाणियों से यह 'जनज्ञान' पत्रिका भरी पड़ी है।

पत्रिका के अन्त में हिन्दू रक्षा समिति की ग्यारह माँगें भी प्रथम बार पढ़ने को मिली, जिन्हें पढ़ कर गहराई से विचार किया। गत ५० वर्षों में कांग्रेसी वातावरण में रहते हुए हिन्दू-मुस्लिम आदि धर्म-सम्प्रदाय की राजनीति से मैं राष्ट्र की हानि मानता रहा हूँ। इसीलिए इन ग्यारह माँगों कोगम्भीरता से पढ़ा और पाया कि ये ग्यारह माँगें हिन्दू रक्षा के लिए नहीं अपितु राष्ट्र रक्षा के लिए हैं। मैं प्रथम तुष्टीकरण की नीति के त्याग, को ले रहा हूँ। इस एक नीति ने राष्ट्र भक्त स्वतन्त्रता सेनानी नेताओं को पीछे छोड़ कर मुहम्मद अली जिन्ना को भारत के मुसलमानों का एक मात्र नेता बना दिया था और अंग्रेज भक्त मुस्लिम लीग को एक मात्र मुस्लिम संस्था बना दिया। जिसका परिणाम हुआ देश का बँटवारा।

पाकिस्तान मुस्लिम देश बन गया और दूसरा बचा हुआ हिस्सा हिन्दू देश न बनकर सेकुलर (धर्मनिरपेक्ष) देश भारत बन गया। नब्बे प्रतिशत मुसलमानों ने पाकिस्तान के पक्ष में मतदान करके भारतवासी होने के अपने अधिकार स्वयं खो दिये थे, इसलिए उनके तुष्टीकरण से भारत राष्ट्र की धर्मनिरपेक्षता को ही हानि नहीं पहुँचती बल्कि राष्ट्र की एकता और अखण्डता को भी खतरा होता है।

केवल वोट बैंक बनाने के लिए राजनीतिक पार्टियाँ किस हद तक नीचे जा सकती हैं यह रामजन्म भूमि बाबरी मस्जिद तथा शाहबानों केस और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुस्लिम महिला रक्षा विधेयक के समय देखने को मिली। जनता पार्टी के सम्मानित संसद सदस्य शहादुद्दीन साहब डेढ़ करोड़ सिक्खों की अपेक्षा बारह करोड़ मुसलमानों की शक्ति का भय दिखा रहे थे और साथ में एक-दो राष्ट्रभक्त मुस्लिम संसद सदस्यों को छोड़कर सभी राजनीतिक दलों के मुस्लिम संसद सदस्यों एवं कांग्रेस सरकार के मन्त्रीगण तक ने शाहबानों के मुकदमें को लेकर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को मुसलमानों के अधिकारों में हस्तक्षेप बताया और कांग्रेस की धर्मनिरपेक्ष सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को मुस्लिम विरोधी मान कर एक नया कानून 'मुस्लिम महिला सुरक्षा नाम का विधेयक पास किया और कांग्रेस दल की धर्म निर्पेक्षता का दिवाला निकाल दिया इस विधेयक के अनुसार तलाक शुदा मुस्लिम महिला को पति से किसी प्रकार का धन प्राप्त करने का अधिकार नहीं रहा। वह केवल अपने माता-पिता भाई एवं अन्य दूर तक के रिश्तेदारों से धन लेकर जीवन चला सकती है। इस प्रकार परित्यक्ता मुस्लिम महिला को कानून द्वारा दर-दर का भिखारी बना दिया। इससे कांग्रेस सरकार ने मुसलमानों को अपने पक्ष में लाने का प्रयास किया जो सर्वथा निन्दनीय और घोर साम्प्रदायिक प्रयास है।

ऐसा ही अल्प संख्यक बहु-संख्यक विवाद है। सभी भारत वासियों के लिए एक समान कानून और एक समान उन्नति शिक्षा स्वास्थ्य और सेवा के अवसर योग्यता के अनुसार हों इसी नीति से राष्ट्र की समुचित उन्नति और विकास होगा। साम्प्रदायिक आधार पर सेवा (पुलिस-सेना आदि) में आरक्षण आत्मघाती एवं विघटनकारी होगा।

मुसलमान, मुसलमान को वोट देता है।

आधार हीन राजनीतिक नेता एवं उनके दल जातीयता एवं साम्प्रदायिकता को उभार कर अपने लिए मताधार बनाते हैं। यह प्रवृत्ति जितनी अधिक राष्ट्र विरोधी है उतनी ही अधिक विनाशकारी भी है। जिन नगरों में या क्षेत्रों में अल्प संख्यक समुदाय बहु संख्यक बन गाये दिन खुराफात करते रहते हैं, वहां

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सरकारी पक्ष हिन्दुओं के जान-माल की हानि का रोना कभी नहीं रोता, हां यदि किसी कारण साम्प्रदायिक उन्माद फैलाने वाला अल्पसंख्यक वर्ग हानि उठा जाता है तो ये वोट बटोरू राजनीतिक लोग अल्प संख्यकों के साथ जुल्म की कहानियों को बढ़ा चढ़ा कर वर्णन कर, न्यायिक जांच की मांग कर, कमीशन बैठाने के लिए सरकार पर दबाव डालने के लिए जी तोड़ कोशिश कर साम्प्रदायिकता का जहर घोलते रहते हैं। इनसे कोई यह नहीं पूछता कि साम्प्रदायिक संघर्ष मेरठ, अलीगढ़ और मुरादाबाद जैसे मुस्लिम बहुल नगरों और क्षेत्रों में ही क्यों होते। ग्रामीण क्षेत्र तो मुस्लिम बहुल हों या हिन्दू बहुल वहाँ कभी साम्प्रदायिक संघर्ष होते ही नहीं। कभी-कभी नगरों की आग से निकटवर्ती गांव भी इस आग में झुलसते सुने हैं, किन्तु अपवाद स्वरूप। हम चाहें जितनी तिकड़में लगायें वोट पाने के लिए, किन्तु अल्पसंख्यक समुदाय की मानसिकता बन चुकी है वह वहीं अपने मताधिकार का प्रयोग करता है जहां अपने सम्प्रदाय का हित साधन हो। उसके सामने आर्थिक दृष्टिकोण नहीं होता वह तो मुसलमान की जीत चाहता है चाहे वह किसी भी दल का प्रत्याशी क्यों न हो। राजनीतिक दल ही देश में चुनावों के समय जाति आधार पर और साम्प्रदायिक आधार पर प्रत्याशी चुनाव समीकरण बैठाते हैं। इसलिए क्षेत्र के योग्य, ईमानदार और सच्चे समाज सेवी पीछे रह जाते हैं और गुरुडम वाज आगे निकल जाते हैं। यही कारण है कि 'मुस्लिम महिला संरक्षण" विधेयक के पक्ष में सभी राजनीतिक पार्टियों के मुस्लिम-सांसदों ने मत दिया। केवल महिलाओं के सच्चे हितैषी एवं राष्ट्र भक्त राज्य मन्त्री श्री आरिफ मुहम्मद खान ने न केवल अपना विरोध प्रकट किया बल्कि अपने ही दल की इस घोर साम्प्रदायिकता तथा महिला विरोध से दुखी होकर अपना मन्त्री पद भी त्याग दिया। अन्त में उनके मुस्लिम महिला समर्थन के कारण उन्हें कांग्रेस पार्टी से ही निकाल दिया। मैं आरिफ साहब के इस त्याग को मुस्लिम, परित्यकता महिलाओं के होहित में नहीं मानता, अपितु इसे पूर्ण रूपेण राष्ट्र हित में मानता हूं। यदि सभी नागरिकों के लिए सभी सम्प्रदायों के लिए एक सा कानून हिन्दू

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रक्षा समिति मांगती है तो यह माँग केवल हिन्दुओं के लिए नहीं सभी जातियों तथा सम्प्रदायों के लिए है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि जब तक हम अल्प संख्यक बहुसंख्यक के रूप में विभाजित रहेंगे, जब तक हम केवल भारतीय नहीं बन जायेंगे तब तक राष्ट्र कल्याण सम्भव नहीं। विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों को साम्प्रदायिक रूप देना राष्ट्र विघटन की नींव रखना है। हम सभी भारतीय हैं। हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारे रीति रिवाज हमारा खान-पान भिन्न होते हुए भी हम एक हैं। हिन्दू रक्षा समिति की माँगे केवल हिन्दुओं के लिए नहीं, अपितु राष्ट्र रक्षा-हेतु हैं। हमें राजनीतिज्ञों की उखाड़-पछाड़ से राष्ट्र को बचाना है इसलिए इन माँगों के साथ "राष्ट्र भाषा का सर्वत्र प्रयोग," "अँग्रेजी भाषा वैकल्पिक विषय के रूप में रखने" आदि मांगों को इन माँगों के साथ जोड़ा जाय और हिन्दू रक्षा समिति का विस्तार कर इसे राष्ट्र रक्षा समिति नाम दे राष्ट्र कल्याण का सही लक्ष्य प्राप्त किया जाय।

(पृष्ठ १०९ का शेष)

केवल उच्चतम विचारों की अभिव्यक्ति की एवं उत्कृष्टतम साहित्य की भाषा है—बल्कि उसने भारत को एक सूत्र में बांध रखा है। रामायण-महाभारत हजारों वर्षों तक हर पीढ़ी के करोड़ों लोगों में रमी रहेगी, परन्तु उन्हीं के नेतृत्व में भारतीय शासन ने ऐसा कोई कार्य नहीं किया जिससे संस्कृत जीवित-जागृत बने। जिस भाषा को स्वयं पंडितजी इतनी सशक्त, सक्षम एवं समुन्नत अनुभव कर सारे देश को एकता के सूत्र में गूंथकर रख सकने वाली समझते, उसके समुत्थान-विस्तार के लिए स्वाधीन भारत ने कौन-सा उल्लेखनीय कार्य किया है? उसी भाषा में पंडितजी ने अपनी हृदय की भाषा में कहा था कि "कभी-कभी मैं सोचता हूं कि अगर हमारी जाति वेद, उपनिषद् और इन महाकाव्यों को भूल गई तो उसका क्या हल होगा? तब उसकी जड़े उखड़ जाएगी और इसकी बुनियादी विशेषताएं जाती रहेंगी, जिन्होंने उसे नाम प्रदान किया है। तब भारत, भारत नहीं रहेगा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(पृष्ठ ८० का शेष)

विदेशी शासन

संस्कृत के ह्रास का कारण विदेशी शासन ही रहा है। चाहे वह मुगल हो या अंग्रेज हो। संस्कृत भाषा में राजभाषा भी रही है, और जनभाषा भी। इसका प्रमाण संस्कृत भाषा की समृद्धता है। उसमें राजनीति और कूटनीतिक अभिव्यक्ति का जो सामर्थ्य है वह आज की विश्व की किसी परिमार्जित भाषा में नहीं आ पाया हैं। यही कारण है कि विश्व की विभिन्न संस्कृतियों का वह (संस्कृत) प्रेरणा स्रोत बनी हुई है। मध्य युग में संस्कृत का विशेष महत्व रहा है। वैसे, मुगलों की मुद्राओं पर भी वह अंकित होती रही है और उस काल तक शासकीय प्रतिष्ठा मे अग्र-स्थानीय रही है। यह परतंत्रता का अभिशाप ही है कि भारतीय भाषा के सिर पर विदेशी भाषा सवार हो गई है। स्वाधीन हो जाने पर भी हमारी मानसिक दासता छूटी नहीं है, हिन्दी के राजभाषा घोषित हो जाने पर भी अंग्रेजी का असर उसके भक्तों पर भूत की तरह सवार बना हुआ है।

ज्ञान जरूरी

स्वतन्त्र भारत में वास्तविक एकता की स्थापना करना है, भारतीय सँस्कृति में समाज को ढालना है, तो संस्कृत साहित्य से प्रत्येक भारतीय को सुपरिचित रखना परमावश्यक होगा। संस्कृत से अपरिचित को भारतीय कहलाने का अधिकार नहीं होना चाहिए। हमारा विश्वास है कि अनेक विषमताओं को विनष्ट करने को एकमात्र उपाय संस्कृत की संस्कृति से परिचित करवाने में ही निहित है। यदि भारत को साम्यवाद से सुरक्षित रखना है तो संस्कृत की सहायता ही बहुत महत्व की सिद्ध हो सकती है। विभिन्न विषमताओं में वही सामंजस्य स्थापित कर सकती है। संस्कृत में समदर्शिता का जो सिद्धान्त निहित है, वह किसी की साम्यवाद से अधिक महत्व रखता है।

अनिवार्य किया जाए

कुछ वर्षों पूर्व दिल्ली में भारतीय पुनर्जागरण समिति के तत्वावधान में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्वानों का सम्मेलन हुआ था। उसमें अध्यक्ष-पद से बोलते हुए तत्कालीन लोकसभा के अध्यक्ष श्री अनन्तशयनम् आयंगर ने कहा था कि शिक्षा में संस्कृत को अनिवार्य रूप से रखा जाए, तब प्रधानमंत्री नेहरू जी ने भी इसका समर्थन किया था। आज संस्कृत के अज्ञान के कारण शिक्षा का स्तर व्यापक रूप से घटता जा रहा है। डाक्टरेट के लिए जो संशोधन किया जाता है, वह हीन स्तर का ही नहीं, विनोद का विषय वन गया हैं। संशोधन प्रवृत्ति के लिए हर हालत में संस्कृत का अध्ययन परमावश्यक कर दिया जाना चाहिए। यदि शिक्षा में संस्कृत-अध्ययन आवश्यक कर दिया जाए तो अध्यापकों और छात्रों की अनेक समस्याएं सिमट जाएगी तथा उनके ज्ञान का क्षेत्र भी व्यापक एवं पूर्णत्व की ओर प्रगतिशील बन जाएगा। रूसी दूतावास के सांस्कृतिक विभाग की सदस्या श्रीमती गुसेवा ने भी कहा कि "सँस्कृत संसार की सर्वश्रेष्ठ भाषा हैं।" सुदूर जर्मनी मे चाहे सप्ताह में, रोज सँस्कृत में रेडियों प्रसारण किया जाने लगे, महत्व अनुभव करें, परन्तु हमारे नेताओं-शासकों की समझ में नहीं उतर पाता।

सम्पूर्णानन्द ने सत्य कहा था

जोधपुर विश्वविद्यालय में दीक्षान्त भाषण (१९६३) देने हुए राजस्थान के मनीषी राज्यपाल डा. सम्पूर्णानन्द ने सत्य ही कहा था कि—"भारतीय विद्वानों ने सैकड़ों वर्षों के विचार-विमर्श से छात्रों को अनभिज्ञ रखकर एवं पाश्चात्य विद्वानों के विचारों से अवगत करवाने का प्रयत्न किया जाना, शिक्षा-प्रणाली पर कुटिल आक्रमण तथा दास मनोवृत्ति का ही प्रमाण हैं। इसी प्रकार शोध-छात्रों के लिए संस्कृत की अनिवार्यता पर वल दिया था, जो सर्वथा उचित ही था। "भारत-आजकल" इस भाषणमाला में स्वयं स्व. प्रधानमंत्री नेहरूजी ने भी बहुत ही स्पष्ट कहा था कि--"शायद ही किसी अन्य भाषा ने किसी जाति के इतिहास निर्माण में इतना महत्वपूर्ण भाग लिया तो जितना कि संस्कृत भाषा ने लिया है। उन्होंने कहा था—"संस्कृत

(शेष पृष्ठ ११० पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिये

1.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	60 पैसे
2.	भारत के मुसलमानों का क्या करें?—वेदभिक्षु:	60 पैसे
3.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	60 पैसे
4.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	5 रु०
5.	हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	60 पैसे
6.	पोस्टर—दो प्रकार के	1.20 पैसे
7.	इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	60 पैसे
8.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	60 पैसे
9.	हिन्दू जागो—देश बचाओ !	60 पैसे
10.	इस्लाम—एक परिचय	60 पैसे
11.	Bible in the Balance	1 रु०
12.	A Challenge to the Christian Faith	30 पैसे
13.	पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु:	60 पैसे
14.	पादरियों को चुनौती	60 पैसे
15.	बाइबिल को चुनौती	60 पैसे
16.	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	60 पैसे
17.	...और पादरी भाग गया	60 पैसे
18.	Christianity Unmasked	1 रु०
19.	The Clarion Call	60 पैसे
20.	जनज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक	6 रु०
21.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	60 पैसे
22.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	60 पैसे
23.	तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे?	60 पैसे
24.	हिन्दू जागेगा : देश का संकट भागेगा	60 पैसे

1000 पुस्तकें मंगाने पर 50% और 500 पुस्तकें मंगाने पर 25% छूट।
आदेश के साथ संपूर्ण अथवा कम से कम एक चौथाई धन पेशगी भेजें :

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक पं० राकेशरानी द्वारा 'जनज्ञान' मुद्रणालय
दिल्ली-36 से मुद्रित एवं प्रकाशित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) P. O. मुखमेलपुर दिल्ली-३६	आषाढ़ संवत् २०४५ जून १९८८	Delhi Postal D-C-201 N. R. 10719/65

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	500 रु०
2.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं. विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	80 ,,
3.	वेद ज्योति	15 ,,
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)	30 ,,
5.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या)	20 ,,
6.	अथर्ववेद परिचय	6 ,,
7	संस्कार विधिः (सजिल्द)	20 ,,
8.	सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	30 ,,
9.	यज्ञ-मीमांसा (अग्निहोत्र दर्पण) (डा० रामनाथ वेदालंकार)	30 ,,
10.	सत्यार्थ-प्रकाश (10"×15") स्थूलाक्षर (सादे पेपर पर)	151 ,,
	,, ,, (आर्ट पेपर पर)	201 ,,
11.	ज्योति-स्तम्भ	10 ,,
12.	वैदिक सम्पत्ति	101 ,,
13.	योगासन	2 ,,
14.	योग और ब्रह्मचर्य	3 ,,
15.	Concept of God	3 ,,
16.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	25 ,,
17.	LIGHT OF TRUTH	50 ,,
18.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	6 ,,
19.	वैदिक गीता (गीता के श्लोकों का सरल हिन्दी भाष्य)	50 ,,
20.	संक्षिप्त महाभारत	50 ,,
21.	संक्षिप्त रामायण	10 ,,
22.	गायत्री मंत्र (चार्ट) हिन्दी व्याख्या सहित (दोनों ओर पत्ती लगा)	1.50 ,,

कम से कम दस प्रतियां मंगवायें। सूचीपत्र मुफ्त। आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

कार्यालय :

2286, आर्यसमाज रोड
करोलबाग, नई दिल्ली-110005

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर
महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
भलीपुर, दिल्ली-1100036

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi